30.00

मरयम

गिज़ा और सेहत

देखें बच्चे क्या कहते हैं

इमाम ज़ैनुलआबेदीन अ०

अक़्लमंद दीवाना

मेल-जोल का दीन

इमामे ज़माना अ० की मारेफ़त

ऐसा सोचा न था

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता

मिसाली घर की बेमिसाल बातें

हिजाब: समाज की अहम ज़रुरत

April 2011

अगर आपको 'मरयम' पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों, साथियों और दोस्तों के बीच फैलाने में हमारी मदद कीजिए!

SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA		
1 year	**12** issues	*320/-*
2 years	**24** issues	*600/-*
3 years	**36** issues	*850/-*

CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9956 62 0017, 9936 65 3509
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

بسم الله الرحمن الرحيم

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] :

तुम्हारी औलाद का तुम पर यह हक़ है कि तुम्हें इस बात का ध्यान रहे कि वह तुम से है। अच्छी हो या बुरी, इस भागती हुई दुनिया में तुम्हीं से मनसूब है। तुम इसके ज़िम्मेदार हो और तुम्हारी यह ज़िम्मेदारी है कि अदब, तहज़ीब और ख़ुदा की तरफ़ ले जाने वाले रास्ते को उसे बताओ और अपने लिए और ख़ुद अपनी औलाद के लिए ख़ुदा की इताअत में उसकी मदद करो।

अगर सही तरफ़ उसकी परवरिश पर ध्यान दोगे तो तुम्हें इसका सवाब मिलेगा और ऐसा नहीं करोगे तो इसका अज़ाब मिलेगा...

(तोहफुल उकूल/201)

Monthly Magazine

April
2011

मरयम

MARYAM

Chief Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Abid Raza Noashad
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

अख़लाक़	10
इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ)	7
ख़ुलूस व मोहब्बत का शाहकार	12
बच्चे क्या कहते हैं?	19
बेमिसाल बातें	5
बिहारी कबाब (डिश)	18
अक़्लमंद दीवाना	13
इन्फ़ाक़...ज़रा सोचिए तो!	15
अरब और जाहिलियत का ज़माना	27
कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता	21
ऐसा सोचा न था...	38
कामयाब ादी	30
ग़िज़ा और सेहत	36
इमामे ज़माना की मारेफ़त(अ)	34
मेल-जोल का दीन	40
हिजाब: समाज की अहम ज़रूरत	22
पड़ोसी	25
गुनाह करने से पहले सोच तो लो	26
हाजत रवाई	31
नन्हे नमाज़ी	32
दिल की सेहत के लिए दांत भी साफ़ रखें	42

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

हिस्ट्री गवाह है कि जब-जब किसी क़ौम पर जुल्म और अत्याचार अपनी आख़िरी हद को पहुँचा है तो उस क़ौम की ग़ैरत ने अंगड़ाई ली है और एक ऐसा मूवमेंट उभरा है जिसने बड़े-बड़े बादशाहों के तख़्तों को उल्ट कर रख दिया है। आज मुस्लिम मुल्कों की ग़ैरत भी जोश में आई है और मुसलमान एक बार फिर एक-एक करके हर मुल्क में अपना हक़ मांग रहे हैं। दूसरी तरफ़ अपने फ़ाएदों और इन मुल्कों की सोना उगलती ज़मीन की लालच लिए पश्चिमी मुल्क पब्लिक को आज़ादी दिलाने का नारा लगा कर बेगुनाह शहरियों और यहां तक कि बूढ़ों, औरतों और बच्चों को भी अपना निशाना बना रहे हैं। साथ ही मुसलमानों को शिया-सुन्नी में बांट कर नफ़रतों की आग को भी हवा दी जा रही है ताकि मुसलमान कभी एक न हो सकें क्योंकि हमेशा से दुश्मनों की एक ही साज़िश मुसलमानों के ख़िलाफ़ कामयाब होती आई है कि मज़हब और अक़ीदत की बुनियाद पर नफ़रतें फैलाकर मुसलमानों को तोड़ डाला जाए ताकि यह कभी एक होकर अपना हक़ न मांग सकें। इसकी जीती जागती मिसाल बहरेन है जहां एक मुल्क की शिया पब्लिक को कुचलने के लिए एक सुन्नी मुल्क की फ़ौज हमले कर रही है। दुनिया को शिया-सुन्नी का आईना दिखाकर कुछ ख़ुदग़रज़ मुल्कों और उनके हिमायतियों के इशारे पर मुसलमानों के हाथों मुसलमानों को मौत के घाट उतारा जा रहा है और दुनिया के मुसलमान ख़ामोश तमाशाई बने सब देख रहे हैं।

हम सब को यह यक़ीन रखना चाहिए कि इस्लाम न तो इख़्तेलाफ़ सिखाता है और न जुल्म को बर्दाश्त करना बल्कि इस्लाम तो इंसानियत का मज़हब है। जहां भी इंसानों का ख़ून बहता है वहां मज़लूमों का हिमायती बनकर खड़ा रहता है। इसलिए मुसलमानों का भी फ़र्ज़ है कि वह इंसानों और बेगुनाहों के ख़ून से खेली जाने वाली इस होली के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाएं और मज़लूम अवाम की हिमायत में अमन और शान्ती के साथ बिना किसी को तकलीफ़ पहुँचाए हुए अपनी आवाज़ दुनिया के कोने-कोने तक पहँचाएं।

हम ख़ुदा की बारगाह में अपनी तन्हाई, अपने दुश्मनों की ज़ियादती और रिर्सोसेज़ की कमी की शिकायत करते हैं और दुआ करते हैं कि वह उस आख़िरी इमाम को भेज दे जो मज़लूमों का मसीहा है और ज़मीन का इंसाफ़ से भरने वाला है...

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazar Abbas Rizvi printed at Imagine Grafix,
4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola,
Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9936653509
email: maryammonthly@gmail.com

मिसाली घर की बेमिसाल बातें

■ अहमद लुक़मान

घर की सजावट और ख़ुशबू का इस्तेमाल

ख़ुदावंदे आलम ख़ूबसूरती और सजावट को पसंद करता है और उन लोगों को पसंद नहीं करता है जो अपने बदन की बू से दूसरों को तकलीफ़ पहुंचाते हैं। इस्लाम की बुनियाद पाकीज़गी पर रखी गई है और जन्नत में सिर्फ़ वही लोग जा सकते हैं जो पाक व पाकीज़ा हों। क़ुरआनी आयात से यह बात साबित होती है कि इंसान ख़ूबसूरती और अच्छाई को पसंद करता है। रसूले ख़ुदा^स^ का फ़रमाते हैं, ''ख़ुदावंदे आलम इस बात को पसंद करता है जब एक मोमिन अपने दूसरे मोमिन भाई के पास आए तो ख़ुद को तैयार करे और आरास्ता होकर आए।''

इसी तरह हज़रत अली^अ^ फ़रमाते हैं, ''अपने मोमिन भाई के लिए ख़ुद को ज़ीनत दो और तैयारी करो।''

और जब बात घर की आती है तो यहां भी बन संवर के रहने और ख़ुशबू लगाने की ताकीद की जाती है।

रसूले ख़ुदा^स^ मर्दों से फ़रमाते हैं, ''अपने लिबास को पाकीज़ा रखो, अपने बालों को कटवाओ और कम करो, दांतों को साफ़ करो और बन संवर कर रहो क्योंकि बनी इस्राईल ने ऐसा नहीं किया था और उनकी औरतें ज़िना का शिकार हो गई थीं। ऐ मर्दों! तुम अपने नाख़ूनों को जड़ से काटा करो।''

आपने औरतों से फ़रमाया, ''अपने नाख़ूनों को कुछ बढ़ा कर रखो, इससे तुम्हारी ख़ूबसूरती बढ़ती है (लेकिन इसे सिर्फ़ शौहर पर ज़ाहिर होने दो)। अपने शौहर के लिए ख़ुश्बू लगाओ। अगर कोई औरत शौहर के अलावा किसी और मर्द के लिए ख़ुशबू इस्तेमाल करे तो उसमें कोई नमाज़ और कोई इबादत क़ुबूल नहीं होगी।''

जी हां साफ़ सुथरे रहना मियां-बीवी दोनों के लिए पाकदामनी की वजह है और दोनों किसी ग़ैर की तरफ़ नज़र उठाने से बचे रहते हैं और यूं दोनों गुनाहों से बच जाते हैं।

अईम्मा^अ^ भी अक्सर अपने बालों को ख़िज़ाब लगाया करते थे। एक बार एक सहाबी ने हैरत से पूछा, ''मेरी जान आप पर क़ुरबान! क्या आपने ख़िज़ाब लगाया है?''

फ़रमाया, ''हां! क्योंकि मर्द के बन संवर के रहने में औरत की पाकदामनी यक़ीनी है। औरत अपनी पाकदामनी खो सकती है जब उसका शौहर ख़ुद को आरास्ता और बना संवार कर न रखे। क्या तुम पसंद करते हो कि अपनी बीवी को इस गर्द आलूद हुलिए में देखो जैसा तुम्हारा है?''

सहाबी ने कहा, ''बिल्कुल नहीं!''

इमाम^अ^ ने कहा, ''सफ़ाई, पाकीज़गी और ख़ुशबू का इस्तेमाल नबियों के अख़्लाक़ का एक हिस्सा है।''

बीबी ज़ेहरा^अ^ इन तमाम चीज़ों की ख़ुसूसियत और उनकी अहमियत को जानती थीं। इसलिए आप हमेशा ख़ुशबू लगाती थीं। पानी में अपना चेहरा देख कर अपने बाल संवारतीं, चेहरे पर ध्यान देतीं और हमेशा खिलते हुए रंगों का लिबास इस्तेमाल करतीं, जैसे सफ़ेद या हरा रंग। आप^अ^ ख़ुदा की बारगाह में नमाज़ का फ़रीज़ा अंजाम देने के लिए इस तरह तैयारी करतीं जैसे किसी बहुत बड़े बादशाह के दरबार में हाज़िरी देनी हो। न सिर्फ़ ज़िंदगी के हंसते मुस्कुराते दिनों में बल्कि आख़िरी लम्हों में भी इसी तरह अमल फ़रमाया। आख़िरी वक़्त भी वुज़ू कर के असमा को आवाज़ दी और वही इत्र और वही लिबास मंगवाया जो नमाज़ के लिए ख़ास था।

सलमान फ़ारसी कहते हैं, ''एक रोज़ मैंने शहज़ादी फ़ातिमा^अ^ को देखा कि आप^अ^ ने एक सफ़ेद चादर ओढ़ रखी थी जिसमें बारह पेवंद लगे हुए थे। यह देखकर हैरत और अफ़सोस से रोने लगा। मैंने अर्ज़ की, ''रूम और ईरान के बादशाह की बेटियां तो सोने की कुर्सियों पर बैठें, रेशम और ज़रदोज़ के लिबास पहनें और शाहे दो जहां की बेटी पुरानी चादर में वह भी इतने पेवंद के साथ!!

जनाबे फ़ातिमा^अ^ ने फ़रमाया, ''ऐ सलमान! ख़ुदा ने क़यामत में हमारे लिए ख़ूबसूरत तरीन लिबास और सोने के तख़्त जमा कर रखे हैं।''

फ़िर आप^अ^ अपने बाबा के पास तशरीफ़ ले गईं और फ़रमाया, ''या रसूल अल्लाह^स^! सलमान को मेरी सादगी पर हैरत है। उस ख़ुदा की क़सम जिसने आप^स^ को रसूल बनाया, पांच साल से हमारे घर का फ़र्श भेड़ की खाल है। दिन के वक़्त हमारे ऊंट उस पर चारा खाते हैं और रात के वक़्त वह हमारा बिस्तर होता है। हमारा तकिया चमड़े का टुकड़ा है जिसमें ख़जूर के पेड़ की छालें भरी हुई हैं।''

साफ़ रहे कि रसूल^स^ की बेटी की पैरवी करने और उनके नक़्शे क़दम पर चलने का मतलब यह नहीं कि हम भी बारह पेवंद लगी चादर ओढ़ें और ऐसी खाल इस्तेमाल करें जो दिन में जानवरों के बर्तन और रात को हमारे बिस्तर का काम दे। बिल्कुल नहीं! बल्कि मक़सद यह है कि वक़्त और हालात को सामने रखते हुए सादगी से काम लिया जाए। कम से कम रिसोंसेस में बेहतर ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा सीखें।

जनाबे फ़ातिमा^अ^ दुनिया को बुरा नहीं बल्कि

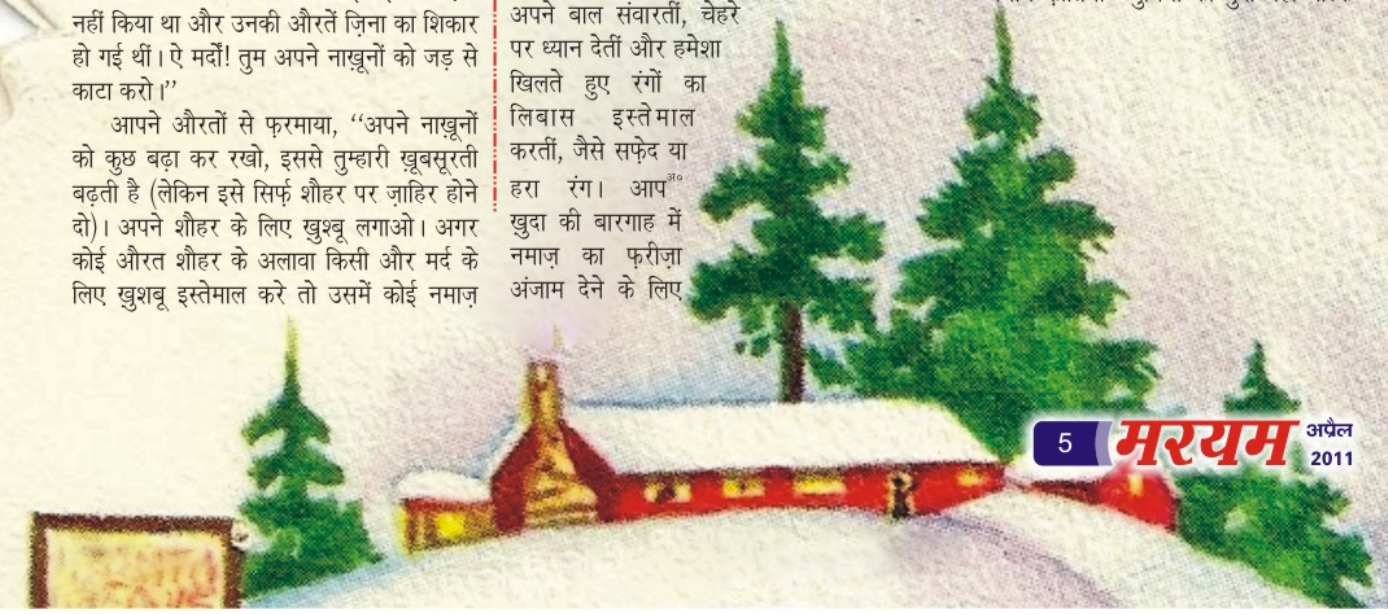

छोटा समझती थीं। यही वजह है कि यहां की तकलीफ़ें और ख़ुशियां आपके लिए ग़म या ग़ुरूर की वजह नहीं बनीं। आप दुनिया को मंज़िल के बजाए एक रास्ता समझती थीं और यूं अपनी सादा ज़िंदगी से आपको थकावट या उकताहट नहीं होती थी। आप फ़रमाती थीं, "मैं दुनिया परस्तों को पसंद नहीं करती।"

ज़िंदगी में ईसार व मुहब्बत

तारीख़ के पन्ने एक वाक़ेआ इस तरह से लिखते हैं कि लोग रसूले ख़ुदा[स०] के गिर्द जमा थे और आपके इल्म से फ़ायदा उठा रहे थे। ऐसे में एक बेहाल और भूखा प्यासा शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ और रसूले ख़ुदा[स०] से अपनी ग़ुरबत और भूख का शिकवा किया। आप[स०] ने उसे अपने घर की तरफ़ रवाना किया तो वहां से जवाब मिला कि घर में पानी के सिवा कुछ मौजूद नहीं है।

पैग़म्बर[स०] ने कहा, "उस भूखे और ग़रीब को आज रात कौन अपने घर में दावत देगा?"

हज़रत अली[अ०] ने कहा, "मैं, या रसूल अल्लाह!"

फिर आप[अ०] अपने घर में आए और जनाबे फ़ातिमा[अ०] से पूछा, "घर में खाने को कुछ है?"

बीबी ने जवाब दिया, "इस वक़्त घर में सिर्फ़ इतना खाना मौजूद है जिससे एक छोटी बच्ची का पेट भरा जा सके। लेकिन हम ईसार करेंगे और मेहमान को वही खाना खिला देंगे।"

दूसरी सुबह रसूले ख़ुदा[स०] पर आयत नाज़िल हुई, "...दूसरों को ख़ुद से आगे रखते हैं चाहे उन्हें कितनी ही ज़रूरत क्यों न हो।" (1)

कंजूसी, सख़ावत व ईसार ऐसी सिफ़तें हैं जो ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव में इंसान की हक़ीक़त को ज़ाहिर करती हैं।

कभी ज़रूरतमंद हाथ हमारी तरफ़ उठे हैं तो हम ने उनसे बेरुख़ी करके अपनी 'कंजूसी' का सुबूत देते हैं लेकिन कुछ लोग किसी की ज़रूरत को पूरा करके 'सख़ावत' का आईना बन जाते हैं और यूं ख़ुद भी ख़ुदा का शुक्र अदा करते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि एक चीज़ हमारे इस्तेमाल में है लेकिन दूसरे को हमसे ज़्यादा उसकी ज़रूरत होती है और हम वह चीज़ उसे देकर 'ईसार' का पैकर बन जाते हैं और यूं दुनिया दारी के क़ैदख़ाने से बाहर क़दम उठाते हैं।

आपकी अख़्लाक़ी फ़ज़ीलतों में ईसार के अलावा मुहब्बत व मेहरबानी भी बहुत ख़ास है।

जब आपकी मां हज़रत ख़दीज़ा[स०] को क़बीले कुरैश की औरतों ने अकेला छोड़ दिया तो आप मां के पेट में उनकी मोनिस व ग़मख़्वार थीं। पैदाईश के बाद हमेशा अपने बाबा की दिलजोई किया करतीं और मुश्किल वक़्तों में आपका साथ देतीं। जंग से वापसी पर आपके ज़ख़्मों को साफ़ करतीं और उनकी मरहम पट्टी किया करतीं। हमेशा आप[स०] के लिबास, आराम और खाने पीने का ख़्याल रखतीं।

शादी के बाद आप[अ०] इसी तरह मेहर व मुहब्बत का सुबूत देती रहीं। अली[अ०] को बेहतरीन शौहर समझती और कभी भी हज़रत अली[अ०] के कामों की मुख़ालिफ़त नहीं करतीं। यहां तक कि अपनी जान भी विलायते अली इब्ने अबी तालिब[अ०] पर क़ुरबान करने को तैयार थीं।

आप[अ०] की इन ही मुहब्बतों का फल है कि अली[अ०] फ़रमाते हैं, "ज़ेहरा[अ०] मेरी तसल्ली का बाइस है।" यही वजह है कि आप[अ०] अपनी हमसफ़र और शरीके हयात की शहादत की ख़बर सुनकर बेहोश हो गए।

जनाबे ज़ेहरा[अ०] हज़रत अली[अ०] से मुहब्बत को अपनी ख़ुशक़िस्मती समझती थीं। जब भी आप को अली[अ०] पर पड़ने वाली मुसीबतें याद आती थीं तो बहुत रोती थीं। जब अली[अ०] रोने की वजह पूछते तो फ़रमाती थीं, "या अली[अ०] मैं उन मुसीबतों को सोच कर रो रही हूं जो मेरे बाद आप पर पड़ेंगी।"

ज़िंदगी में ख़ुलूस व बेदारी

हुसैन बिन रूह जो हज़रत इमाम मेहदी[अ०] के नायबों में से हैं, ने हज़रत फ़ातिमा[अ०] की दो अहम ख़ुसूसियतों की तरफ़ इशारा किया है। एक रसूले ख़ुदा[स०] की जांनशीनी और दूसरे आपका ख़ुलूस।

फ़ातिमा[अ०] जो कुछ किसी से कहतीं, पहले ख़ुद उस पर अमल करतीं। आप[अ०] के सारे काम आपके बातिन को बयान करते थे। आप[अ०] अपने बारे में लोगों की तारीफ़ से बेज़ारी का इज़हार करती और दुनिया के ज़ाहिरी क़ैद से ख़ुद को दूर रखतीं।

जनाबे ज़हरा ख़ुलूस के बारे में फ़रमाती हैं, "जो कोई ख़ालिस इबादतें ख़ुदा की तरफ़ भेजेगा ख़ुदा भी बेहतरीन मसलेहत उसकी तरफ़ भेजेगा।"

एक रोज़ रसूल[स०] ने जनाब ज़ेहरा[अ०] से फ़रमाया, "बेटी! इस वक़्त जिब्रील मेरे पास मौजूद हैं। अगर कुछ चाहती हो तो बताओ।"

आप[अ०] ने जवाब दिया, "बाबा जान मेरी कोई ज़रूरत नहीं सिवाए इसके कि ख़ुदा अपने जमाल और अपने करम का नज़ारा करा दे।"

बीबी ज़ेहरा[अ०] की ज़िंदगी का यह तरीक़ा था कि हरगिज़ अपनी मुश्किलें और परेशानियां पड़ोसियों से बयान नहीं करती थीं। जनाब फ़ातिमा[अ०] सब्र व बरदाशत और बुर्दबारी का बेहतरीन नमूना थीं। अपनी अहम तरीन ज़रूरतों को नज़र अंदाज़ करके मोहताजों की ज़रूरतों को पूरा करतीं और अपनी उन अहम सिफ़तों की बदौलत आप[अ०] ने दीने इस्लाम की बुनियादों को और मज़बूत किया।

यह है जनाबे फ़ातिमा[अ०] की प्रेक्टिकल-लाइफ़ जिसने हमें सादगी, ईसार, मुहब्बत, ख़ुलूस और सब्र का सबक़ दिया है। देखना यह कि हम अपनी ज़िंदगी को कहां तक उनकी ज़िंदगी के मुताबिक़ ढाल सकते हैं और कितना इस आइडियल से फ़ायदा उठा कर अपनी ज़िंदगियों को बेहतर बनाते हुए आख़िरत की कामयाबियों व ख़ुशियों को हासिल कर सकते हैं?

1-सूरेए हश्र/9

الامام السجاد عليه السلام

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ०

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] 15 जमादिउस्सानी 38 हि० को जुमे के दिन पैदा हुए थे।

आपकी माँ का नाम शहर बानो था जो ईरान के बादशाह, नौशेरवां आदिल किसरा की बेटी थीं।

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] का नाम, अली और मशहूर लक़ब ज़ैनुल आबेदीन ,सैय्यदुस्साजेदीन, सज्जाद और आबिद हैं।

आप को ज़ैनुल आबेदीन आपकी बहुत ज़्यादा ईबादत की वजह से कहा जाता है। इसके अलावा इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, "इमाम ज़ैनुल आबेदीन [अ०] को 'सज्जाद' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह क़रीब-क़रीब हर अच्छे काम पर सजदा करते थे। यही वजह थी कि आप के जिस्म के सजदे वाले हिस्सों पर ऊंट के गट्टों की तरह गट्टे पढ़ जाते थे जिन्हें वक़्त-वक़्त पर कटवाना पढ़ता था।

बचपन का एक वाक़ेआ

एक दिन इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] अपने बचपन में बीमार हो गए। इमाम हुसैन[अ०] ने कहा, "बेटा! अब तुम्हारी तबियत कैसी है? अगर कोई चीज़ चाहिए तो बताओ।" आपने कहा, "बाबा! अब ख़ुदा के फ़ज़्ल से अच्छा हूँ। मेरी ख़्वाहिश सिर्फ़ यह है कि ख़ुदा मुझे उन लोगों में क़रार दे जो ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं चाहते।" यह सुन कर इमाम हुसैन[अ०] बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे, " बेटा! तुम ने बड़ा अच्छा जवाब दिया है। तुम्हारा जवाब बिल्कुल हज़रत इब्राहीम[अ०] के जवाब से मिलता जुलता है। हज़रत इब्राहीम को जब आग की तरफ़ फेंका गया था तो जिब्राईल[अ०] ने उनसे पूछा था कि कोई ज़रूरत या ख़्वाहिश तो नहीं है? उस वक़्त उन्होंने जवाब दिया था कि बेशक मुझे ज़रूरत तो है लेकिन तुम से नहीं, अपने

पालने वाले से है।"

हज

इब्राहीम बिन अदहम कहते हैं कि मैं एक बार हज के लिए जाता हुआ किसी काम से काफ़िले से पीछे रह गया था। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि मैं ने एक नौजवान लड़के को उस जंगल में देखा। उसे देख कर बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि वह पैदल चला जा रहा था और उस के साथ कोई सामान भी नहीं था और न उस का कोई साथी था। मैं हैरान हो गया। फ़ौरन उसके पास गया और कहा कि साहबज़ादे! यह लम्बा-चौड़ा जंगल और तुम बिलकुल अकेले! मामला क्या है? ज़रा मुझे भी तो बताओ। तुम्हारा सामान कहां है और तुम कहां जा रहे हो? उस नौजवान ने जवाब दिया कि मेरा सामान तक़्वा और परहेज़गारी है, मेरी सावारी मेरे दोनों पैर हैं, मेरी मंज़िल मेरा पालने वाला है और मैं हज के लिए जा रहा हूं। मैंने कहा कि तुम उम्र में बहुत कम हो। हज तो अभी तुम पर वाजिब भी नहीं हुआ है। उस नौजवान ने जवाब दिया कि बेशक आपका कहना सही है लेकिन ऐ शेख़! मैं देखा करता हूं कि मुझ से छोटे भी मर जाते हैं इसलिए मैं हज को ज़रूरी समझता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि अपने इस फ़र्ज़ को पूरा किए बिना ही मर जाउँ। फिर मैंने पूछा कि ऐ साहबज़ादे! तुम ने खाने का क्या इंतिज़ाम किया है? तुम्हारे साथ खाने का भी कोई इंतेज़ाम नहीं है। उस ने जवाब दिया कि क्या जब तुम किसी के यहां मेहमान जाते हो तो क्या खाना अपने साथ ले जाते हो? मैंने कहा कि नहीं। फिर उसने कहा कि सुनो! मैं तो ख़ुदा का महमान हो कर जा रहा हूँ। खाने का इंतेज़ाम उसी के ज़िम्मे है। इस पर मैंने कहा कि इतने लम्बे सफ़र को पैदल कैसे पूरा करोगे? उसने जवाब दिया कि मेरा काम कोशिश करना है और ख़ुदा का काम मंज़िल तक पहुंचाना है।

हम अभी बातचीत कर ही रहे थे कि अचानक एक ख़ूबसूरत जवान सफ़ेद कपड़े पहने हुए आ पहुंचा और उसने उस पहले वाले नौजवान को गले लगा लिया। थोड़ी देर के बाद मैंने अकेले में उस नए आने वाले नौजवान से पूछा कि यह कौन है? उसने कहा कि यह इमाम ज़ैनुल आबेदीन बिन हुसैन बिन अली इब्ने अबी तालिब[अ०] हैं। यह सुन कर मैं उस जवान के पास से इमाम के पास आया और मांफ़ी मांगने के बाद पूछा कि यह ख़ूबसूरत जवान जिसने आप को गले से लगाया था, कौन हैं? इमाम ने कहा कि यह हज़रत ख़िज़्र हैं। इसके बाद मैंने पूछा कि इतने लम्बे सफ़र को आप ख़ाली हाथ कैसे पूरा करेंगे? इमाम ने कहा कि रास्ते के लिए मेरे पास सब कुछ है और वह यह है:

1- दुनिया अपनी तमाम चीज़ों समेत ख़ुदा की मिलकियत है।

2- सारी मख़लूक़ अल्लाह की ग़ुलाम है।

3- ज़िंदगी की हर चीज़ और रोज़ी-रोटी ख़ुदा के हाथ मे है।

4- ख़ुदा की मर्ज़ी और उसकी इजाज़त हर ज़मीन पर लागू है।

यह सुन कर मैंने कहा कि ख़ुदा की क़सम! आप ही के सफ़र का सामान और सवारी सही मायने में मुक़द्दस हस्तियों का सफ़र है।

आपने अपनी सारी उम्र में 25 पैदल हज किए हैं जिनमें आपने सवारी पर जब भी सफ़र किया है अपने जानवर को एक कोड़ा भी नही मारा।

वुज़ू के वक़्त आपकी हालत

इमाम सज्जाद[अ०] जिस वक़्त वुज़ू किया करते थे तो आपके जिस्म में ख़ुदा के ख़ौफ़ से थरथराहट पैदा हो जाती थी और चहरे का रंग पीला पड़ जाया करता था। यह हालत बार-बार देखने के बाद घर वालों ने पूछा कि वुज़ू के वक़्त आप के चहरे का रंग पीला क्यों पड़ जाता है तो आपने कहा कि इस वक़्त मेरा पूरा ज़हन सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले और अपेन माबूद की तरफ़ होता है। इसलिए उस के डर से मेरा यह हाल हो जाया करता है।

नमाज़ में आपकी हालत

आपकी इबादतें सारी दुनिया में मशहूर थीं। रात भर जागने की वजह से आप का सारा बदन पीला रहता था और ख़ुदा के डर से रोते-रोते आप की आंखों पर वरम आ गया था, नमाज़ में खड़े-खड़े आप के पैर सूज जाया करते थे, पेशानी पर गट्टे पड़ गए थे और आप की नाक का सिरा ज़ख़्मी हो गया था।

जब आप नमाज़ के लिए मुसल्ले पर खड़े होते थे तो आपका सारा बदन कांपता था। लोगों ने बदन में कपकपी और जिस्म मे थरथरी की वजह पूछी तो कहा कि मैं इस वक़्त ख़ुदा की बारगाह मे होता हूं और उसकी बुज़ुर्गी मुझे बेहाल कर देती है जिसकी वजह से मेरी यह हालत हो जाती है।

एक बार आप के घर मे आग लग गई जबकि आप नमाज़ पढ़ रहे थे। महेल्ले वालों और घर वालों ने बहुत शोर मचाया और इमाम को पुकारा मगर आपने अपना सर सजदे से नहीं उठाया। आग बुझा दी गई। नमाज़ ख़त्म होने पर लोगों ने आप से पूछा कि आपके घर में आग लगी हुई थी, हम ने इतना शोर मचाया लेकिन आपने ज़रा सा भी ध्यान नहीं दिया! आपने कहा कि हाँ! मैं जहन्नम की आग के डर से नमाज़ को तोड़ कर इ स

आग की तरफ़ ध्यान नहीं दे सका।

इमाम अ० एक दिन नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० कुऐं में गिर गए। बच्चे के गहरे कुऐं मे गिरने से उन की मां बेचैन होकर बेतहाशा रोने लगीं और कुऐं के गिर्द चीख़-चीख़ कर चक्कर लगाने लगीं। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० ने बच्चे के कुऐं में गिरने की कोई परवा नहीं की और आराम से नमाज़ पूरी की। उसके बाद आप कूऐं के पास आए और पानी की तरफ़ देखा। फिर हाथ बढ़ाकर रस्सी के बिना ही गहरे कुऐं से बच्चे को निकाल लिया। बच्चा हंसता हुआ बाहर निकल आया। ख़ुदा की क़ुदरत देखिए कि न बच्चे के कपड़े भीगे थे और न ही बदन गीला था।

मदीने के ग़रीबों की मदद

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० ने मदीने के फ़क़ीरों के सौ घरों को पालने की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ले रखी थी और उनकी ज़रूरतों का सारा सामान ख़ुद अपने हाथों से उन के घर पहुंचाते थे और उन लोगों को पता भी नहीं लगने देते थे कि यह सामान कौन दे जाता है। आपका उसूल यह था कि सामान की बोरियां पीठ पर लाद कर घरों में रोटी और आटा वग़ैरा पहुंचाते थे और यह सिलसिला आपके आख़िरी वक़्त चलता रहा।

इमाम का अख़लाक़

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० क्योंकि रसूले इस्लाम स० के बेटे थे इसलिए आप में रसूल की सीरत और अख़लाक़ का होना ज़रूरी था। एक बार एक शख़्स ने आप को बहुत बुरा-भला कहा। आपने कहा कि भाई! मैंने तो तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा है, अगर कोई ज़रूरत हो तो बता दो ताकि मै पूरी कर दूँ। वह शर्मिंदा हो कर आपके अख़लाक़ का क़ायल हो गया।

एक शख़्स ने आप की बुराई आपके मुहं पर की। आपने कोई ध्यान नहीं दिया। उसने कहा कि मैं आपको ही बुरा कह रहा हूं। आपने कहा कि मैं ख़ुदा के हुक्म "जाहिलों की बात की परवा मत करो" पर अमल कर रहा हूं।

एक आदमी ने आपसे आकर कहा कि फ़ुलाँ आदमी आपकी बुराई कर रहा था। आपने कहा कि मुझे उसके पास ले चलो। जब वहां पहुंचे तो उससे कहा कि भाई! जो बातें तुमने मेरे बारे में कही हैं अगर सही हैं तो ख़ुदा मुझे बख़्श दे और अगर ऐसा नहीं है तो ख़ुदा तुम्हें बख़्श दे क्योंकि तुमने मेरे ऊपर इल्ज़ाम लगाया है!

एक रिवायत है कि आप एक बार मस्जिद से निकल कर चले तो एक आदमी ने आपको गालियां देना शुरू कर दीं। आपने कहा कि अगर तुम्हें कोई ज़रूरत हो तो बताओ, पूरी कर दूं। अच्छा लो! यह पांच हज़ार दिरहम रख लो। वह शर्मिंदा और लाजवाब हो गया।

एक शामी हज़रत अली अ० को गालियां दे रहा था। इमाम सज्जाद ने कहा कि भाई! तुम मुसाफ़िर लगते हो। अच्छा मेरे साथ चलो, मेरे घर पर रहो और जो ज़रूरत हो मुझे बताओ ताकि मैं पूरी कर दूं लेकिन वह शर्मिंदा होकर चला गया।

एक आदमी ने आपसे कहा कि फ़ुलां आदमी आपको गुमराह कह रहा था। आपने कहा कि अफ़सोस! तुमने उससे अपनी दोस्ती का भी ध्यान नहीं रखा और उसकी बुराई मुझसे कर दी। देखो! यह ग़ीबत है। ऐसा कभी न करना!

जब कोई सवाल करने वाला आपके पास आता था तो आप ख़ुश हो जाता थे और कहते थे कि ख़ुदा तुम्हारा भला करे! तुम मेरे आख़िरत का सामान उठाने के लिए आ गए हो।

सहीफ़ए कामिला

किताब 'सहीफ़ए कामिला' आपकी दुआओं की किताब है जो हक़ीक़त में इल्म का एक ख़ज़ाना है। यह किताब इतनी अफ़ज़ल है कि इसे उलमा ने आसमानी किताब का दर्जा दिया है।

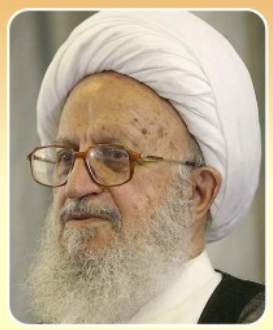

आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

अख़्लाक़

क्या अख़लाक़ और परवरिश के ज़रिए कैरेक्टर और पर्सनॉलिटी को अच्छा बनाया जा सकता है?

यह वह सवाल है जिस पर मॉरल साइंस की बुनियाद टिकी हुई है क्योंकि अगर यह मान लिया जाए कि इंडिवीजुअल कुआलिटीज़ व सिफ़ात रूह व जिस्म को फॉलो करते हैं तो इस सूरत में मॉरल साइंस बेकार और बेमायने हो कर रह जाएगी लेकिन अगर यह मान लिया जाए कि बदलाव के चांसेज़ है तो फिर इन टीचिंग्स की अहमियत ख़ुद बख़ुद साफ़ हो जाएगी।

कुछ स्कॉलर्स पहली वाली बात को सही मानते है। इसलिए उनका नज़रिया यह है कि जिस तरह कुछ पेड़ों के फलों का ज़ायक़ा कड़वा होता है और माली की लाख परेशानियों और कोशिशों के बावजूद यह फल अपना ज़ायक़ा नहीं बदलते, इसी तरह ख़राब कैरेक्टर और बुरी सिफ़ात वाले लोग भी परवरिश के ज़रिए अपनी आदतों और कैरेक्टर में कोई सुधार नहीं ला सकते और अगर सुधार हो भी गया तो बहुत ही मामूली सा होगा। साथ ही बहुत जल्दी अपनी पिछली हालत पर वापस लौट जाएगा।

इन लोगों के मुताबिक़ रूह व जिस्म का अख़लाक़ से बहुत क़रीबी रिश्ता होता है। सच्चाई यह है कि हर शख़्स अख़्लाक़ी क्वालिटीज़ में अपनी रूह व जिस्म को फॉलो करता है। यही वजह है कि मॉरल क्वालिटीज़ में किसी बदलाव के चांसेज़ नहीं पाए जाते और इस सिलसिले में कुछ हदीसें भी पेश कर देते हैं जैसेः-

''लोग सोने और चांदी की कानों की तरह होते हैं।''

ऊपर बयान किए गए नज़रिए के अगेंस्ट अक्सर स्कॉलर्स इस बात का दावा करते हैं कि परवरिश के ज़रिए किसी का भी कैरेक्टर, आदतें और तौर-तरीक़े पूरी तरह बदले जा सकते हैं।

बुरे अख़्लाक़ व बुरे कैरेक्टर पर की गईं कई रिसर्चस भी इस सच्चाई को साबित करती हैं कि एक अच्छी सोसाइटी और अच्छी परवरिश के ज़रिए न जाने कितने बुरे कैरेक्टर वाले लोग पूरी तरह अच्छे कैरेक्टर वाले हो जाते हैं। इसके अलावा अगर ऐसा न होता तो सारे नबी और दीनी रहनुमाओं की सारी मेहनतें बेकार होकर रह गई होतीं क्योंकि ख़ुदा ने यह सारा इंतेज़ाम अपने बंदों के सुधार ही के लिए किया था और सारी दुनिया में दी जाने वाली वह सज़ाएं भी बेकार हो जातीं जो सुधार के लिए दी जाती हैं।

रोज़ाना की ज़िंदगी में आम तौर पर देखा जा सकता है कि जंगली जानवरों तक को बक़ाएदा ट्रेनिंग के ज़रिए पालतू बना लिया जाता है और उनसे वह-वह काम करवा लिए जाते हैं जो उनके नेचर के बिल्कुल अगेंस्ट होते हैं। इस हालत में आख़िर किस तरह सोचा जा सकता है कि बुरी क्वॉलिटीज़ और आदतें इंसानों में जंगली जानवरों से भी ज़्यादा गहरी होती हैं।

इस सिलसिले में इससे अच्छा कोई तरीक़ा नहीं हो सकता कि 'मॉरल क्वॉलिटीज़' के वुजूद में आने के तरीक़े पर रिसर्च की जाए ताकि जिस रास्ते से यह क्वालिटीज़ पैदा होती हैं उसी रास्ते से उसके ख़त्म होने के तरीक़े को समझा जा सके। यह तो साफ़ है कि कोई भी अच्छा या बुरा काम इंसान की रूह पर अपना असर छोड़ता है और रूह को अपनी तरफ़ खींचता है। किसी अमल के बार-बार दोहराने से यह असर और गहरा हो जाता है। यहां तक कि इंसान को इस काम की आदत पड़ जाती है और अगर यही काम बार-बार किया जाता रहे तो बुरी आदतें और तौर-तरीक़े बदले जा सकते हैं। इस तरह इंसान हमेशा यही चाहता है कि इस काम को बार-बार दोहराता रहे। यह एक ऐसी सच्चाई है कि जो रिसर्च के ज़रिए साबित हो चुकी है।

इसलिए जिस तरह अख़लाक़ी आदतें और क्वॉलिटीज़ किसी काम के बार-बार दोहराने से हासिल होती हैं उसी तरह दूर भी हो जाती हैं यानी पहले 'अमल' और उसके बाद 'बार-बार दोहराना'। उसके बाद नम्बर आता है 'मॉरल क्वालिटीज़' को अपने अंदर पैदा करने का लेकिन इस बारे में शौक़ दिलाना, ग़ौर व फ़िक्र और अच्छा समाज रूह को मॉरल क्वालिटीज़ को अपनाने में बहुत ख़ास रोल अदा करते हैं।

बुरा अख़लाक़ एक तरह की बीमारी है

यह बात सभी जानते हैं कि सारे जानदारों में इंसान एक ख़ास मुक़ाम का मालिक है क्योंकि उसके अंदर अलग-अलग ताक़तें और सलाहियतें

होती है। जहां एक तरफ़ बुरी क्वॉलिटीज़ उसको जुल्म, नाइंसाफ़ी, ख़यानत, झूठ और हवस पर उभारती हैं वहीं दूसरी तरफ़ अक़्ल और अच्छी क्वॉलिटीज़ उसको इंसाफ़, पाकीज़गी, इंसानियत और अच्छाईयों की तरफ़ खींचती हैं।

अलग-अलग ताक़तों की कशमकश हर इंसान में पाई जाती है। अच्छाईयों और बुराईयों में से किसी एक का दूसरे पर भारी पड़ जाना इंसानी वैल्यूज़ के हिसाब से इंसानों को पूरी तरह से एक दूसरे से अलग कर देता है। एक इंसान अपनी क्वॉलिटीज़ के ज़रिए फ़रिश्तों के मुक़ाम तक पहुंच जाता है और दूसरा खुद अपने ही मुक़ाम से गिरकर जानवरों में शामिल हो जाता है।

इस सच्चाई की तरफ़ अलग-अलग हदीसें भी इशारा करती हैं। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''खुदा ने फ़रिश्तों को शहवत व ग़ज़ब के बजाए सिर्फ़ अक़्ल दी और जानवरों को अक़्ल के बजाए सिर्फ़ शहवत व ग़ज़ब दिया लेकिन इंसान को यह सारी चीज़ें देकर अफ़ज़ल बना दिया। इसलिए अगर उसकी अक़्ल शहवत व ग़ज़ब पर भारी पड़ जाए तो वह फ़रिश्तों से भी आगे बढ़ जाएगा...।''

यहां सोचने की बात यह है कि इंसान की नेचरल ख़्वाहिशें न सिर्फ़ यह कि नुक़सानदेह नहीं हैं बल्कि इंसानी ज़िंदगी के लिए ज़रूरी और उसका हिस्सा हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में जिस तरह इंसानी जिस्म का कोई हिस्सा बेकार पैदा नहीं किया गया है उसी तरह उसकी रूह में भी हर ख़्वाहिश की एक ख़ास जगह है। मसला सिर्फ़ वहां खड़ा होता है जहां यह नफ़सानी ख़्वाहिशें अपनी हदों से बाहर हो जाती हैं।

आख़िर ऐसा कौन सा शख़्स है जो इंसानी ज़िंदगी में 'गुस्से' के रोल का इंकार कर देगा? अगर किसी का कोई हक़ छीन लिया जाए और उसको किसी तरह गुस्सा भी न आए तो क्या वह अपना हक़ वापस ले सकता है ? बिल्कुल नहीं! गुस्से और नागवारी के बग़ैर वह अपना हक़ वापस ले ही नहीं सकता। लेकिन अगर यही गुस्सा अपनी असली हालत और कंट्रोल से बाहर हो जाए और अक़्ल पर छा जाए तो इंसान को एक जंगली जानवर में बदल देता है।

जिस तरह इज़्ज़त, शोहरत और दौलत में इंसान की नेचरल दिलचस्पी उसकी तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है उसी तरह दौलत मंदी और जाह तलबी यानी उन इंसानी ख़्वाहिशों के हद से गुज़र जाने की बिना पर होने वाला नुक़सान भी सब पर बल्कुल सामने की चीज़ है। जिस तरह इंसान का बदन अगर अपनी डगर से हट जाता है तो अपने साथ एक 'बीमारी' लेकर आता है उसी तरह रूही ताक़त और ख़्वाहिश को अपनी हद से बाहर निकल जाना भी एक तरह की रूहानी बीमारी की शुरूआत है जिसको उलमा 'दिल की बीमारी' का नाम देते हैं। हक़ीक़त में यह लफ़्ज़ क़ुरआन से लिया गया है क्योंकि क़ुरआन ने मुनाफ़िक़ के निफ़ाक़ को 'मर्ज़' कहा है, ''उनके दिलों में बीमारी है और खुदा ने उसको और भी बढ़ा दिया है।''

तज़किया-ए-नफ़्स या जिहादे अकबर

अख़लाकी बुराईयों के बारे में नफ़्स को पाक करने की अहमियत के लिए इतना ही काफ़ी है कि उसको 'जिहादे अकबर' यानी बड़ा जिहाद कहा गया है। यह लफ़्ज़ उस मशहूर हदीस से लिया गया है जिसमें रसूले इस्लाम[स०] किसी जंग से वापस आने पर अपने मुजाहिद असहाब से फ़रमाते हैं, ''मरहबा उन लोगों पर जो जिहादे असग़र यानी छोटा जिहाद करके आए हैं और जिहादे अकबर यानी बड़ा जिहाद उन पर बाक़ी है। सवाल किया गया, या रसूल अल्लाह[स०]! जिहादे अकबर क्या है? आपने फ़रमाया, तज़किए नफ़्स यानी अपने नफ़्स और खुद को पाक करना।''

यही वजह है कि कुछ बुर्ज़ुग उलमा ने अपनी किताबों में तज़किए नफ़्स और अख़्लाक़ के बारे में बहस को किताबे जिहाद का नाम दिया है और उसको जिहाद का ही एक हिस्सा माना है। कुछ हदीसों में रसूले इस्लाम[स०] का यह नीचे वाले जुमला भी नक़्ल हुआ है, ''सबसे अफ़ज़ल जिहाद वह है जिसमें इंसान अपने नफ़्स से जिहाद करे वह नफ़्स जो उसके सीने में है।''

ऊपर की बातों की रौशनी में इस अहम मसले के बारे में इस्लाम का नज़रिया अच्छी तरह साफ़ हो जाता है कि अगर ग़ौर किया जाए तो नीचे वाला रिज़ल्ट सामने आता है :-

इंसान के अंदर हमेशा ऐसी कई ताक़तें होती हैं जिनकी वजह से उसके दिमाग़ में हमेशा एक कशमकश सी पाई जाती है और उसकी कामयाबी और नाकामी इन दोनों तरह की ताक़तों में से किसी एक के दूसरे पर छा जाने पर डिपेंड होती है।

HK

KAZIM

Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road
Lucknow

Contact No.
0522-2264357
9839126005

ख़ुलूस व मुहब्बत का शाहकार

औरत मां भी है, बीवी भी, बहन और बेटी भी है। अपने हर रोल में उसके जज़बात व एहसासात के ऐसे-ऐसे अनोखे रंग दिखते हैं कि देखने वाले हैरान रह जाएं।

कहते हैं औरत जफा करने वाली और लूटने वाली होती है। जबकि औरत वफ़ा और मुहब्बत का शाहकार है। मां, बीवी, बहन, बेटी चाहे वह उनमें से किसी भी रूप में हो उसके हर रिश्ते में पाकीज़गी दिखाई देती है। वह वफ़ा की सच्ची और कैरेक्टर की बेदाग़ होती है लेकिन क्या आज समाज में उसको वह मक़ाम हासिल है जिसकी वह हक़दार है।

मर्द औरत को कमज़ोर समझता है और फिर हर ज़माने में नापाक ख़्वाहिश रखने वाले लोग औरत के साथ ज़्यादती भी करते आए हैं लेकिन इस्लाम एक ऐसा एकेला मज़हब है जिसने औरत को उसका सही मक़ाम दिया है, उसे इज़्ज़त अता की है। इस्लाम ने औरत को जुल्म की काल कोठरी से निकाल कर उस मक़ाम पर बिठा दिया है जिसकी वह हक़दार थी। इस्लाम ने औरत को जो ख़ास रोल दिया था मुसलमानों ने उसे भुला दिया, कहीं तो उन्होंने औरत को घर की चार दीवारी में क़ैद कर दिया और पर्दे को इतना सख़्त कर दिया कि उसके लिए सांस तक लेना मुश्किल हो गया और कहीं इतनी छूट दे दी कि उसने चादर और चार दीवारी को लात मार दी और घर की चार दीवारी फलांग़ कर शराफ़त व इज़्ज़त की सारी हदें पार कर गई।

इस्लाम ने औरत को जो रुतबा दिया दूसरी क़ौमें उससे असर लेकर उसकी तक़लीद में औरतों की आज़ादी के नाम पर इतना आगे बढ़ीं कि औरत हर मैदान में मर्द के बराबर आ गई। दूसरी तरफ पश्चिमी समाज के रंग-ढंग को अक्सर मुसलमानों ने तरक़्क़ी समझ लिया, जिससे मुस्लिम समाज दो हिस्सों में बट गया, एक वह जिसमें औरत मजबूर और बेबस है और दूसरा हिस्सा वह जिसमें औरत पूरी तरह आज़ाद है। यूं इस्लाम की हक़ीक़ी थ्योरी नज़रों से ओझल हो गई जो बैलेंस्ड और प्रक्टिकल है।

कभी हमने सोचा कि हमारे समाज की औरत इतनी मजबूर और बेबस क्यों है? कभी हम ने ग़ौर किया कि आज औरत की इज़्ज़त क्यों महफ़ूज़ नही रह गई है? इलाज के नाम पर मसीहा, इंसाफ़ के नाम पर क़ानून के मुहाफ़िज़, तावीज़ और टोने-टोटके के नाम पर आमिल और पीर, इल्म की ख़्वाहिश पर टीचर्स औरत को बेआबरू कर देते हैं। आज बाज़ार से लेकर अस्पताल तक और कालेज से लेकर घर की चार दीवारी तक औरत की इज़्ज़त कहीं भी महफ़ूज़ नही रही है। ख़ुदा जाने मर्द की ग़ैरत सो गई है या समाज की ग़ैरत मौत के घाट उतर गई है।

आख़िर इस समाज के मर्द का ज़ेहन छोटा क्यों है कि वह औरत को इतना छोटा समझता है। हमारे समाज में बहुत से एजुकेटेड लोग भी बेटों को बेटियों के मुक़ाबले में ज़्यादा अहमियत देते हैं। निचले तबक़े का औरत से रवैय्या देखकर तो शर्म से निगाहें झुक जाती हैं। हमारे समाज में आज भी बहुत से खानदान बेटियों को एजुकेशन नही दिलवाते कि उसे पढ़-लिख कर क्या करना है? सीना-पिरोना, खाना-पकाना और झाड़ू देना सीख जाए ताकि दूसरे घर में जाकर कुछ फ़ायदा हो। इन लोगों की समझ में यह बात नही आती कि सीना-पिरोना और खाना-पकाना ज़िंदगी के लिए ज़रूरी सही मगर ज़िंदगी को बनाती संवारती तो एजुकेशन है। एजुकेशन ही इंसान को इंसान का असली मक़ाम दिलाती है। तालीम ही इंसान को अच्छे-बुरे की तमीज़ सिखाती है। बेटियां इसलिए भी मां-बाप को बोझ लगती हैं कि उनको कुछ देना पड़ता है, यह मां-बाप का सहारा नहीं बन सकती, इसी खुशफ़हमी में पैरेंट्स बेटों को सर चढ़ा लेते हैं कि यह उनके बुढ़ापे का सहारा बनेंगे लेकिन अकसर लड़के बाद में पैरेंट्स को बोझ समझते हैं।

हमारे समाज में यह समझा जाता है कि हमने औरत को उसका सही मुक़ाम दे दिया है लेकिन यह हम सब की बहुत बड़ी भूल है। औरत बाप के घर में हो तो शादी तक पाबंदियों में घिरी रहती है और शादी के बाद उसे ससुराल वालों की पाबंदियां झेलनी पड़ती हैं, जहेज़ कम मिलने या न मिलने पर उनकी जली-कटी बातों पर सारी ज़िंदगी गुज़ार देती है और कभी ससुराल वालों के मिज़ाज के खिलाफ़ कोई बात हो जाए तो उसका शौहर ताक़त इस्तेमाल करके उसे मार-पीट सकता है और तलाक़ जैसा घिनौना लफ़्ज़ सुना कर उसे ज़लील कर सकता है। औरत क्या-क्या बातें और कौन-कौन से जुल्म बर्दाश्त नही करती, उसके बावजूद वह सारा दिन कोल्हू के बैल की तरह काम करती है, घर को बनाती-संवारती है, बच्चों की परवरिश करती है लेकिन बदले में उसे क्या मिलता है, ज़िल्लत और रुसवाई का तमग़ा।

औरत के चार रोल हैं मां, बीवी, बहन और बेटी। इन चारों रिश्तों में वह प्यार व मुहब्बत की सच्ची तस्वीर है। औरत मुहब्बत की देवी है क्योंकि उसका ज़मीर मुहब्बत से कूट-कूट कर भरा है और उसी से उठा है। वह जब मुहब्बत करती है तो टूट कर करती है और उसमें किसी को ज़रा सा भी पार्टनर नही बना सकती। अगर किसी के सामने तन जाए तो टूट सकती है झुक नही सकती। औरत ज़मीन पर रेंगने वाला कीड़ा नही, औरत बिना एहसासात वाली मशीन नही है बल्कि एक जीती जागती इंसान है...।

अक़्लमंद दीवाना

■ सै. आबेदा नरजिस

शहरों के शहर बग़दाद की सड़कों पर हमेशा की तरह गहमागहमी थी। लोग अपने रोज़मर्रा के कामों में मसरूफ़ थे। बाज़ारों में सामान बेचा और ख़रीदा जा रहा था और गली कूचों में बच्चे खेल-कूद में मगन थे। अचानक! एक शोर उठा, चारों तरफ़ एक हलचल सी मच गयी। लोगों ने वहब को देखकर उंगलियाँ दातों में दाब लीं और हैरत से ज़माने का करिश्मा देखने लगे।

बग़दाद का मशहूर दौलतमंद वहब बिन अम्र जो अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद के क़रीबी रिश्तेदारों में से था, अपने घर से इस हाल में निकला था कि उसके बाल बिखरे हुए थे। दाढ़ी बेतरतीब थी और कपड़े मैले-कुचेले थे। हाथ में पकड़ी हुई छड़ी को उसने घोड़ा बना रखा था, जिसे बच्चों की तरह खटखटाता, बेमायने अलफ़ाज़ कहता, यूँही इधर-उधर टहल रहा था।

जिसने भी आगे बढ़कर उसे रोकना चाहा, वहब ने उसे धुतकार दिया, ''दूर हो जाओ! हटो! मुझे रास्ता दो! नहीं तो मेरा घोड़ा लात मार देगा''।

लोग उसकी ये हालत देखकर भौंचक्के रह गये। बच्चों के हाथ एक तमाशा आ गया। वह पहले तो दूर-दूर से उसकी तरफ़ देखते रहे। फिर आहिस्ता-आहिस्ता पास आए। किसी ने उसकी अबा खींची, किसी ने उसकी रिदा घसीट ली। कोई उसके साथ-साथ दौड़ने लगा और कोई उसकी छड़ी पर सवार होने की ज़िद करने लगा, जिसे वह घोड़े की तरह चला रहा था।

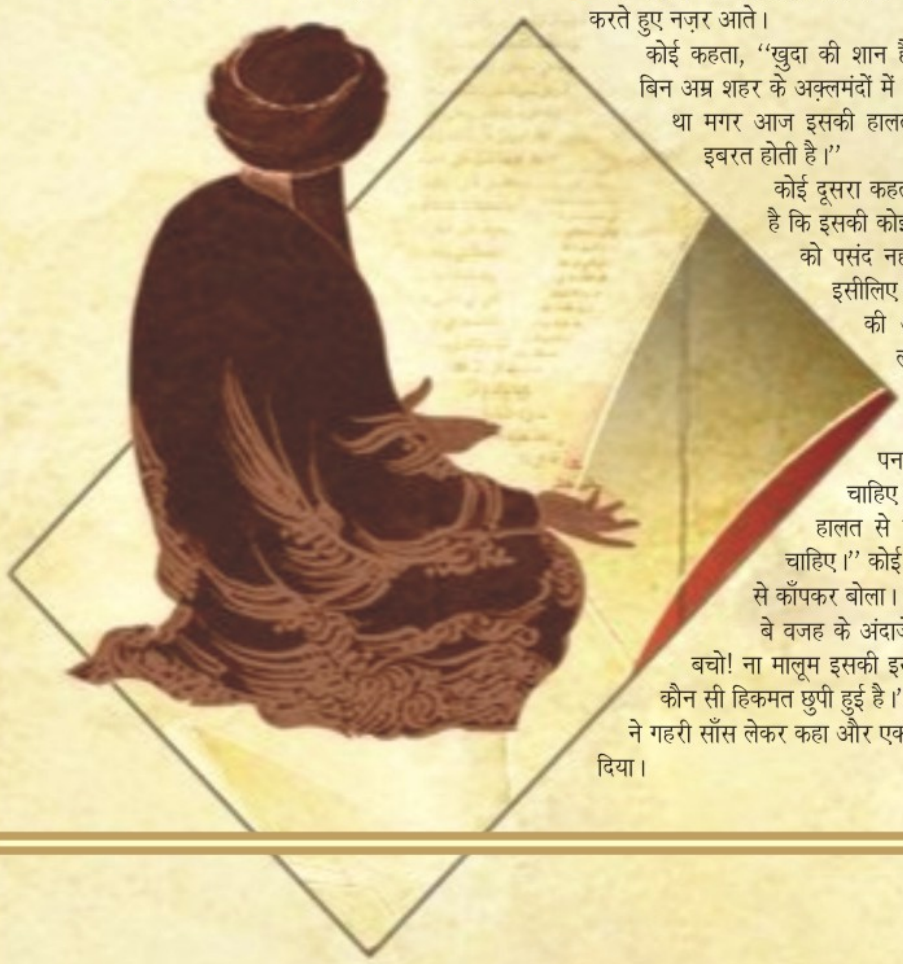

लेकिन वहब ने बच्चों को न डांटा, न डराया, न धमकाया बल्कि वह ख़ुद भी उनमें से एक बन गया और बच्चों के साथ बचकाना हरकतें करता, आबादियों से दूर वीराने की तरफ़ भाग गया।

सारे शहर में जैसे सन्नाटा छा गया। हैरत और इबरत ने लोगों को भौंचक्का कर दिया था। कुछ देर गुज़री और उन्हें होश आया। जब उन्हें होश आया तो हर तरफ़ इसी के चर्चे होने लगे। जहाँ कुछ लोग इकट्ठे होते, वहब बिन अम्र की ज़हनी हालत ही पर बातें होने लगतीं। लोग ग़लियों और चौराहों पर खड़े इसी वाक़िए के बारे में बात करते हुए नज़र आते।

कोई कहता, ''ख़ुदा की शान है। ये वहब बिन अम्र शहर के अक़्लमंदों में शुमार होता था मगर आज इसकी हालत देख कर इबरत होती है।''

कोई दूसरा कहता, ''लगता है कि इसकी कोई बात ख़ुदा को पसंद नहीं आई है। इसीलिए उसने वहब की अक़्ल छीन ली है।''

''बुरे वक़्त से पनाह माँगनी चाहिए। ऐसों की हालत से सबक़ लेना चाहिए।'' कोई ख़ौफ़े ख़ुदा से काँपकर बोला।

बे वजह के अंदाज़े लगाने से बचो! ना मालूम इसकी इस हालत में कौन सी हिकमत छुपी हुई है।'' एक बुज़ुर्ग ने गहरी साँस लेकर कहा और एक तरफ़ चल दिया।

उसके बराबर खड़ा हुआ एक आदमी भीड़ से अलग हुआ और उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। कुछ दूर तक दोनों इसी तरह चलते रहे। फिर पहले आदमी ने अपने पीछे क़दमों की आवाज़ से किसी और की मौजूदगी का अंदाज़ा लगाया तो पीछे मुड़कर देखा। दूसरे शख़्स ने अपने क़दमों को तेज़ किया और उसके बराबर आ गया।

उसने खंकार कर गला साफ़ किया और कहा, ''ऐ बुज़ुर्ग! मैंने आप की बातों से अन्दाज़ा लगाया है कि आपने जो कुछ कहा उसके पीछे कोई राज़ है। ऐसा लगता है जैसे वहब की दीवानगी में जो हिकमत पोशीदा है आप उसको जानते हैं। आप मुझे ख़ुदा वाले मालूम होते हैं। मैं आप जैसे लोगों की बातचीत में अपने लिए हिदायत और रहनुमाई तलाश करता हूँ। क्या आप मुझे वहब की हालत के बारे में कुछ बता सकते हैं?''

उस बुज़ुर्ग ने एक तेज़ निगाह उस पर डाली और बेनियाज़ी से कहा, ''तुम किसी बड़ी ग़लतफ़हमी में हो। जाओ और अपनी राह लो! मुझे भला वहब से क्या सरोकार!''

उस शख़्स ने बुज़ुर्ग का दामन पकड़ लिया। ''ख़ुदा की क़सम! मैं किसी ग़लतफ़हमी में नहीं हूँ। मैंने आलिमों और वलियों की सोहबत में वक़्त गुज़ारा है। आप जैसे लोग तो हिक्मतों और इल्म का सरचश्मा हैं। अगर आप इसलिए मुझसे बात नहीं करना चाहते कि हालात ख़राब हैं और ख़लीफ़ा हारून के जासूसों और आम लोगों में फ़र्क करना मुश्किल हो गया है तो मैं ख़ुदा की क़सम खाकर आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आप जो कुछ भी कहेंगे, वह मेरे पास अमानत की तरह महफ़ूज़ रहेगा। अगर मैं इसमें ख़यानत करूँ तो अल्लाह मुझे वही सज़ा दे जो ख़यानत करने वाले की है''।

उस बुज़ुर्ग ने उसकी तरफ़ घूर कर देखा और बेज़ारी से कहने लगा, ''तुम कितने बातूनी हो! मैंने तुमसे कह दिया कि मैं इस बारे में कुछ नहीं

जानता।'' वह इतना कहकर आगे बढ़ गया।

मगर उस आदमी ने पीछा नहीं छोड़ा और उसके साथ-साथ चलता हुआ बोला, ''मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा हारून रशीद और उसके साथियों से कोई ताल्लुक़ नहीं है। मैं जानता हूँ कि आप उन तीन लोगों में से एक हैं जो इमाम मूसा काज़िम[अ॰] से क़ैदख़ाने में मिले थे और वहब भी उस वक़्त आपके साथ था''।

वह बुज़ुर्ग ठिठक कर रुक गया और गुस्से में बोला, ''अगर तुम इतना कुछ जानते हो तो फिर मेरे पीछे क्यों पड़े हो?

''मैं अहलेबैत[अ॰] का दोस्त हूँ। मैं इस कठिन वक़्त की सख़्तियों को समझता हूँ जो आले मुहम्मद[स॰] के दोस्तों पर गुज़र रहीं हैं। इमाम मूसा काज़िम[अ॰] मुसलसल क़ैद मे हैं। क़ैदख़ाने के दरबानों की उन पर सख़्तियाँ देखकर दिल ख़ून के आँसू रोता है मगर अफ़सोस कि हम बेबस हैं और शायद बुज़दिल भी। यक़ीनन ख़ुदा के यहाँ हम को जवाब देना पड़ेगा। उनसे मिलने का कोई रास्ता भी नहीं है। मुझे मालूम हुआ था कि आपने किसी तरह उनसे बात की है तो मैंने सोचा कि आपसे हिदायत और बसीरत हासिल करूँ।''

वह बुज़ुर्ग कुछ देर सोचता रहा। फिर इधर-उधर देखकर बोला, ''अगर तुम सच कह रहे हो तो इसे साबित करो।''

''आप मेरे साथ चलिए! मेरी बीवी मदीने की है और आले मुहम्मद[स॰] की आज़ाद की हुई कनीज़ है। हमारी दौलत सिर्फ़ अहलेबैत[अ॰] हैं। आप जैसी चाहें मुझ से क़सम ले लें। जैसा चाहें इत्मिनान कर लें।'' उसने पूरी सच्चाई से कहा।

बुज़ुर्ग ने उसकी आँखों में देखा जो उसके लफ़्ज़ों की सच्चाई को बयान कर रही थीं और कुछ सोच कर उसके साथ चल पड़े। उसके घर पहुँच कर जब अच्छी तरह से इत्मिनान कर लिया कि वह सच्चा है, तो बोले, ''सुनो! तुम हालात को जानते हो और तुम यह भी जानते हो कि लोगों की हमदर्दियाँ अब्बासियों को इसलिए हासिल हुई थीं कि उन्होंने आले मुहम्मद[स॰] की हिमायत और मदद का नारा लगाया था। उनका हक़ उन तक पहुँचाने का वादा किया था, मगर अफ़सोस कि उन्होंने न सिर्फ़ आले मुहम्मद[स॰] का हक़ नहीं पहुँचाया बल्कि लोगों की उनके साथ अक़ीदत और मुहब्बत को देखकर उन्हें अपनी सलतनत के लिए ख़तरा मानने लगे।''

''उनके दिन रात इसी कोशिश में सर्फ़ होते कि किस तरह इमाम काज़िम[अ॰] से लोगों की तवज्जो हटा सकें। इसीलिए ये हर उस शख़्स की जान के दुश्मन हो जाते हैं जो आले मुहम्मद[स॰] से अक़ीदत रखता है। हमें ये ख़बर बराबर मिल रही थीं कि हम मुहब्बते आले मुहम्मद[स॰] के जुर्म में बहुत जल्दी हारून के जुल्म का शिकार बनने वाले हैं। इसीलिए हमने मश्वरा किया लेकिन कुछ समझ में नहीं आया।''

''आख़िर में यही फैसला किया कि इमाम मूसा काज़िम[अ॰] से रहनुमाई हासिल की जाए। उनकी क़ैद के हालात से तो तुम वाक़िफ़ हो कि उनके दरबान चुन-चुन कर ज़ालिम और दुश्मने अहलेबैत रखे जाते हैं। उनसे मिलने पर सख़्त पाबन्दी है लेकिन किसी न किस तरह हमने अपना मसला उनकी ख़िदमत में पहुँचा ही दिया।''

''अगले रोज़ सुबह के वक़्त क़ैदख़ाने से मिट्टी की एक ठेकरी गिरी। हम पहले ही इस ताक में थे। हम ने बड़ी राज़दारी से वह ठेकरी उठा ली। मैं क़ुर्बान जाऊँ अपने इमाम पर''। उसका लहजा गुलूगीर हो गया और वह रुक कर आँसू पोंछने लगा। दूसरे शख़्स की आँखों से भी आँसू बहने लगे।

उस बुज़ुर्ग ने ठण्डी सांस भरी। ''इमाम पर क़ैद में इस क़दर सख़्ती है कि उन्होंने मिट्टी की उस ठेकरी पर सिर्फ़ एक हर्फ़ लिखा था।

''वह क्या?'' उस शख़्स ने बेताब होकर सवाल किया।

''उस ठेकरी पर ''जीम'' लिखा हुआ था'' फ़रज़न्दे रसूल के अता किये हुए उस एक हर्फ़ ने हम पर हिक्मत के दरवाज़े खोल दिये। हमें अपनी मुश्किल का हल ख़ुदबख़ुद मिल गया जो हमारे हालात के साथ मेल खाता है। हमारा तीसरा साथी, जिसका नाम बताना ज़रूरी नहीं, उसने ''जीम'' से ''जिलावतनी'' मान लिया। वह आज रात ये शहर छोड़ देगा। मुझे ''जीम'' से ''जबल'' समझ में आया। मैं पहाड़ों पर अपने आबाई मकान में पनाह ले लूँगा और हमारे दोस्त वहब बिन अम्र के लिए ये ''जीम'' जुनून की अलामत बना है। तुम देखोगे कि आले मुहम्मद[स॰] के इस दीवाने की दीवानगी से बड़े-बड़े अक़्लमंद हार जाएंगे।''

यह अक़्लमंद जो इमाम की हिदायत की वजह से दीवाना बन गया था, कोई और नहीं बल्कि हज़रत बोहलोल दाना थे जिनकी अक़्लमंदी और हाज़िर जवाबी के क़िस्से सारी दुनिया में मशहूर हैं और बच्चा-बच्चा जानता है। ●

क्या हम क़ैद हैं?

■ अनम रिज़वी, लखनऊ

ख़ुदा ने हम औरतों के लिए पर्दा बताया है जिससे हमारा जिस्म छुपा रहता है और हम नामहरमों की नज़रों से बचे रहते हैं लेकिन आज भी हमारे समाज में पर्दे को क़ैद कहा जाता है और कहा भी क्यों न जाए क्योंकि आज भी हमारे समाज में ऐसे लोग हैं जो लड़कियों से पर्दा करवाने के बावजूद भी उन्हें घर की चारदीवारी तक बांधे रखना चाहते हैं। जिससे लड़कियों की सोच बन जाती है कि हम क़ैद हैं और पर्दे में रहकर कुछ नहीं कर सकते, यह सोच ग़लत है क्योंकि हमारे दीन में मर्द औरत का दर्जा बराबर है। औरतें भी घर से बाहर काम कर सकती हैं लेकिन अपने पर्दे का ध्यान रखकर। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो पर्देदार औरतों को नौकरी तक देना पसंद नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता है कि वह माडर्न नहीं हैं। लेकिन ऐसा करने वालों की सोच से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि नियत क्या है। सोचने की बात यह है कि हम किसी और की वजह से अपने कल्चर में बदलाव क्यों लाएं? अगर हम डाक्टर, इंजीनियर, लॉयर, सी.ए. वग़ैरा बनना चाहते हैं तो बेशक पर्दे में रहकर बन सकते हैं। इसके लिए हमें अपने पर्दे से मंह मोड़ने की ज़रूरत नहीं है। हमें अपने साथ-साथ सोसाइटी को भी पर्दे और उसकी अच्छाईयों के बारे में बताना चाहिए। मैं बस यह कहना चाहती हूँ कि हम क़ैद नहीं हैं बल्कि पर्दे में रहकर भी हर जायज़ काम कर सकते हैं।

इन्फ़ाक़... ज़रा सोचिए तो!

इंसान में क़ुदरती तौर पर ऐसी सिफ़तें पाई जाती हैं जिनकी वजह से उसको अपनी जिस्मानी और दूसरी कई माद्दी ज़रूरतें पूरी करना पड़ती हैं। अगर इंसान इन ज़रूरतों को पूरा नहीं करेगा तो उसकी ज़िंदगी बाक़ी नही रह सकेगी। हर इंसान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह कोई न कोई प्रोफ़ेशन चुने। इसीलिए रोज़ी हासिल करने का असल मक़सद यह है कि उससे इंसान अपनी माद्दी ज़रूरतों को पूरा कर सके। लेकिन इस ज़माने में रोज़ी कमाने के नाम पर ज़्यादा से ज़्यादा दौलत इकट्ठा करना ज़िंदगी का मक़सद बन चुका है और इसी पर इंसान की अज़मत और कामयाबी का दारोमदार है। लोगों के बीच मशहूर है कि जिसकी दौलत ज़्यादा हो दुनिया उनके सामने झुक जाती है क्योंकि आम ख़्याल यह भी है कि उस शख़्स में पाई जाने वाली किसी अच्छी सिफ़त की वजह से अल्लाह ने उसे खूब दौलत दी है। यह आम नज़रिया सही नहीं है। हक़ीक़त यह है कि जिन लोगों को कम वसाएल दिए गए हैं वह कोई हैसियत नही है बल्कि किसी मसलेहत की बिना पर है। इसके अलावा दौलत इंसान की ज़ात से एक अलग चीज़ है। उसकी कमी या ज़्यादती का इंसानी बुलंदी से कोई वास्ता नही है क्योंकि हो सकता है कि माली ऐतबार से कम लोग भी कुछ क्वॉलिटीज़ की वजह से दौलतमंदों से बेहतर हों। इसके अलावा यह कि दौलत की हमेशा रहने वाली नहीं है बल्कि मरने के बाद वह दूसरों को मिल जाती है या ज़िंदगी में ही किसी हादसे की वजह से बर्बाद हो सकती है। अगर मुसलमान अक़्ल व समझ रखता हो तो दौलत की इम्तेहान ही समझेगा और सख़्त ज़िम्मेदारी महसूस करेगा जिनसे बाहर निकलना बहुत मुश्किल है क्योंकि हो सकता है कि यह दौलत उसकी खुशनसीबी न हो बल्कि दौलत की भरमार उसके बहकने की वजह बन जाए।

आयतुल्लाह शीराज़ी अपनी किताब में लिखते हैं, "दौलत की दो क़िस्में हैं : एक नेमत, दूसरे इम्तेहान। अगर दौलत की वजह से इंसान में इंकेसारी, सख़ावत और शुक्रगुज़ारी ज़्यादा हो जाए तो यह नेमत है और अगर दौलत की ज़ियादती के साथ कंजूसी, घमंड और मिज़ाज सख़्ती बढ़ जाए तो दौलत इम्तेहान है। इस तरह गुरबत की भी दो क़िस्में हैं: एक अगर इंसान खुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहे तो नेमत है और अगर इंसान इस इलाही इम्तेहान पर खुश न हो तो आज़माइश है।"

इस बारे में यह बात भी सामने रहे कि दौलत खुद कोई बुरी चीज़ नहीं है। बुरी चीज़ दौलत से जुड़ाव रखना है, जिससे इंसान इस दुनिया का होकर रह जाए। वरना दुनिया में बहुत से ग़रीब ऐसे हैं जो उससे जुड़ाव रखते हैं और बहुत से दौलतमंद ऐसे हैं जो दौलत को सिर्फ़ आख़िरत का ज़रिया मानते हैं।

कहा जाता है कि दौलत की मिसाल सांप की तरह है जिससे फ़ायदा और नुक़्सान दोनों हो सकते हैं। दरअस्ल दुनिया की दौलत और रूतबा व नेमत एक सीढ़ी है जिससे इंसान ऊपर भी जा सकता है और नीचे भी आ सकता है। यह इंसान पर है कि वह इस का इस्तेमाल किस तरह करता है। हाफ़िज़ शीराज़ी कहते हैं, "दौलत का न होना ज़हेर नही है, ज़हेर यह है कि दौलत की मुहब्बत इंसान के पांव की ज़ंजीर बन जाए।"

अहमद नराक़ी बहुत बड़े आलिम गुज़रे हैं जो ईरान के शहर काशान में रहते थे। उनकी माली हालत बहुत अच्छी थी। एक दुरवेश ने उनकी एक किताब "मेराजुस सआदत" को पढ़ा। इस किताब का एक चैप्टर 'तक़वा' उसकी समझ में नहीं आया। किताब पढ़ कर उसके दिल में अहमद नराक़ी से मिलने की ख़्वाहिश पैदा हुई।

वह दुरवेश लम्बा सफ़र करके काशान पहुंचा लेकिन वहां पहुंच कर उनकी शानो शौकत देखकर उसने दांतों में उंगली दबा ली। दिल में सोचने लगा कि यह सब कुछ किताब "मेराजुस सआदत" के चैप्टर 'ज़ोहद' के बिल्कुल उल्टा है। कुछ दिन उस दुरवेश ने वहां इसी कशमकश में गुज़ारे कि उनसे पूछे कि यह सब कुछ क्या है? लेकिन शर्म की वजह से सवाल न किया। आप अपने इल्म की वजह से समझ गए थे कि यह दुरवेश किसी मुश्किल से दो चार है। तीसरे दिन

जब वह जाने लगा तो आपने उससे पूछा कहा जा रहे हो? उसने जवाब दिया मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत के लिए इराक़ जाना चाहता हूं। आपने कहा मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।

उस शख़्स ने कहा मैं कुछ दिन आपका इंतिज़ार कर सकता हूं आप तैयारी कर लें। अहमद नराक़ी ने कहा कि मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूं। उस दुरवेश ने हैरान होते हुए पूछा कि ये कैसे हो सकता है कि आप यह सब कुछ छोड़कर इसी वक़्त मेरे साथ चल दें। उन्होंने कहा कि हां! मैं इसी वक़्त तुम्हारे साथ जाने को तैयार हूं। फिर दोनों वहां से रवाना हो गए।

काशान से बारह मील की दूरी पर जब दोनों ने एक चश्मे के नज़दीक पड़ाव डाला तो दुरवेश को याद आया कि वह अपना कशकोल भूल आया है। वह वापस पलटना चाहता था कि जाकर अपना कशकोल ले आए। आपने उससे कहा, कोई बात नही जब ज़ियारत करके वापस आएंगे तो तुम्हें तुम्हारा कशकोल मिल जाएगा या मैं तुम्हें नया ख़रीद कर दे दूंगा लेकिन दुरवेश ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया और कहा मुझे अपने कशकोल से मुहब्बत है। मैं उसके बग़ैर सफ़र नही कर सकता।

आपने कहा कि मेरे और तुम्हारे बीच यही फ़र्क़ है। मेरे पास माल-दौलत सब कुछ है। लेकिन मुझे उनसे मुहब्बत नही है लेकिन तुम्हारे पास इनमें से कुछ भी नही है सिर्फ एक कशकोल है जो तुम्हारे लिए एक बुत का दर्जा रखता है।

इससे साफ़ हो जाता है कि ज़ाहिद इंसान के लिए दौलत इम्तेहान नहीं है। इम्तेहान ऐसे लोगों के लिए है जिनके लिए दौलत हासिल करने की ख़्वाहिश रूहानी तलब बन जाए। साइकॉलोजी के मुताबिक़ इंसान में जो नेचुरल ख़्वाहिशें पाई जाती हैं उनकी दो क़िस्में हैं, महदूद और सतही। जैसे खाना पीना और सोना वग़ैरा। इन ख़्वाहिशों का तअल्लुक़ इंसानी जिस्म से है। जैसे ही जिस्मानी तलब पूरी होती है इंसान की दिलचस्पी भी ख़त्म हो जाती है लेकिन नेचुरल ख़्वाहिशों की दूसरी क़िस्म जिसका तअल्लुक़ रूह से है बहुत गहरी होती है। जैसे इल्म की तलब, दौलत की चाहत या रूतबे या मुक़ाम की चाहत वग़ैरा। इन ख़्वाहिशों की हदबंदी नहीं की जा सकती। अगर इंसान में इल्म की चाहत पैदा हो जाए तो वह अपनी पूरी ज़िंदगी भी अगर इल्म हासिल करने में लगा दे फिर भी सुकून से नहीं बैठ सकता। हांलाकि इस चाहत में पॉज़िटिव प्वाइंट ऑफ़ वियु पाया जाता है लेकिन इसकी भी कोई हद तै नही कि जहां पहुंच कर इंसान मुतमईन हो जाए। इसी तरह यह रूहानी चाहत अगर माद्दियत का रास्ता चुन ले तो उसकी भी कोई हद तय नही की जा सकती। एक स्टेज पर पहुंच कर दूसरी स्टेज की चाहत उसमें पैदा हो जाती है। रात-दिन ज़्यादा से ज़्यादा दौलत इकट्ठा करने में मगन शख़्स की यह हालत हो जाती है कि जितना ज़्यादा हो, उसे कम लगता है। जबकि इंसान दौलतमंद हो या ग़रीब उसकी बुनियादी ज़रूरतें कुछ फर्क़ के साथ बराबर ही होती हैं। जैसे हर शख़्स की जिस्मानी बनावट और उम्र के ऐतबार से उसकी ख़ूराक में दूसरे शख़्स के मुक़ाबले में मामूली फर्क़ हो सकता है लेकिन यह मुमकिन नही कि किसी अमीर आदमी की ख़ूराक किसी ग़रीब शख़्स से दस गुना ज़्यादा हो या उसे सोने के लिए बहुत बड़ी जगह चाहिए। इससे साबित होता है कि दौलत जमा करने का तअल्लुक़ इंसान की बुनियादी ज़रूरतों से नही है बल्कि उसका तअल्लुक़ दौलत से लगाव की बिना पर है।

बावजूद यह कि इंसानी ज़िंदगी बहुत कम है और जो ज़िंदगी है वह भी पता नहीं वह भी कब तक है। हम में से हर एक लोगों को मरते हुए भी देखता है और हर एक को यह भी पता है कि एक दिन हम भी मर जाएंगे। फिर भी हम इस हक़ीक़त को पसंद नही करते। इसकी वजह यह है कि कुछ हक़ीक़तें ऐसी हैं जिनको इंसान समझ तो लेता है लेकिन दिल उन हक़ीक़तों पर यक़ीन नही रखता। इंसान का नेचर इस तरह का है कि जब तक वह किसी हक़ीक़त पर दिल से यक़ीन नही रखता उसकी तरफ़ संजीदगी से ध्यान नहीं दे सकता। इसलिए मौत के बारे में भी फिर भी उसका दिल इस बात पर यक़ीन नहीं रखता कि एक दिन वह भी मर जाएगा।

आयतुल्लाह शीराज़ी ने अपनी किताब "तौहीद" में पेज नं. 92 पर हज़रत अली[अ] का क़ौल नक़्ल किया है जिसमें आपने फ़रमाया है, "लोगों के दिलों में जितना मौत पर यक़ीन शक से मिलता है मैंने किसी यक़ीन को इस तरह शक से मिलता हुआ नहीं देखा।" आम तौर पर इंसान मौत के बारे में जो कुछ जानता है वह लफ़्ज़ों तक ही है और दिल को उन हक़ीक़तों की ख़बर नही। यही वजह है कि अक्सर लोगों की सारी कोशिश दौलत के हासिल करने तक ही होती है। यह ऐसा रास्ता है जिस पर चलते रहने से दिल में सख़्ती होती है जिससे बचने का यह ही रास्ता है कि इस दौलत से ज़रूरतमंदों के लिए ख़र्च किया जाए ताकि दौलत के लिए दिल में सख़्ती पैदा न हो।

कुछ लोग ज़रूरतमंदों की माली मदद तो करते हैं लेकिन इसके साथ-साथ वह इसको दूसरों के सामने बयान भी करते रहते हैं। मज़हबी एतेबार से इस तरह का खर्च जिसमें दिखावा भी हो, दिल में और ज़्यादा सख़्ती लाता है। दिल की सख़्ती दूर करना और किरदार साज़ी के लिए सिर्फ़ वही अमल फ़ाएदेमंद साबित होता है जिसमें खुदा के सिवा कोई मुतवज्जेह न हो। इसके अलावा लेने वाले पर उसको जताया न जाए, न उसके बदले की उम्मीद हो। ऐसा करना इंसान के लिए बहुत मुश्किल चीज़ है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि इंसान काम की शुरूआत तो ख़ुलूस के साथ सिर्फ़ अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिए करता है लेकिन काम कर लेने के बाद इंसान की नफ़्सानी ताक़त उसे उस काम को दूसरों को बताने पर उकसाती है। ऐसे में नफ़्स की लगाम थामे रखने के लिए बहुत सब्र की ज़रूरत होती है जो एक मुश्किल काम है।

इन्फ़ाक़ (ख़र्च) की सिफ़त सिर्फ दौलतमंदों ही के लिए नहीं है। इस सिफ़त को अमीर और ग़रीब दोनों अपना सकते हैं। मज़हबी ऐतेबार से दौलतमंद की सख़ावत अच्छी है लेकिन ग़रीब की सख़ावत और भी अच्छी है। इस लिहाज़ से ज़्यादा सवाब की हक़दार है।

शेख़ अब्बास कुम्मी ने अपनी कए किताब में लिखा है कि बनी अब्बास के दौर में एक आदमी मअन बिन जाहिद सख़ावत में बहुत मशहूर था और वह अपने वक़्त का हातिम ताई समझा जाता था। अब्बासी ख़लीफ़ा मंसूर दवानक़ी ने जो उसकी सख़ावत से डरता रहता था अपनी तख़्तनशीनी के बाद मअन को गिरफ़्तार करने का फ़ैसला किया और उसकी गिरफ़्तारी पर इनाम भी तय कर दिया। मअन काफ़ी दिनों तक भागता रहा। एक दिन उसने सोचा कि उसे जंगल के अरब क़बीलों में चला जाना चाहिए उसने अपनी सारी दौलत को जवाहरात की शक्ल में बदल लिया और उसे लेकर एक ऊंट पर सवार हुआ। उसने अपने चेहरे पर नक़ाब डाल रखी थी ताकि कोई पहचान न ले। जैसे ही वह रात के अंधेरे में घर से निकला एक आराबी ने जिसके हाथ में तलवार थी करीब आकर उसके ऊंट की लगाम को पकड़ लिया और कहा मैं तुम्हें पहचान गया हूं तुम मअन हो मैं खलीफ़ा का जासूस हूं। मअन ने बहुत मिन्नत समाजत की कि मुझे मंसूर के पास मत ले जाओ लेकिन वह न माना। इस पर मअन ने उससे कहा कि मैं तुम्हें नही जानता लेकिन इतना ज़रूर जानता हूं कि तुम लालच में आकर मेरी दौलत छीनना चाहते हो लेकिन मैं तुम्हें इतना बता दूं कि मेरे बदले ख़लीफ़ा तुम्हें दस हज़ार दिरहम से ज़्यादा नही देगा। यह कहकर उसने अपने तमाम जवाहरात उसके सामने रख दिए और कहा कि इन सब को ले लो और मुझे मंसूर के पास मत ले जाओ और उससे रहम की दरख़्वास्त करने लगा। आराबी ने कहा कि अगर तुमने मेरे एक सवाल का सही जवाब दे दिया तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। मअन राज़ी हो गया। उस शख़्स ने कहा कि तुम इतने ज़माने सख़ावत में मशहूर रहे हो तुमने इस ज़माने में अपनी आधी दौलत राहे खुदा में दे दी है?

मअन ने जवाब दिया कि नहीं! उसने पूछा कि क्या चौथाई हिस्सा दे दिया है? मअन ने उसका भी नहीं में जवाब दिया। उस शख़्स ने पूछा तुमने अपनी दौलत का दसवां हिस्सा तो ज़रूर दे दिया होगा? मअन न सर झुका कर जवाब दिया। मैंने दसवां हिस्सा तक नही दिया। इस पर उस आराबी ने कहा, अगर मेरी तमाम ज़रूरतें तीस दरहम में पूरी हो सकती है और मंसूर मुझे तुम्हारे बदले सौ दरहम भी देता है और मैं तुमसे कहूं कि मेरे पास आज शाम के खाने के लिए भी कुछ नही है फिर भी अगर मैं तुम्हें तुम्हारी सारी दौलत समेत छोड़ दूं तो बताओ मेरी सखावत ज़्यादा है या तुम्हारी?

मअन कहता है कि यह सुनकर दुनिया मेरी नज़रों में अंधेरी हो गई और मैंने उस आराबी से कहा कि यह रक़म ले लो और मुझे ज़्यादा शर्मिंदा न करो। आराबी ने जवाब दिया मैं नेक कामों का मआवज़ा नही लेता। यह कह कर उसे छोड़ दिया। मअन बिन ज़ाहिद का बयान है इस वाक़ेए के बाद मैं कभी इस बात पर तैयार नही हुआ कि कोई मुझसे यह कहे कि तुम सख़ावत में मशहूर हो।

इस वाक़ेए के याद आने पर मुझे शर्मिंदगी का एहसास होता था। जैसा कि पहले लिखा गया कि अगर इंसान में खुदपसंदी की ख़्वाहिश पैदा हो जाए तो इस रूहानी चाहत का कोई ठिकाना नही है। जितनी भी दौलत जमा कर ले उसे कम महसूस होती है। ऐसा शख़्स अपने से ज़्यादा दौलतमंद को देखकर हमेशा परेशान रहता है। रूतबे क चाहत की भी यही हालत है। हर फर्द समाज में कितना ही बुलंद मुक़ाम हासिल कर ले फिर भी उसे बुलंदतर मक़ाम की आरज़ू रहती है। यह निगेटिव चाहत बाक़ी रहे तो रूह पस्ती का शिकार होकर इंसानी परफ़ेक्शन के रास्ते में रुकावट बन जाती है। जिस तरह अगर जिस्म बीमार हो तो इंसान का सारा ध्यान अपनी जिस्मानी तकलीफ़ की तरफ़ लग जाता है और वह किसी दूसरे काम की तरफ़ ध्यान नही दे सकता। इसी तरह अगर दौलत की मुहब्बत इंसान के दिल में बैठ जाए तो रूह की ख़राबी की वजह बन जाती है। यह ख़राबी इंसान को किसी अच्छे काम की तरफ़ बढ़ने नही देती। ऐसे ही सारी ज़िंदगी दौलत की चाहत और उसको हासिल करने में ही लग जाती है।

एक स्कॉलर का कहना है, ''मुहब्बत अगर पैरेंट्स से हो तो इबादत बन जाती है। टीचर से हो तो रौशनी बन जाती है और दौलत से हो तो बीमारी बन जाती है।''

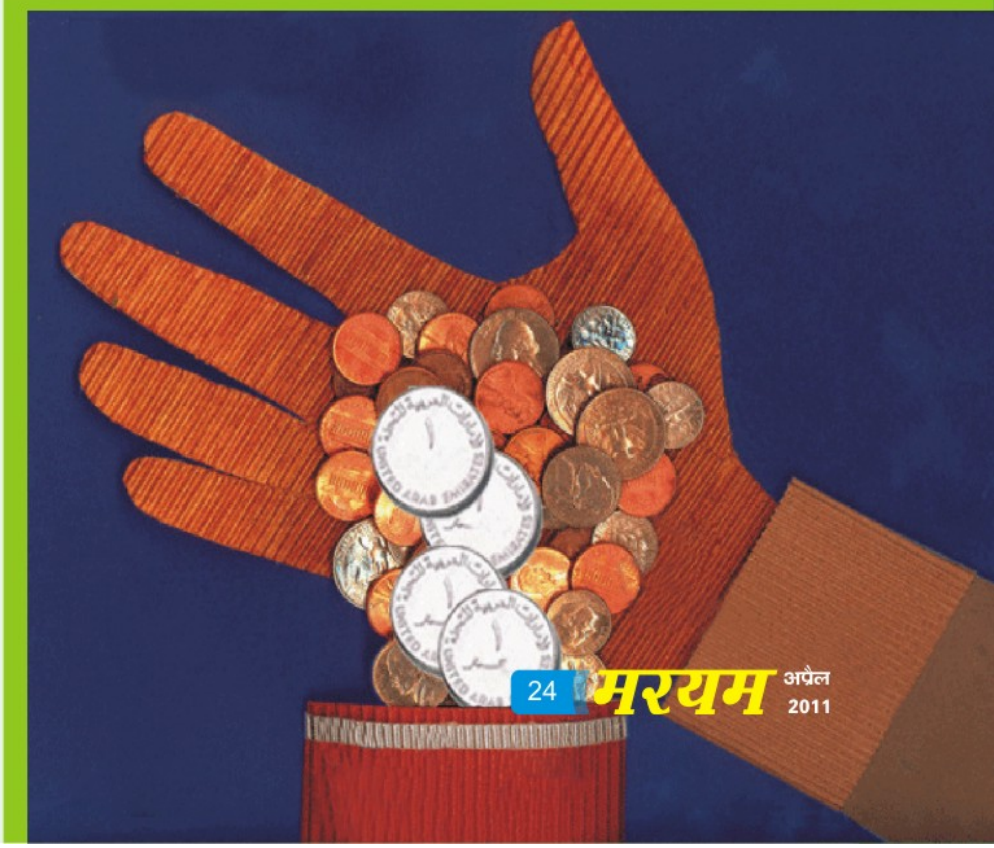

बिहारी कबाब

- गोश्त.....................................आधा किलो (टुकड़े बना लें)
- कच्चा पपीता (पिसा हुआ)....................एक चाय का चम्मच
- अदरक (पिसी हुई)..............................एक चाय का चम्मच
- नमक ....आधा चाय का चम्मच
- दही......................................चार चाय के चम्मच (फेंटकर)
- लाल मिर्च (पिसी हुई)..................आधा चाय का चम्मच
- गर्म मसाला (पिसा हुआ)............आधा चाय का चम्मच
- लीमू का रस..दो चाय के चम्मच
- प्याज़ (कच्ची पीसकर)............................दो चाय के चम्मच
- ज़ीरा भुना हुआ (पिसा हुआ).................एक चाय का चम्मच
- तेल...आधा कप
- धनिया भुना हुआ (पिसा).........................दो चाय के चमचे

तरकीबः

गोश्त में सारा मसाला लगाकर दो तीन घंटे के लिए रख दीजिए। फिर मसाले को अच्छी तरह मिला लीजिए। फिर सीखों में लगाकर कोयले पर सेक लीजिए। चाहे तो सेंकने के बजाए एक पतीली में डालकर गोश्त गला लें, जब गोश्त गल जाए तो एक कोयले को दहका कर पतीली में डाल दें और ऊपर से घी टपकाकर धुआं दीजिए। जब धुआं बाहर आने लगे तो फ़ौरन ढक्कन बंद कर दीजिए वही ज़ायक़ा आएगा।

Recipe

देखें! बच्चे क्या कहते हैं!

■ फ़रहनाज़ नक़वी

पहली बार मां-बाप बनने वाले शौहर और बीवी के लिए बच्चे का आवाज़ें निकालना और तुतला-तुतला कर बातें करना दुनिया-जहान की ख़ुशियों के बराबर होता है। बच्चों के बातें करने के बारे में एक्सपर्टस ने कुछ एड्वाइस दिए हैं। अगर उन पर अमल किया जाए तो आपको बहुत अच्छे रिज़ल्ट्स मिल सकते हैं।

छः महीने की उम्र से जब बच्चा बे माने बातें शुरू कर देता है तो इस दौरान आप उसकी मदद कर सकती हैं, जबकि यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सारे बच्चे एक दूसरे से अलग-अलग होते हैं। बच्चों की साइकॉलोजी के एक एक्सपर्ट ने अपनी किताब में लिखा है कि लड़के आम तौर पर लड़कियों के मुक़ाबले में देर से बात करना शुरू करते हैं और वह बच्चे जो ऐसे घराने में पैदा होते हैं जहां दो ज़ुबानें बोली जाती हैं, वह आम तौर पर ज़्यादा लफ़्ज़ों में बातचीत का फ़न सीख़ते हैं। इस तरह वह बच्चे जिन्होंने अभी बोलना शुरू किया है और उनसे पहले बड़े भाई या बहन भी मौजूद हैं, ऐसे बच्चे बातचीत के लिए ज़्यादा वक़्त चाहते हैं। यहां हम बच्चे की बातचीत के अंदाज़ को मज़बूती देने वाले कुछ उसूल बयान कर रहे हैं। लेकिन ध्यान रहे कि आप इन बातों को बिल्कुल भी सख़्ती से न लें और उन्हें करवाने के लिए बिल्कुल बच्चे पर सख़्ती न करें।

बच्चे के लिए कुछ वक़्त निकालिए!

कोशिश करें कि हर रोज़ कम से कम बीस मिनट सिर्फ़ और सिर्फ़ बच्चे के लिए ख़ास कर दें और इस बीच उसके पास बैठ कर उससे बातें करें, उसके साथ खेलें और जो कुछ वह कह रहा है उस पर नज़र रखें। फिर उसे उसके कामों के बारे में बताएं।

खेल-खेल में उसे सबक़ याद कराएं

बच्चे से बातचीत का सिलसिला जारी रखें। बच्चा ख़ेल-कूद के बीच अलग-अलग आवाज़ें निकालता है और कुछ शेर या पोयम्स जैसे "चूं चूं चूं चूं चाचा" वग़ैरा बहुत जल्द ज़ेहन में बिठा कर गुनगुनाता रहता है। यह आवाज़े और यह पोयम्स बच्चें में बातचीत की सलाहियत बढ़ाने में अहम रोल अदा करते हैं। इससे न सिर्फ़ बच्चों में बोलने और सही अलफ़ाज़ अदा करने का

शौक़ पैदा होता है बल्कि वह बहुत आसानी के साथ अपने कामों को करते वक़्त अलग-अलग सेंटेन्स याद कर सकता है।

उसकी ग़ल्तियों के सुधार में सख़्ती न करें

एक साल की उम्र में जब बच्चा एक लफ़्ज़ या सेंटेन्स अपनी ज़ुबान से अदा कर लेता है तो फिर बोलना शुरू हो जाता है। वह जो कुछ कहता है उसमें ज़्यादातर अलफ़ाज़ ग़लत होते हैं, प्रोनॉनसिएशन ग़लत होता है। दो साल की उम्र तक बच्चे का ग्रॉमर से भी कोई ताअल्लुक़ नहीं होता। दो साल तक के बच्चे आम तौर से "श", "व" और "ग" सही से नहीं कह पाते और बहुत सी चीज़ों के लिए बच्चा एक ही चीज़ का नाम लेता है जैसे बिल्ली के लिए "मियाऊं" का लफ़्ज़ अगर उसके ज़ेहन नशीन हो जाए तो वह हर उस जानवर को जिसके चार पांव हैं, दुम है, आंखें वग़ैरा हैं, "मियाऊं या माऊं"" ही कहेगा।

अगर आप हर बार उसे टोकेंगी, उसकी ग़लती को सही करेंगी तो वह बात करने से कतराने लगेगा। अपने बारे में सोचें कि जब आप कोई नई ज़ुबान सीख़ते हैं तो आपके क्या ख़्यालात होते हैं, क्या एहसासात होते हैं। याद रखें कि बच्चे के भी उस वक़्त यही ख़्यालात और एहसासात होते हैं क्योंकि वह भी ज़ुबान सीख रहा है।

मौजूदा वक़्त और हालात को नज़र में रखें

आपको मालूम होना चाहिए कि छोटे बच्चे के दिमाग़ में पास्ट या फ़्युचर नाम की कोई चीज़ नहीं होती है। बच्चे उसी को सब कुछ जानते हैं जो उनकी नज़रों के सामने होता है यहां तक कि उसके मां-बाप ही क्यों न हों उसके लिए इस बहुत बड़े कुत्ते का ज़िक्र जो उसने कल पार्क में देखा था या नानी अम्मा ने उसे कल घर आने की दावत दी थी, कोई माने नहीं रखती।

वह ज़्यादातर उन चीज़ों को मानता है जो उसके आस-पास में उस वक़्त मौजूद हैं या वह काम जो उस वक़्त अंजाम पा रहे हैं। आप अपने रोज़मर्रा के कामों का ज़िक्र अपने बच्चे से कर सकती हैं। कुछ जुमले जैसे "चप्पल पहनो", "दूध पीने का वक़्त है" वग़ैरा इस बात की वजह बनते हैं कि बच्चा उन ही लफ़्ज़ों को अपनी ज़ुबान पर ज़्यादा से ज़्यादा दोहराए। बच्चे से बातें करने के लिए खाने के बीच का वक़्त और तस्वीरों वाली किताब के पन्ने पलटने का वक़्त बेहतरीन है।

सुनने में उसकी मदद करें

सुनने का फ़न एक अहम हुनर है जो बच्चे की तरक़्क़ी का ज़रिया बनता है और वह जान लेता है कि बात किस तरह की जाए। सुनना और याद करना वह हुनर हैं जिनके सीख़ने की बच्चे को ज़रूरत है ताकि बड़ा होने तक सही अलफ़ाज़ को अदा कर सके। आप अपने बच्चे की मदद करें ताकि वह सुनने का फ़र्क़ महसूस कर सके। बच्चे को हरगिज़ सारा दिन, रेडियो, टी.वी. देखने और सुनने में बिज़ी न करें क्योंकि यह चीज़ें उसे बातें करने से रोकती हैं। जिस वक़्त बच्चा बात कर रहा हो आप बहुत ग़ौर से उसकी बातें सुनें और अपने बोलने की बारी का इंतेज़ार करें। ख़ामोशी से उसकी बात सुनें ताकि वह भी यह सीख़ ले कि जब कोई बात कर रहा हो तो उसे ख़ामोशी से सुना जाता है।

माँ का दूध पीने वाले बच्चे ज़्यादा ज़हीन होते हैं

बेशक बच्चे के लिए मां का दूध बहुत ज़्यादा ज़रूरी है। मेडिकल एक्सपर्ट्स ने अलग-अलग रिसर्च से यह साबित किया है कि मां का दूध पीने वाले बच्चे जिस्मानी और ज़ेहनी तौर पर दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा सेहतमंद और एक्टिव होते हैं।

मैकगिल यूनिवर्सिटी और मांट्रेयाल चिल्ड्रेन अस्पताल की मिली-जुली मेडिकल रिसर्च से यह बात सामने आई है कि जो बच्चे माँ के दूध पर परवरिश पाते हैं वह ज़्यादा ज़हीन होते हैं। मेडिकल रिसर्च के एक मश्हूर मैगज़ीन में छपने वाली रिसर्च में बताया गया है कि माँ का दूध पहले तीन महीनों में ही बच्चे के ऊपर अपना असर दिखाने लगता है। डिब्बे का दूध पीने वाले बच्चों के ग्रुप और मां का दूध पीने वाले बच्चों के बीच जब ज़ेहानत का मुक़ाबला हुआ तो दूसरे ग्रुप के सारे बच्चों ने कम से कम 6 प्वाइंटस ज़्यादा हासिल किए। इसी रिसर्च के एक दूसरे मरहले में जब 18 साल से 20 साल के नौजवानों के बीच मुक़ाबला हुआ तो वहां भी माँ का दूध पीने वाले नौजवानों ने 46% बेहतर काम करके दिखाया। इस मुक़ाबले में सोच विचार, सीखने का शौक़, मेमोरी और एक्टिविटी टेस्ट शामिल थे। रिसर्च पूरी करने वाले प्रोफ़ेसर माइकल करामीर ने कहा है कि माँ का दूध पीने वाले बच्चे अपनी ज़िंदगी में ज़्यादा स्मार्ट और फुर्तीले होते हैं।

एक नई रिसर्च से यह पता चला है कि माँ का दूध पीने वाले बच्चों के फेफड़े मज़बूत होते हैं। साइंटिस्टस का कहना है कि ब्रेस्ट-फ़ीडिंग में लगने वाली मेहनत बच्चों के फेफड़ों पर पॉज़िटिव असर डालती है और ऐसे बच्चों के फेफड़े बालिग़ होने के बाद भी उन लोगों के फेफड़ों से ज़्यादा सेहतमंद होते हैं जिन्होंने बचपन में मां का दूध न पिया हो। साउथहेम्पटन यूनिवर्सिटी और मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी के कालेज ऑफ़ वेटनरी मेडिसिन के रिसर्च करने वालों की मिली-जुली टीम ने इस के बारे में आयल आफ़ वाइट पर दस साल की रिसर्च के दौरान लगभग डेढ़ हज़ार बच्चों का टेस्ट किया। उन्होंने पूछा कि वह बच्चे जिन्हें कम से कम 4 महीने तक ब्रेस्ट फ़ीडिंग कराई गई थी उनके फेफड़े बाद के बचपन में भी ज़्यादा बेहतर काम कर रहे थे। रिसर्च में शामिल एक तिहाई बच्चों को कम से कम 4 महीने तक ब्रस्ट फ़ीडिंग कराई गई और यह जाना गया कि औसतन इन बच्चों के फेफड़े अपने अंदर ज़्यादा देर तक आक्सीज़न रोक सकते हैं और उसे ज़्यादा तेज़ी से बाहर निकाल सकते हैं।

कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता

■ सफ़ीना अरफ़ात फ़ातिमा

रंग बिरंगे रगों में रंगी यह दुनिया और उस पर फैला हुआ तिलसमाती आसमान, सूरज की ज़िंदगी देने वाली गर्मी और चांद की ठंडी-ठंडी रूह में उतर जाने वाली चांदनी, बादलों के क़ाफ़िले, सितारों की फ़ौज, तरह-तरह के परिंदों के झुंड, देव जैसे जानवरों का लश्कर, कहीं समंदर, कहीं झील, कहीं दरिया, कहीं आसमान को छू लेने वाले पहाड़ और उनकी दूर तक फेली हुई चोटियां, कहीं दिल को छू जाने वाले फूल और उनकी भीनी-भीनी खुश्बुएं...

यह दुनिया और यह युनिवर्स खुदा की कुदरत का शाहकार है। जो चीज़ें दिखाई देती हैं, उनकी ही तारीफ़ नहीं की जा सकती, उन चीज़ों की तो बात ही अलग है जो हमें दिखाई नहीं देतीं, जिनको देखने और समझने के लिए उन पर ग़ौर करने और उनकी स्टडी करने की ज़रूरत है।

यूं तो हर चीज़ ख़ुदा की पैदा की हुई है लेकिन इंसान सारी मख़लूक़ में सब से अलग है। मर्द हो या औरत, उसे अपने मालिक और पैदा करने वाले की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना है और फिर इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया से कूच कर जाना है। इस सफ़र के बीच इंसान को अलग-अलग स्टेजेस से गुज़रना पड़ता है, कभी नाकामियां उसकी क़िसमत में आती हैं, कभी कामयाबियाँ उसका नसीब बनती हैं, कभी मुश्किलें रास्ते में आकर रास्ता रोक देती हैं तो कभी बंद रास्ते उसके लिए खुल जाते हैं वह सिर्फ़ जीने की तलाश कर सकता है, जब तक सांसों से रिश्ता बाक़ी है तब तक लगातार कोशिश करते रहना चाहिए। यह याद रहे कि "कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता"। जो उसकी मर्ज़ी वही हमारी तक़दीर, जो हमारे लिए नहीं है वह हमें नहीं मिल सकता लेकिन अपनी कमियों को तक़दीर के सर थोपना भी ठीक नहीं है। कामयाबी की मंज़िल तक पहुंचने की कोशिश आख़िरी सांस तक हो, होंटों पर दुआएं हों...फिर उसकी मर्ज़ी, वह जो हम सब का पालने वाला और मालिक है।

अक्सर यह देखा गया है कि लोग दूसरों को ख़ुद से अच्छा और ख़ुशहाल देखते हैं तो कुढ़ते हैं, उनके पास कार है और हमारे पास यह खटारा टू-व्हीलर, उनके पास शानदार बिल्डिंग है और हमारे पास यह टूटा फूटा मकान... यह क्यों नहीं देखा जाता कि दुनिया में ऐसे न जाने कितने लोग हैं जिनके सर पर छत भी नहीं है, टूटी-फूटी भी नहीं है। अगर किसी और को कोई फ़ायदा होता है और किसी को नहीं तो इंसान के अंदर की जलन यह कहती है कि उससे भी वह फ़ायदा, वह नेमत छिन जाए, जो हमारे पास नहीं है या फिर कम से कम जुबान पर यह शिकवा ज़रूर होता है कि उनकी वजह से हमारे पास यह चीज़ नहीं है। हम में से ज़्यादातर लोग अपनी महरूमियों के लिए दूसरों को क़ुसूरवार ठहराते हैं, अगर हमें यह यक़ीन हो कि जो कुछ हमारे नसीब में है वह हम से कोई छीन नहीं सकता और जो हमें मिला नहीं उसमें ख़ुदा की मर्ज़ी भी शामिल है, तो फिर होंटों पर कभी कोई शिकवा ही नहीं आएगा।

आमतौर पर ऐसी औरतें जिनमें क़िनाअत और सब्र व शुक्र की सिफ़त नहीं होती, वह दूसरी औरतों की ऐशो-आराम वाली ज़िंदगी, तरक़्क़ी और कामयाबी को देखकर अपने नसीब को कोसती रहती हैं, हांलाकि वह अगर चाहें तो कोशिश के रास्ते पर चलते हुए इस मोड़ तक पहुंच सकती हैं जहां एक अच्छी ज़िंदगी सामने खड़ी होती है।

हमारी परेशानियां हमारी अपनी खड़ी की हुई हैं, दूसरों से गिला क्यों? अगर मसले हैं तो उनकी वजहें भी होंगी और उनका हल भी, जो हमें ही ढूंढना है। अपने बुरे हालात के लिए रिश्तेदारों, दोस्तों या किसी और को ज़िम्मेदार ठहराना ठीक नहीं है, हमें वही मिलेगा जो हमारा नसीब है लेकिन कोशिश जारी रहे। अक्सर कोशिश के सिक्के ज़िंदगी के कशकोल में डाले जाते हैं तो आराम, इत्मिनान, ख़ुशहाली और कामयाबी मिल ही जाती है। इसलिए दूसरों से शिकायत किए बिना लगातार कोशिश की जाए...

कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता
कहीं ज़मी तो कहीं आस्मां नहीं मिलता ●

हिजाब

समाज की अहम ज़रूरत

■ उज़मा ज़ैदी

शायद ही कोई ऐसा हो जो यह न जानता हो कि पर्दा करना इस्लाम में वाजिब है लेकिन आम तौर पर पर्दा करना एक मुश्किल काम समझा जाता है और लोग यह कहते हुए नज़र आते हैं, हम पर्दा क्यों करें? इस ज़माने में पर्दा करना बहुत मुश्किल है वग़ैरा वग़ैरा। इस तरह इस अहम फ़रीज़े को 'आज़ादी का दुश्मन' समझकर आसानी से भुला दिया जाता है। इस आर्टिकल में पर्दे के बारे में कुछ अहम बातों को बताया जा रहा है जो पर्दे की अहमियत और ज़रूरत को वाज़ेह करते हैं ताकि जो बच्चियां पर्दा कर रही हैं या करना चाहती हैं वह इस हक़ीक़त को समझ लें कि वह कितना बड़ा 'जिहाद' कर रही हैं।

1- इस्लाम औरत को घर में क़ैद नहीं करना चाहता

कुछ लोगों का मानना है कि इस्लाम औरतों को समाजी ज़िम्मेदारियों से रोकता है और इस्लाम में औरतों के लिए हुक्म है कि वह घरों में बैठ कर सिर्फ़ घरेलू ज़िम्मेदारियां पूरी करें।

अगर यह बात सच होती तो ज़रूर अल्लाह तआला क़ुरआने करीम में औरतों को घर में बैठने पर ज़ोर देता और उनके घर से बाहर जाने को मना करता लेकिन क़ुरआने करीम की किसी भी आयत से यह नतीजा नहीं लिया जा सकता कि इस्लाम औरत को घर में ही रखना चाहता है। जबकि इस बात में कोई शक नहीं कि इस्लाम ही सिर्फ़ एक ऐसा दीन है जिस ने औरत के घर के कामों को इज़्ज़त दी है क्योंकि घर वह पहली ईंट है जो समाज और क़ौमों की तामीर में रखी जाती है। इस इमारत की हर ईंट रखने वाली एक औरत है। औरत ही समाज को बनाने वाली है लेकिन इसका मतलब बिल्कुल यह नहीं है कि औरत का रोल सिर्फ़ घर की चार दीवारी तक ही है।

क़ुरआने करीम की कुछ आयतों की स्टडी करने से समझ में आता है कि अल्लाह तआला इसकी तरफ़ साफ़ इशारा कर रहा है कि औरत और मर्द को समाज में एक साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी है और उनका आपस में आमना-सामना होना भी है। इसलिए क़ुरआने करीम ने दोनों को कुछ टीचिंग्स ऐसी दी हैं कि जब मर्द व औरत एक दूसरे के सामने आएं तो उन तालीमात का ज़रूर ख़्याल करें। उनमें से एक हुक्म पर्दे का भी है वरना चार दीवारी में क़ैद होने और पर्दे के वाजिब होने में कोई सिमिलॉरिटी नज़र नहीं आती।

2- समाज में औरत का रोल

घर से बाहर, फ़ैमिली के अंदर, स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी, बाज़ार वग़ैरा में हर जगह मर्द और औरत एक साथ नज़र आते हैं। इसी तरह तारीख़ में मर्द व औरत हर जगह एक दूसरे के साथ रहे हैं। यही वजह है कि अल्लाह तआला ने जिस तरह हर चीज़ के लिए क़ानून बनाए हैं उसी तरह समाज में औरत और मर्द के आपसी क़ानून भी बनाए हैं। अल्लाह तआला ने इन दोनों को हुक्म दिया है कि वह एक दूसरे पर निगाह डालने में एहतियात करें और अपनी इज़्ज़त व पाकीज़गी की हिफ़ाज़त करें क्योंकि सूरए नूर में है, "ऐ रसूल! ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी नज़रों को नीचा रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यही ज़्यादा पाकीज़ा बात है और बेशक अल्लाह उनके कारोबार से ख़ूब बाख़बर है। और मोमिना औरतों से भी कह दीजिए कि वह भी अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी पाकीज़गी की हिफ़ाज़त करें और अपने बनाओ सिंगार को किसी पर ज़ाहिर न करें, उसके अलावा जो ख़ुद बख़ुद ज़ाहिर है और अपने दोपट्टे को अपने गरेबान पर डाले रहें। और अपनी ज़ीनत को अपने शौहर, बाप-दादा, शौहर के बाप-दादा, अपनी औलाद और अपने शौहर की औलाद, अपने भाई और भाईयों की औलाद और बहनों की औलाद और अपनी औरतों और अपने गुलाम और कनीज़ों और ऐसे ताबे लोग जिनमें औरत की तरफ़ से कोई ख़्वाहिश नहीं रह गई है और वह बच्चे जो औरतों के पर्दे की बात से कोई सरोकार नहीं रखते हैं, इन सबके अलावा किसी पर ज़ाहिर न करें और ख़बरदार अपने पांव पटख़ कर न चलें क्योंकि जिस ज़ीनत को छुपाए हुए हैं उसका इज़हार हो जाए और ईमान वालो! तुम सब अल्लाह की बारगाह में तौबा करते रहो कि शायद इसी तरह तुम्हें कामयाबी और निजात मिल जाए।"

इस आयत में मर्दों और औरतों दोनों को हया व पाकीज़गी का दर्स दिया गया है दोनों के लिए एक सा हुक्म है कि वह नज़र नीची रखे और अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त करें लेकिन ख़्वातीन के लिए एक ख़ास अंदाज़ में अपने आपको छुपाने का हुक्म दिया गया है।

इस के साथ यह बात सामने रखना भी ज़रूरी है कि बनाओ सिंगार और ख़ुदनुमाई औरत की

फ़ितरत में शामिल है। अगर वह यह फ़ितरी तक़ाज़ा एक ग़लत तरीक़े से पूरा करती है यानी घर से बाहर निकलने से पहले आधा घंटा बनाओ सिंघार में गुज़ारती है और सजने-सँवरने की चीज़ों को घर से बाहर के लिए ख़ास समझती है, ऐसे समाज में फ़साद, बेहयाई और इसमत फ़रोशी के अलावा कुछ राएज नहीं हो सकता। इस आयत में महरम व नामहरम का फ़र्क़ बताया गया है कि औरत किन मर्दों के सामने अपना मेकअप कर सकती है और किन से मेकअप को छुपाना ज़रूरी है।

अगर औरत बन संवर कर घर से बाहर निकले तो ख़ुद बख़ुद उसकी झुकी हुई नज़रें धीरे-धीरे ऊंची हो जाती हैं। फिर वह अपने इस काम से ख़ुद मर्दों को नज़रें ऊंची करने की दावत भी देती है। बहुत से लोगों को कहता सुना है कि पर्दा आंख का होता है। बेशक पर्दा आंख का होता है इसीलिए अल्लाह तआला ने नज़रें नीची रखने का हुक्म दिया है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि औरत अपनी शर्म व हया को उतार फेंके और बेहयाई का मुज़ाहिरा करे। इसके उलट आंख के पर्दे का तक़ाज़ा यह है कि औरत अपने आप को नामहरम के सामने ज़रूरी पोशिश से ढांप ले ताकि आज़ाद और बा विक़ार शख़्सियत के साथ समाज में रहे। यही शर्मो हया का पैकर कहलाएगी। क्या सिर्फ़ नज़रें नीची कर के लेकिन मेकअप और बेपर्दगी के आलम में कोई शर्मो हया का मुज़ाहिरा कर सकता है? क्या ऐसी औरत हवस भरी निगाहों से बच सकती है?

3- पर्दा औरत की सेक्योरिटी है

किसी भी क़ानून ने आज तक यह नहीं कहा कि लोग अपनी मिलकियत में रखने वाली क़ीमती चीज़ों को बिला हिफ़ाज़त छोड़ दें बल्कि हर दौर में अहम और क़ीमती चीज़ों की हिफ़ाज़त ज़रूरी समझी गई है मगर यह कि किसी चीज़ की वैल्यू ही ख़त्म हो जाए। जैसे कि अगर आज हीरे की क़ीमत इतनी कम हो जाए कि वह रास्ते में आने वाले पत्थर व बजरी की तरह हो जाए तो क्या कोई उसे उठाना भी पसंद करेगा?

शायद आप कहें कि उसकी ख़ूबसूरती की वजह से लोग उसको उठा लें मगर याद रखिये अब उसकी वैल्यू नहीं रही। मगर आज जब हीरा क़ीमती है तो इंसान एक छोटे से टुकड़े की भी बहुत हिफ़ाज़त करता है और महफ़ूज़ मक़ाम पर रखता है जहां किसी चोर का हाथ न पहुंचे। यह इंसान की फ़ितरत है कि वह अपनी क़ीमती चीज़ों की हिफ़ाज़त करता है। अगर इन्सान फ़रिश्ता होता तो इस क़ानून की ज़रूरत नहीं पड़ती मगर इंसानों के अंदर बुराई और बग़ावत का जज़बा भी है जिसकी वजह से वह दूसरे इंसानों के माल पर नज़र रखता है। अब आप ख़ुद अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अगर हिफ़ाज़त का क़ानून न होता तो क्या कुछ हो सकता था।

अगर किसी ख़ज़ाने पर से सांप हट जाए और ख़ज़ाने का पता हर एक को चल जाए तो लालची और बदनियत लोग इस ख़ज़ाने को पाने के लिए क्या-क्या करेंगे? ऐसे ही अगर किसी अहम जगह से गार्ड हटा दिए जाएं जैसे किसी बैंक के बाहर कोई गार्ड हिफ़ाज़त करने वाला न हो और लॉकर खोल दिए जाएं तो वहां क्या हलचल मचेगी, ज़रा सोचें!

आज वेस्टर्न कल्चर ने औरत की असमत व पाकीज़गी को इन बेक़ीमत पत्थरों की तरह बना दिया है कि जिसकी कोई हिफ़ाज़त न हो और हर राहगीर इसको ठोकर मार कर जाने का हक़ रखता हो।

कोई भी चीज़ जब तक क़ीमती होती है जब तक उसकी हिफ़ाज़त की जाती है लेकिन अगर उसकी वैल्यू घट जाए या ख़त्म हो जाए तो फिर हिफ़ाज़त भी ज़रूरी नहीं होती।

क्या आज की दुनिया के कल्चर में बेपर्दगी के साथ शर्म, हया, असमत, पाकीज़गी जैसे अल्फ़ाज़ की कोई गुंजाईश बाक़ी है? यक़ीनी तौर पर हम इन अल्फ़ाज़ के मायने पर्दे के बग़ैर समझ ही नहीं सकते।

ख़ुदा का शुक्र है कि इस्लाम ने हम औरतों को पर्दे की शक्ल में एक मुहाफ़िज़ दिया है।

4- पर्दा पूरी सोसाइटी की पाकीज़गी का गारंटी है

इस्लाम के अक्सर एहकाम में तहारत व पाकीज़गी का लफ़्ज़ आपने बहुत सुना होगा। नमाज़ से पहले वज़ू इंसान को पाक व ताहिर करता है। क़ुरआने करीम के अल्फ़ाज़ को हाथ

अस्सलाम अलैकुम
एडीटर साहब
'मरयम' को इसके फ़र्स्ट एडीशन से ही हम पाबंदी से पढ़ते हैं। इसके ज़रिए हर माह हमारी दीनी मालूमात मे इज़ाफ़ा होता रहता है। डिशों वाला पेज भी बहुत अच्छा होता है। हमारा पूरा घर इस मैगज़ीन को पढ़ता है। ख़ुदा से दुआ है कि यह मैगज़ीन हमेशा हमारे घरों में रहे।

फ़रहत बानो
अमसिन, फैज़ाबाद

सलामुन अलैकुम
बहुत-बहुत शुक्रिया कि यहां Norway में 'मरयम' बहुत पाबंदी से मिल रही है। ज़माने के लिहाज़ से आप लोगों ने बड़ा अच्छा काम किया है। मेरी बेटी, बहु और बच्चों की माँ, सब के सब इसे बड़े शौक़ से पढ़ते हैं। अल्लाह आप सब की तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा करे!

शमशाद हुसैन रिज़वी
नार्वे

अस्सलामु अलैकुम
मैं मरयम मैगज़ीन को इसके पहले एडीशन से ही पाबंदी से पढ़ती हूँ और इसे अपने रिश्तेदारों में भी पहुँचाती हूँ ताकि वह लोग भी मैगज़ीन के रीडर बन सकें। मुझे मरयम मैगज़ीन का हर एडीशन बहुत ही अच्छा लगा। मैं चाहती हूँ कि ये मैगज़ीन हमेशा मेरे साथ रहे।

फ़रहीन फ़ातिमा
अमसिन, फैज़ाबाद

सलामुन अलैकुम
ख़ुदा का शुक्र है कि मरयम हर महीने पढ़ रही हूँ। इसके आर्टिकल्स बहुत ही अच्छे होते हैं ख़ासकर उन उलमा और आयतुल्लाह हज़रात के आर्टिकल्स जो हम सख़्त उर्दू होने की वजह से नहीं पढ़ पाते थे, अब उन्हें हम मरयम में आसान लेंगुएज में पढ़ लेते हैं। ख़ुदा हमेशा आप सब की तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा करता रहे।
एक और सब्सक्रिपशन फ़ार्म भेज रही हूँ, यह मेरी दोस्त का है। उन्होंने मेरे ही घर में मरयम को पढ़ा था।

अंदलीब ज़हरा
ओखला, दिल्ली

जनाब एडिटर साहब!
सलामुन अलैकुम
मैं 2 चैक भेज रहा हूँ। आप मेरी मैगज़ीन मेरे ऐड्रस पर भेजना शुरू कर दीजिए और सब्सक्रिप्शन की रक़म ख़त्म होने पर इन्फ़ार्म कर दीजिएगा।

जावेद ज़दी विलग्रामी
ग़ाज़ियाबाद

आपके लैटर्स

TO,
MARYAM MAGAZINE
234/22, Thwai Tola
Victoria Street, Chowk
LUCKNOW-226003-INDIA

लगाने के लिए वज़ू ज़रूरी है। इस्लाम ऐसा दीन है जो ज़ाहिरी सफ़ाई को भी पसंद करता है और बातिनी यानी रूहानी पाकीज़गी को भी ज़रूरी समझता है। इसीलिए पर्दे के मसले में भी क़ुरआन मर्दों को नज़रें नीची रखने की ताकीद के बाद फ़रमाता है, "इसमें तुम्हारे लिए पाकीज़गी है।"

औरत के लिए भी यही हुक्म आया है। इसलिए पर्दा करना औरत का "इज्तेमाई फ़रीज़ा" है। मौजूदा समाज में बेराह रवी और फ़साद इसी बेहयाई और बेपर्दगी की देन है। अगर औरत पर्दे में होकर घर से बाहर निकले तो वह उन सारे मर्दों को गुनाह से बचाती है जिनके सामने से उसका गुज़र होता है।

क्या वजह है कि बेदीन लोग भी ऐसी औरत का एहतेराम करते हैं जो पर्दे में होती हैं? क्योंकि वह हया व पाकीज़गी का मुज़ाहिरा कर रही होती हैं। इसके उलट वह औरत जो पर्दे में न हो उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह बेहयाई पर उतर आई है क्योंकि हर ग़लत और सही नज़र उसकी तरफ़ ज़रूर उठती है। वह चाहे या न चाहे मगर अंजाने में हज़ारों लोग उसे देखते हैं और उसकी वजह से गुनाहगार बनते हैं। उनके गुनाहों में वह बराबर की शरीक हैं। पर्दा मर्द व औरत दोनों की रूहानी पाकीज़गी की निशानी है। वही समाज तरक़्क़ी कर सकता है जहां रूहानी पाकीज़गी का माहौल हो।

कनीज़ाने ज़ैनब के नाम पैग़ाम

अगर हम तहरीके हुसैनी और पयामे ज़ैनब[अ०] को ज़िंदा रखना चाहते हैं तो पर्दे के पैग़ाम को ज़िंदा रखना बहुत ज़रूरी है। क्योंकि इमाम हुसैन[अ०] ने वाक़ेए करबला में दीन की ख़ातिर जो सबसे क़ीमती क़ुरबानी दी है, जिसकी क़ीमत सारे शहीदों के ख़ून से भी ज़्यादा है, वह जनाबे ज़ैनब[अ०] की चादर की क़ुरबानी थी। इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] से जब इस वाक़ेए के बारे में पूछा गया तो आपने तीन बार "अशशाम, अशशाम, अशशाम" कह कर अपनी अज़ीम क़ुरबानी को बयान फ़रमाया है।

ऐ अज़ादार बहनो! अपनी चादरों को उतार कर यज़ीदियत को हुसैनियत में दाख़िल न करो क्योंकि हक़ और बातिल कभी भी इक्टठा नहीं हो सकते।

पड़ोसी

■ मौहम्मद हसन नक़वी

किसी ने बताया कि कोई आदमी अपना मकान बेच रहा था। एक ख़रीदार उस के पास आया और मकान की क़ीमत पूछी तो उस ने कहा कि 20 लाख रूपए। ख़रीदार ने कहा कि यह आप क्या कह रहे हैं? यह मकान तो10 लाख से ज़्यादा का है ही नही। मकान मालिक ने कहा कि हां ! आप सही कह रहे हैं। हक़ीकत में इस मकान की क़ीमत10 लाख ही है मगर मैं इस के 20 लाख इसलिए मांग रहा हूं क्योंकि इस मकान का पड़ोस बहुत अच्छा है, 10 लाख मकान के और 10 लाख पड़ोस के।

देखने में तो यह बात मज़ाक़ लगती है मगर इस में यह सच्चाई ज़रूर है की अच्छा पड़ोस है बड़ी क़ीमती चीज़। पड़ोस चाहे अच्छा हो या बुरा हर हाल में पड़ोस है लेकिन आज की इस मॉडर्न कल्चर वाली दुनिया में पड़ोस और पड़सियों की अहमियत बहुत कम हो गई है। अक्सर तो ऐसा भी होता है के पड़ोस में कोई फंक्शन या प्रोग्राम हो जाता है मगर दुसरे पड़ोसी को ख़बर ही नहीं हो पाती । अब तो कुछ जगहों पर ऐसा भी नज़र आने लगा है कि पड़ोसी एक दुसरे को पहचानते तक नहीं हैं...

ये तो अब हर घर, हर मोहल्ले की दास्तान हो गई है। हर मोहल्ले और हर घर में क़रीब-क़रीब यही माहौल फैलता जा रहा है और पड़ोसियों से कुछ लोग अच्छा सुलूक नहीं रख पाते। जबकि इस्लाम में पड़ोसी के बहुत से हुक़ूक़ बयान हुए हैं। रसूल ने फ़रमाया है कि जिब्रील मुझे हमेशा पड़ोसी के बारे में अच्छे सुलूक का इतना ज़ोर देते थे कि मुझे लगने लगा था कि एक पड़ोसी को दूसरे से मीरास मिलने लगेगी। हज़रत अली ने फ़रमाया है, "पड़ोसी का हक़ ये है कि अगर सामना हो तो उसकी शख़सियत की हिफ़ाज़त करो और किसी भी हालत में उसकी मदद में कमी न करो।"

रसूले ख़ुदा[सं०] से रिवायत है कि आपने फ़रमाया कि पड़ोसी तीन तरह के होते हैं, एक वह जिसका एक हक़ है, दूसरे वह जिसके दो हक़ हैं और तीसरे वह जिसके तीन हक़ हैं।

वो पड़ोसी जिसके तीन हक़ हैं वो है जो मुसलमान भी हो और रिश्तेदार भी। उसका एक हक़ मुसलमान होने का, दूसरा रिश्तेदार होने का और तीसरा पड़ोसी होने का है। वो पड़ोसी जिसके दो हक़ हैं वो है जो सिर्फ़ मुसलमान हो। उसका एक हक़ मुसलमान होने का और दूसरा पड़ोसी होने का है।

वो पड़ोसी जिसका एक हक़ है वो है जो मुश्रिक हो। उसका सिर्फ़ एक हक़ है, पड़ोसी होने का।

पड़ोसी का हक़ होता है और इस्लाम में हक़ अदा करना ज़रूरी है। पड़ोसी का हक़ ये है कि उसको सलाम किया जाए, उसकी मदद की जाए और उसके राज़ों को जानने की कोशिश न की जाए। उसके बारे में दूसरों से सुनी बातों पर यक़ीन न किया जाए।

इसी तरह मुसीबत और मुश्किल के वक़्त में उसको अकेला नहीं छोड़ना चाहिए उसकी मुश्किल में उसके साथ रहना और ख़ुशी के मौक़े पर उसको मुबारकबाद देना चाहिए। अगर उसके वहाँ कोई मौत हो जाए तो उसको पुरसा देना चाहिए। पानी बहाने, कूड़ा-करकट फेंकने पर उससे लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहिए। अगर पड़ोसी तरक़्क़ी करे तो उससे हसद नहीं करना चाहिए और उसके साथ नेकी और अच्छाई से पेश आना चाहिए।

इमाम सादिक़[अ०] से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया है कि जिसका पड़ोसी भूखा हो और वह पेट भर कर सो जाए तो वो मुझ पर ईमान नहीं रखता। दूसरी रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया है कि जो शख़्स भरे पेट सो जाए जबकि उसका पड़ोसी भूखा हो तो वो मेरी लाई हुई शरीअत पर ईमान नहीं रखता है। जिस मोहल्ले के लोग रात को सो जाएं और उस मोहल्ले के लोगों में एक भी शख़्स भूखा हो तो ख़ुदा क़यामत में उनकी तरफ़ देखेगा भी नहीं।

रसूल[सं०] ने फ़रमाया है कि जिस शहर में एक शख़्स भी भूखा सो जाए तो क़यामत के दिन उस शहर के रहने वालों पर ख़ुदावन्दे आलम की तवज्जो नहीं होगी।

अच्छा पड़ोसी

इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है कि पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक ज़िंदगी बढ़ाता है और घरों को आबाद करता है।

रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया है कि पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव घरों को आबाद करता है और मौत में

देरी का सबब है।

पड़ोस की हद

पड़ोसी सिर्फ़ वह नहीं है जिसका घर हमारे घर से मिला हुआ हो बल्कि हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है कि पड़ोस हर तरफ़ से चालीस घर तक माना जाता है।

एक शख़्स रसूले खुदा[स०] के पासा आया और अपने पड़ोसी की शिकायत करने लगा। आपने एक शख़्स से कहा कि जाकर ऐलान कर दो कि चालीस घरों तक पड़ोस माना जाता है यानी पड़ोसी के हक़ का ख़्याल रखना चालीस घरों तक ज़रूरी है। इसका मतलब ये हुआ कि हर तरफ़ से चालीस घर पड़ोस माने जाते हैं और उसमें रहने वाले पड़ोसी हैं और उनसे पड़ोसी जैसा ही बर्ताव करना चाहिए।

पड़ोसी को तकलीफ़ पहुँचाना

रिवायत में आया है कि एक शख़्स रसूल[स०] की ख़िदमत में आया और उसने आप से अपने पड़ोसी की शिकायत की कि मेरा पड़ोसी मुझे तकलीफ़ पहुँचाता और मुझे गालियाँ देता है। उसने मुझे बहुत परेशान कर रखा है। हज़रत[स०] ने उससे कहा कि अगर तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारे बारे में खुदा के हुक्म पर अमल नहीं करता तो जाओ! तुम उसके बारे में ख़ुदा के हुक्म को मानो और उसके साथ अच्छा सुलूक करो।

जंगे तबूक के मौक़े पर आपने फ़रमाया कि जो पड़ोसी को तकलीफ़ पहुँचाता हो वह मेरे साथ न आए। आप से रिवायत है कि जो पड़ोसी को परेशान करेगा, ख़ुदा जन्नत की ख़ुशबू को उस पर हराम कर देगा और उसका ठिकाना जहन्नम होगा और वह बहुत बुरी जगह है।

रसूले खुदा[स०] से किसी ने कहा कि एक औरत है जो दिन में रोज़ा रखती है और रातों को नमाज़ें पढ़ती रहती है लेकिन अपने पड़ोसियों को परेशान करती है। आपने फ़रमाया कि उस औरत का ठिकाना आग है।

एक और जगह फ़रमाया है कि अगर पड़ोसी के कुत्ते को भी पत्थर मारोगे तो यह पड़ोसी को परेशान करने ही जैसा है।

पड़ोसी की अहमियत इस्लाम के नज़दीक इतनी ज़्यादा है कि पड़ोसी को परेशान करने वाले को ख़ुदा की इबादत भी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती।

गुनाह करने से पहले सोच तो लो

एक आदमी इब्राहीम बिन अदहम[रह०] के पास आया और उनसे कहा कि मैं अपने अंदर सुधार लाना चाहता हूँ, क्या करूँ?

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा कि अगर तुम पांच बातों को अपना लो और उन पर जम जाओ तो गुनाह तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता।

उसने कहा, बताइए वह पांच बातें क्या हैं?

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा कि जब तुम अल्लाह की नाफ़रमानी करना चाहो तो उसके रिज़्क़ में से मत खाओ।

उस आदमी ने कहा कि तो फिर मैं कहां से खाऊंगा जबकि ज़मीन की सारी चीज़ें उसी की पैदा की हुई हैं।

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "क्या यह अच्छी बात है कि तुम उसी के रिज़्क़ से खाओ और उसी की नाफ़रमानी करो?"

"बिल्कुल नहीं...दूसरी बात क्या है?"

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "जब तुम अल्लाह की नाफ़रमानी करना चाहो तो उसकी ज़मीन पर मत रहो।"

"यह तो बड़ा मुश्किल मामला है, फिर रहूंगा कहां... ?" उसने कहा।

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "क्या यह बात सही है कि तुम उसी का रिज़्क़ खाओ, उसी की ज़मीन पर रहो और उसी की नाफ़रमानी करो?"

"बिल्कुल नहीं...तीसरी बात बताइए!"

इब्राहीम ने कहा, "जब तुम अल्लाह की नाफ़रमानी करना चाहो तो ऐसी जगह चले जाओ जहां वह तुम्हें न देख रहा हो।"

"वह तो सबको देख रहा है, उससे कौन छुप सकता है?" उसने कहा।

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "क्या यह बात ठीक है कि तुम उसी का रिज़्क़ खाओ, उसी की ज़मीन पर रहो फिर उसी की नाफ़रमानी करो जो तुमको देख रहा है और तुम्हारे बारे में हर बात जानता है?"

"बिल्कुल नहीं! चौथी बात बताइए!"

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "जब मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने आए तो उससे कह देना कि थोड़ा सा वक़्त दे दो ताकि मैं दिल से तौबा कर लूं और नेक अमल की गठरी तैयार कर लूं।"

"फ़रिश्ता तो मेरी बात नहीं मानेगा...।"

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "जब तुम तौबा करने के लिए मौत को थोड़ी देर के लिए नहीं रोक सकते हो तो यह समझ लो कि मौत का फ़रिश्ता आएगा और एक सेकेंड के लिए भी नहीं रुक सकता तो फिर तुम निजात की उम्मीद क्यों रखते हो... ?"

"अच्छा! पांचवीं बात बताइए!"

इब्राहीम बिन अदहम ने कहा, "जब जहन्नम के दारोग़ा तुम्हें ले जाने के लिए आएं तो उनके साथ मत जाना।"

उसने कहा, "वह तो मेरी एक नहीं सुनेंगे।"

बिन अदहम ने कहा, "तो फिर निजात की उम्मीद क्यों रखते हो।"

उसने कहा, "इब्राहीम! मेरे लिए इतना ही काफ़ी है। मैं आज ही तौबा करता हूं और अल्लाह से अपने गुनाहों की मग़फ़िरत मांगता हूं।"

अरब और जाहिलियत का ज़माना

जाहिलियत के ज़माने यानी अरब में इस्लाम से पहले के ज़माने में अरब अपनी औरतों की ज़रा सी भी इज़्ज़त करना नहीं जानते थे, वह हर क़िस्म के इंडिवीजुअल और समाजी हक़ों से महरूम थीं। उस जाहिलियत के ज़माने के सिस्टम में औरत सिर्फ़ विरासत ही से महरूम नहीं रखी जाती थी बल्कि वह अपने बाप, शौहर या बेटे की जायदाद का ही एक हिस्सा होती थी यानी माल व जायदाद की तरह उसे भी विरासत में बांट दिया जाता था।

अरब भुखमरी या ग़रीबी के डर या इस ख़याल से कि लड़कियां उनके लिए ज़िल्लत की वजह बनेंगी, उन्हें पैदा होते ही दफ़न कर देते थे।

अपनी मासूम लड़कियों से उन्होंने जो बूरा बर्ताव अपनाया था उसको बुरा कहते हुए क़ुरआन मजीद फ़रमाता है, "**जब उनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह बस ख़ून का घूँट पीकर रह जाता है। लोगों से मुँह छिपाता फिरता है कि बुरी ख़बर के बाद क्या किसी को मुँह दिखाए। सोचता है कि ज़िल्लत के साथ बेटी को ले रहे या मिट्टी में दबा दे।**"

दूसरी आयत में भी क़ुरआन उन्हें इस ग़ैर इन्सानी काम के बदले ख़ुदा की बारगाह में जवाबदेह बताते हुए फ़रमाता है, "**और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस क़ुसूर में मारी गई।**"

सबसे ज़्यादा अफ़सोसनाक बात ये थी कि उनके बीच शादी-ब्याह की ऐसी रस्में फैली हुई थीं कि जिनकी कोई बुनियाद नहीं थी। वह अपनी बीवी को कोई हक़ नही देते थे। मेहर की रक़म अदा करने की ज़िम्मेदारी से बचने के लिए वह उन्हें आज़ाद कर देते। कभी वह अपनी बीवी पर बदचलन होने का इल्ज़ाम लगाते थे ताकि बहाना बनाकर मेहर की रक़म अदा करने से बच जाएं। उनका बाप अगर किसी बीवी को तलाक़ दे देता या ख़ुद मर जाता तो उसकी बीवियों से शादी कर लेना उनके लिए कोई बुराई नही थी।

उस ज़माने की ख़ुराफ़ात

जब इस्लाम दुनिया की तमाम क़ौमों के अक़ीदों में किसी न किसी हद तक ख़ुराफ़ात और जिन व परी वग़ैरा के क़िस्से शामिल थे। इस ज़माने के यूनानी और सासानी ईरानी क़ौमो का शुमार दुनिया की सबसे ज़्यादा माडर्न क़ौमो में होता था। उन्हीं के क़िस्सों और कहानियों का उन पर कंट्रेल था। इस सच्चाई से भी इंकार नही किया जा सकता

है कि जो समाज कल्चर और इल्म के एतेबार से जितना नीचा होगा, उसमें ख़ुराफ़ात का उतना ही ज़्यादा रिवाज होगा। अरब में ख़ुराफ़ात का आम रिवाज था। उनमें से बहुत से ख़ुराफ़ात हिस्ट्री में आज भी मौजूद हैं। यहाँ मिसाल के तौर पर इनमें से कुछ को पेश किया जा रहा है:-

ऐसी डोरियों को जिन्हें कमान बनाने के काम में लाया जाता था लोग ऊँटों और घोड़ों की गर्दनों व सरों पर लटका दिया करते थे। उनका ये अक़ीदा था कि ऐसे टोटकों से उनके जानवर भूत परेत के असर से बचे रहते हैं। और उन्हें किसी की बुरी नज़र भी नहीं लगती। इसी तरह जब दुश्मन हमला करने के बाद लूटमार करता है तो ऐसे टोटकों की वजह से उन जानवरों पर ज़रा भी आँच नहीं आती।

सूखा पड़ने पर बारिश लाने के लिए अरब के बूढ़े और जादूगर लोग 'सिलअ्' नामी पेड़ जिसका फल मज़े में कड़वा होता है और 'उश्र' नामी पेड़ जिसकी लकड़ी जल्दी जल जाती है, गायों की दुमों और पैरों में बाँध देते और उन्हें पहाड़ों की चोटियों तक हांक कर ले जाते। इसके बाद वह उन लकड़ियों में आग लगा देते, आगे के शोलों की ताब न लाकर उनकी गाएं इधर-उधर भागने लगतीं और सर मार-मार कर चिल्लाना शुरु कर देतीं। उनके ख़याल में इन गायों के चिल्लाने और सर मारने से पानी बरसने लगता था। उनका ये भी गुमान था कि जब जल देवता उन गायों को तड़पता हुआ देखें गे तो उनकी पाकीज़गी और पवित्रता को ध्यान में रखकर बादलों को जल्द बरसने के लिए भेज देंगे।

वह मुर्दों की क़ब्र के पास ऊँट क़ुर्बान करते और उसे एक गढ़े में डाल देते। उनका अक़ीदा था कि इस की वजह से क़ब्र में साने वाला इज़्ज़त व एहतेराम के साथ ऊँट पर सवार होकर क़यामत मे आएगा ।

इस्लाम से पहले अरब की एजुकेशनल व कल्चरल हालत

जाहिलियत के ज़माने के अरब जाहिल थे और इल्म की रौशनी से बिलकुल अंजान थे। उनकी इस जिहालत की वजह से ख़ुराफ़ात ने पूरे समाज पर अपना साया फैला रखा था। उनकी बड़ी आबादी में गिनती के लोग ही ऐसे थे जो लिखना और पढ़ना जानते थे।

जाहिलियत के ज़माने में अरब कल्चर की सबसे बड़ी निशनी हसब-नसब की पहचान, शाएरी और अच्छी तक़रीर करना जैसी चीजें थीं। ऐशो इश्रत की महफ़िल हो या जंग का मैदान वह जहाँ भी जाते उसमें शाएरी या स्पीच के ज़रिए अपने क़बीले की बड़ाई बयान करते थे।

इसमें शक नहीं कि इस्लाम से पहले अरबों में बहादुरी, मोहब्बत से बात करना, मेहमान नवाज़ी लोगों की मदद करना और आज़ाद रहने की तमन्ना जैसी अच्छाइयां भी मौजूद थीं मगर इन बुरी आदतों के मुक़ाबिले में जो उनकी रगों में उतर चुकी थीं, उनकी ये सारी अच्छाईयां कोई हैसियत नही रखती थीं।

उस ज़माने के अरब लालच और दुनियावी चीज़ों के दीवाने थे। वह हर चीज़ को माद्दी और दुनियावी फ़ायदे की नज़र से देखते थे। उनका समाजी कल्चर, बदकिरदारी और क़त्ल व ग़ारतगरी जैसे बुरे कामों की बुनियाद पर क़ायम था और यही हैवानी पस्स सिफ़ात उनकी आदत व फितरत का हिस्सा बन गयी थीं।

उस ज़माने में अरबों के बीच जो कल्चर फेला हुआ था उसमें अख़लाक़ को एक दूसरे अंदाज़ से देखा जाता था जैसे ग़ैरत, मुरव्वत और बहादुरी की तारीफ़ तो सब ही करते थे मगर बहादुर से उनकी मुराद जंग और क़त्ल करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त होती थी। ग़ैरत का मतलब उनके कल्चर में लड़कियों को ज़िंदा दफ़न कर देना था और अपने इस अमल से अपनी ग़ैरत की सबसे अच्छी मिसाल पेश करते थे। वादा वफ़ा करने से वह यह समझते थे कि उनके क़बीले के किसी आदमी ने जो भी वादा किया है वह चाहे ग़लत हो या सही वह उसकी हिमायत व मदद करें।

इस्लाम से पहले अरब की दीनी हालत

उस ज़माने में अरब में बुतपरस्ती का आम रिवाज था और लोग अलग-अलग अंदाज़ में अपने बुतों की पूजा करते थे। काबा बाक़ाएदा एक

बुतख़ाना बन चुका था जिसमें तीन सौ साठ से ज़्यादा बुत रखे हुए थे और कोई क़बीला ऐसा न था जिसका बुत वहाँ मौजूद न हो। हज के ज़माने में हर क़बीले के लोग अपने बुत के सामने खड़े होते, उसकी पूजा करते और उसको अच्छे नामों से पुकारते थे।

इस्लाम से पहले कुछ यहूदी और ईसाई भी अरब में आबाद थे। यहूदी ज़्यादातर नार्थ अरब के इलाक़ों जैसे, मदीना, वादिउल क़ुरा, तैमा, ख़ैबर और फ़िदक में रहा करते थे, जबकि ईसाई दक्षिणी इलाक़े यमन और नजरान जैसी जगहों पर बसे हुए थे। अरब में कुछ लोग ऐसे भी थे जो एक ख़ुदा को मानने वाले थे और वह ख़ुद को हज़रत इब्राहीम[अ०] के दीन पर चलने वाले समझते थे, हिस्ट्री लिखने वालों ने उन लोगों को "हुनफ़ा" के नाम से याद किया है।

जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] पर वही नाज़िल हुई, उस वक़्त अरब में मज़हब की जो हालत व कैफ़ियत थी उसे हज़रत अली[अ०] ने इस तरह बयान किया है, "उस ज़माने में लोग अलग-अलग मज़हबों के मानने वाले थे, उनके ख़यालात एक दूसरे के उल्टे और तरीक़े अलग-अलग थे। कुछ लोग ख़ुदा को मख़लूक़ जैसा मानते थे। उनका ख़याल था कि ख़ुदा के भी हाथ पैर हैं उसके रहने की भी जगह है और उसके बच्चे भी हैं। वह ख़ुदा के नाम में बदलाव भी करते थे। अपने बुतों को ख़ुदा के अलग-अलग नामों से याद करते थे। जैसे लात को अल्लाह, उज़्ज़ा को अज़ीज़ और मनात को मन्नान के नामों से याद करते थे।"

कुछ लोग ख़ुदा के अलावा दूसरी चीज़ों को भी पूजते थे, कुछ लोग ख़ुदा को नही मानते थे और नेचर को ही सब कुछ समझते थे। ख़ुदा ने पैग़म्बर के ज़रिए उन्हें गुमराही से निजात दिलाई और आपके वजूद की बरकत से उन्हें जिहालत के अंधेरे से बाहर निकाला।

जब हम बुत परस्तों के एक-एक अक़ीदे का जायज़ा लेते हैं तो इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि उन्हें अपने बुतों से ऐसी ज़बरदस्त अक़ीदत थी कि वह उनके ख़िलाफ़ ज़रा सी भी तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। इसीलिए वह हज़रत अबूतालिब के पास जाते और पैग़म्बर की शिकायत करते और कहते थे कि वह हमारे ख़ुदाओं को बुरा-भला कह रहे हैं और हमारे दीन और मज़हब में बुराईयाँ निकाल रहे हैं। वह ख़ुदा को मानते तो थे और अल्लाह के नाम से उसे याद करते थे मगर इसके साथ ही वह बुतों को मुक़द्दस और पूजा के लायक़ भी समझते थे, वह अच्छी तरह जानते थे कि ये बुत उनके माबूद तो हैं मगर उनके ख़ालिक़ नहीं, यही वजह थी कि जब रसूले ख़ुदा उनसे बातचीत करते थे तो ये साबित नहीं करते थे कि ख़ुदा उनका ख़ालिक़ है बल्कि सुबूत व दलीलों के साथ ये कहते थे कि ख़ुदा एक है और उनके बनाए हुए ख़ुदाओं की हैसियत व हक़ीक़त कुछ भी नहीं। क़ुरआन ने बहुत सी आयतों में उनके इस अक़ीदे की तरफ़ इशारा किया है यहाँ उसके कुछ नमूने पेश किए जाते हैं, **"इन लोगों से अगर तुम पूछो कि ज़मीन और आसमान को किसने पैदा किया है तो ये ख़ुद कहेंगे कि अल्लाह ने।"**

"हम तो इनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वह हमें अल्लाह तक पहुचा दें।"

इसके अलावा वह बुतपरस्ती के बारे मे कहते थे, "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारशी हैं।"

इस्लाम से पहले अरब की सियासी हालत

जाहिलियत के दौर में सियासी एतेबार से अरब किसी ख़ास हुकूमत के परचम तले नहीं थे। वह सिर्फ़ अपने ही क़बीले की ताक़त के बारे में सोचते थे। दूसरों के साथ उनका वही सुलूक था जो शिद्दत पसन्द वतन दोस्त और नस्ल परस्त लोगों का होता है।

जुग़राफ़ियाई और सियासी एतेबार से अरब ऐसी जगह पर है कि साउथ वाले हिस्से के अलावा उसका बाक़ी हिस्सा इस क़ाबिल न था कि ईरानी या रूमी जैसी ताक़तें उस पर हमला करतीं। उस ज़माने में फ़ातेहीन ने उसकी तरफ़ कम तवज्जो दी, क्योंकि इसके ख़ुश्क और तपते रेगिस्तान उनके लिए बिलकुल बेकार थे। इसके अलावा जाहिलियत के ज़माने के अरबों को क़ाबू में लाना और उनकी ज़िन्दगी को किसी सिस्टम का पाबन्द बनाना बहुत सख़्त और दुश्वार काम था।

क़बीलों की शुरूआत

अरब पैदाइशी तौर पर ज़ुल्म की चक्की में पिस-पिस कर जीने के आदी और अपनी बड़ाईयां करने वाले होते थे, इसीलिए उन्होंने जब बियाबानों में ज़िन्दगी की मुश्किलात का मुक़ाबला किया तो उनकी समझ में ये बात आई कि वह अकेले रहकर ज़िंदगी बसर नहीं कर सकते। इस वजह से उन्होंने फैसला किया कि जिन लोगों के साथ उनका ख़ूनी रिश्ता है या हसबो नसब में उनके शरीक हैं उन से मिलकर गिरोह बनाऐं, जिनका नाम उन्होंने "क़बीला" रखा। क़बीला ऐसा सिस्टमेटिक ग्रुप होता था जिसके ज़रिए जाहिलियत के ज़माने में अरब क़ौमियत की बुनियाद क़ायम होती थी। हर एतेबार से वह ख़ुद कफ़ील थे। दौरे जाहिलियत में अरबों की ताक़त क़बायली ताक़त पर डिपेंड करती थी। हर आदमी की अहमियत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जाता था कि क़बीले में उसकी क्या हैसियत है और क़बीले वालों में उसका किस हद तक असर व रुसूख़ है। यही वजह थी कि क़द्रो मंज़िलत के एतेबार से क़बीलों के सरदारों को सबसे ऊंचा मक़ाम व मरतबा हासिल था। इसके मुक़ाबले में कनीज़ों और ग़ुलामों को बहुत नीचा समझा जाता था।

दूसरे क़बीलों के मुक़ाबले में जिस क़बीले के लोगों की तादाद जितनी ज़्यादा होती वह क़बीला उतना ही ज़्यादा फ़ख़्र महसूस करता और ख़ुद को अहम समझता। अपने क़बीले की अहमियत और हैसियत को बुलंद करने और क़बीलों के लोगों की तादाद को ज़्यादा दिखाने के लिए से वह अपने क़बीले के मुर्दों की क़ब्रों को भी शामिल कर लेते थे। क़ुरआन ने इस की तरफ़ इशारा करते हुए कहा है, **"एक दूसरे पर फ़ख़्र जताने की फ़िक्र ने तुम्हें क़ब्रों तक पहुँचा दिया।"**

कामयाब शादी

शादी-शुदा के ख़र्च

शादी-ब्याह के बारे में अगर बात की जाएए तो एक मसला यह है कि आज कल शादी के ख़र्च रोज़ाना बढ़ते ही जा रहे हैं। माँ-बाप और सरपरस्तों की उम्मीदें बढ़ती जा रही हैं। रस्मों-रिवाज और तौर-तरीक़े इतने ज़्यादा मंहगे हो गए है कि जवान शादी से घबराते हैं। इन ग़लत रस्मों-रिवाज का ज़िम्मेदार कौन है? लड़कियों और उनके माँ-बाप को हज़रत रसूले ख़ुदा[सं०] के इस पैग़ाम ग़ौर करना चाहिए। रसूले ख़ुदा[सं०] का इरशाद है, ''अगर कोई तुम्हारे पास रिश्ता लेकर आए और तुम उसके अख़लाक़ और दीनदारी से राज़ी हो तो उससे शादी कर लो और अगर इन्कार करोगे तो ज़मीन में बहुत बड़ा फ़ित्ना व फ़साद पैदा हो जाएगा।''[1]

रसूले ख़ुदा[सं०] ने यह भी फ़रमाया, ''मेरी उम्मत की बेहतरीन औरतें वह हैं जो ख़ूबसूरत हों और जिनका मेहर कम हो।''[2]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया, ''वह औरत बरकत वाली है जो कम ख़र्च करती हो।''[3]

कुफ़ो

बेजा तवक़्क़ुआत की एक वजह यह है कि लोग ''कुफ़ो'' के सही मतलब को नहीं जानते हैं बहुत से लोग बहुत सारी चीज़ों को अपनी शान समझते हैं जिनकी हैसियत तकल्लुफ़ात से ज़्यादा नहीं है कहते हैं कि हम अपनी लड़की की शादी किस तरह करें अभी तक हमें कोई आइडियल लड़का नहीं मिल सका यानी मालदार हो, बड़ा ख़ानदान हो, ज़रूरत की हर चीज़ मौजूद हो।

कुछ लोग इस तरह के क़ायदों से परेशान हो चुके हैं और समाज को क़ुसूरवार ठहराते हैं लेकिन वह ख़ुद इस बात को नहीं समझते हैं कि इस तरह का समाज ख़ुद उन्हीं का बनाया हुआ है।

इस्लाम में कुफ़ो का मतलब माल-दौलत, मुक़ाम और ओहदे और पैसे की बराबरी नहीं है बल्कि अगर लड़का-लड़की दोनों दीनी और अख़लाक़ी लिहाज़ से बराबर हैं तो वह एक दूसरे के कुफ़ो हैं।

'जोयबर' यमामा के रहने वाले थे मदीने में रसूले ख़ुदा[सं०] की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। उनका क़द कम था। बहुत ग़रीब थे यहां तक कि उनके पास पहनने के कपड़े भी नहीं थे। पैग़म्बरे इस्लाम[सं०] उन्हें काफ़ी तसल्ली देते थे। रसूल[सं०] ने जोयबर को रात को मस्जिद में सोने का हुक्म दिया था।

जोयबर रात को मस्जिद में सोने लगे थे इस तरह धीरे-धीरे इन मुहाजिरों और ग़रीबों की तादाद बढ़ती गई जिनका ठिकाना बस मस्जिद थी।

पैग़म्बरे इस्लाम पर वही नाज़िल हुई कि इन लोगों को मस्जिद के बाहर जगह दी जाए। रसूले ख़ुदा[सं०] नें ख़ुदा के हुक्म पर अमल करते हुए हुक्म दिया कि बेघरों के लिए एक अलग जगह तय की जाए। बाद में इस जगह का नाम 'सुफ़्फ़ा' हो गया। जो लोग वहां रहते थे उनको सुफ़्फ़ा वाले कहा जाता था।

एक दिन पैग़म्बरे इस्लाम ने मोहब्बत भरी निगाह से जोयबर को देखा और शादी करने को कहा।

जोयबर ने कहा, ''मुझसे कौन सी लड़की शादी करने पर तैयार होगी? ख़ुदा की क़सम! मेरा न कोई बड़ा ख़ानदान है, न दौलत है और न ही मैं दिखने में अच्छा हूँ।''

पैग़म्बरे इस्लाम[सं०] ने फ़रमाया, ''इस्लाम ने जाहिलियत की रस्मों को ख़त्म कर दिया है वह लोग जो उस ज़माने में पस्त थे इस्लाम लाने के बाद बाइज़्ज़त हो गए वह लोग जो जाहिलियत में (दौलत, शोहरत, रूतबे की बिना पर) अपने को इज़्ज़तदार समझते थे आज वह एहकामे ख़ुदा की नाफ़रमानी करने की वजह से इस्लाम की निगाह में ज़लील हो गए हैं।''

जोयबर! सारे इंसान, गोरे, काले, अरब, अजम सब आदम की औलाद हैं और ख़ुदा ने आदम को मिट्टी से पैदा किया, क़यामत में वही

आदमी सबसे बेहतर है जो सबसे ज़्यादा ख़ुदा के एहकाम को मानने वाला और परहेज़गार हो। इसीलिए अगर कोई तुम से अच्छा और बहतर है तो सिर्फ़ और सिर्फ़ तक़्वा व परहेज़गारी की वजह से।

इसके बाद फ़रमाया, "ज़ियाद बिन बशीर अपने क़बीले में बहुत इज़्ज़तदार हैं उनके पास जाओ और कहो कि रसूले ख़ुदा[स०] ने मुझे आपके पास भेजा है ताकि आपसे आपकी बेटी "जुल्फ़ा" का रिश्ता माँगूं।" पैग़म्बरे इस्लाम[स०] के हुक्म के मुताबिक़ जोयबर ज़ियाद बिन बशीर के घर गए और पैग़म्बर[स०] का पैग़ाम पहुँचाया।

ज़ियाद ने ताअज्जुब से पूछा कि क्या पैग़म्बरे इस्लाम नें तुम्हें बस इसी काम से भेजा है? जोयबर ने कहा, "हाँ मैं रसूले ख़ुदा[स०] के बारे में झूठ नहीं बोलूँगा। ज़ियाद ने कहा, "हम अपनी लड़कियों की शादी सिर्फ़ उन्हीं से करते हैं जो हमारे बराबर हों और अन्सार से हों तुम जाओ। मैं ख़ुद रसूले ख़ुदा[स०] की ख़िदमत में जाकर माफ़ी माँग लूँगा।" जोयबर यह कहते हुए वापस चले आए कि आपका यह तरीक़ा कुरआन और पैग़म्बर की हदीस के मुताबिक़ नहीं है। ज़ियाद की बेटी जुल्फ़ा किनारे ख़ड़ी जोयबर की बातचीत सुन रही थी, उसने बाप को बुलाया और पूछा आपने जोयबर को क्या जबाब दिया?

ज़ियाद ने कहा, "जोयबर तुम्हारे रिश्ते के लिए आया था और कह रहा था कि रसूल[स०] के हुक्म के मुताबिक़ तुम्हारी शादी उसके साथ कर दूँ।" जुल्फ़ा ने कहा कि उसको जल्दी वापस बुलाइए, ख़ुदा की क़सम! वह पैग़म्बर का नाम लेकर झूठ नहीं बोल सकता। ज़ियाद ने जोयबर को वापस बुलाया और ख़ुद पैग़म्बर[स०] के पास आए और कहा कि मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान! आपकी जानिब से जोयबर इस तरह का पैग़ाम लाया था आप तो जानते ही हैं कि हम अपनी लड़कियों की शादी अपने बराबर वालों के अलावा किसी और से नहीं करते।

पैग़म्बर[स०] ने कहा, "जोयबर मोमिन है और मोमिन मर्द, मोमिना औरत का कुफ़ो है और मुसलमान मर्द मुसलमान औरत का कुफ़ो है। जोयबर को अपना दामाद बना लो और उसको अपने से दूर करने के लिए बहाना मत ढूँढ़ो।"

ज़ियाद वापस हुए जो बातें रसूले ख़ुदा[स०] से हुई थीं जुल्फ़ा से बता दीं। जुल्फ़ा ने बहुत ही ईमान व इत्मिनान से अपने बाप से कहा, "रसूल[स०] के हुक्म पर अमल कीजिए अगर आप नाफ़रमानी करेंगे तो काफ़िर हो जाएंगे।"

ज़ियाद ने देखा कि उसकी बेटी इस शादी पर राज़ी है। जोयबर को अपने रिश्तेदारों के बीच बुलाया और जुल्फ़ा से शादी कर दी। क्योंकि जोयबर के पास घर नहीं था इसलिए एक घर भी दिया ताकि जोयबर और जुल्फ़ा आसानी के साथ अपनी ज़िन्दगी शुरु कर सकें।[1]

यह बात भी क़ाबिले तवज्जो है वह लोग जो बहुत लम्बे टाइम तक पढ़ाई करने के रास्ते में शादी को रुकावट ख़्याल करते हैं वह धोखे में हैं क्योंकि शादी से पढ़ाई पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता बल्कि शादी के बाद सुकून मिलता है कि जिसकी वजह से और ज़्यादा शौक़ से पढ़ाई की जा सकती है। जो लोग यह कहते हैं कि जब तक जवान डिग्री हासिल न कर ले, उसकी माली हैसियत अच्छी न हो जाए उस वक़्त तक शादी नहीं करना चाहिए। यह नज़रिया बिल्कुल बे बुनियाद और ग़लत है। क्योंकि यह बात बताई जा चुकी है कि माली परेशानी ज़्यादा तर ग़लत रस्मो रिवाज की वजह से है। अगर लोग इस्लामी क़ानूनों पर अमल करने लगें और अपनी उम्मीदें कम कर दें, ख़ुराफ़ात और अन्धी तक़्लीद को छोड़ दें तो वह शादी जो एक हव्वा बनी हुई है और ख़तरनाक नज़र आती है बहुत ही आसान हो जाएगी।

1-वसाएल, 14/51, 2-वसाएल, 14/78, 3-वसाएल, 14/78, फ़रोग़ काफ़ी, 5/341

सच्ची कहानियाँ

हाजत रवाई

सफ़वान हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास में बैठे हुए थे कि अचानक मक्के का रहने वाला एक शख़्स इमाम[अ०] के पास आया और अपनी मुश्किल के बारे में इमाम[अ०] को बताने लगा। इमाम ने सफ़वान को हुक्म दिया कि फ़ौरन जाओ और इस मोमिन भाई के इस काम में मदद करो।

सफ़वान ख़ुदा की तौफ़ीक़ से काम को सही और मुश्किल को आसान कर के जब इमाम के पास वापस आए तो इमाम[अ०] ने पूछा, "क्या हुआ ?"

"ख़ुदा ने मसले को हल कर दिया"। सफ़वान ने कहा।

इमाम ने कहा, "ध्यान रहे! यही काम जो ज़ाहिर तौर पर छोटा सा था कि तुमने एक आदमी की ज़रूरत को पूरा कर दिया और अपना थोड़ा सा वक़्त इसमें लगा दिया, इसका सवाब ख़ाना-ए-काबा के सात तवाफ़ से भी ज़्यादा है"।

इस के बाद इमाम[अ०] ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "एक शख़्स किसी मुश्किल में फंस गया था। इमाम हसन[अ०] के पास आया और उनसे से मदद चाही। इमाम[अ०] देर किए बग़ैर उसके साथ चल दिए। रास्ते में इमाम हुसैन[अ०] को देखा जो नमाज़ पढ़ रहे थे। इमाम हसन[अ०] ने उस आदमी से कहा, "तुम हुसैन[अ०] के पास क्यों नही गए ?"

उस ने कहा, "पहले मैं यही चाह रहा था के इमाम हुसैन[अ०] के पास जाउं और उन से मदद मांगूं लेकिन जब लोगों ने कहा कि वह ऐतिकाफ़ में हैं तो उनके पास नही गया ।"

इमाम हसन[अ०] ने कहा, " लेकिन अगर हुसैन[अ०] को तुम्हारी ज़रूरत पूरी करने का मौक़ा मिलता तो वह एक महीने के ऐतिकाफ़ से ज़्यादा अफ़ज़ल होता।"

(उसूले काफ़ी/जि-3, पेज-198)

कहानी

नन्हे नमाज़ी

"जुहैर! चलो नमाज़ का वक़्त हो गया है" अहमद ने जल्दी से अपने दोस्त जुहैर से कहा।

"नहीं अहमद! नहीं मैं आज नमाज़ पढ़ने नहीं जाऊंगा।" जुहैर ने जवाब दिया।

"क्या? तुम नमाज़ पढ़ने नहीं जाओगे?" जुहैर का जवाब सुनकर अहमद भौंचक्का रह गया था क्योंकि जुहैर हमेशा जमाअत से ही नमाज़ पढ़ता था।

"हां...!" जुहैर ने जवाब दिया।

"मगर क्यों...?" अहमद ने ज़रा ज़ोर देकर कहा।

"ओ हो अहमद! मैंने यह कब कहा है कि मैं नमाज़ ही नहीं पढ़ूंगा।" जुहैर ने झुंझलाकर कहा।

"फ़िर...? अहमद हैरानी से बोला।

"बस! आज मैं नमाज़ पढ़ने मस्जिद नहीं जाऊंगा बल्कि घर ही पर पढ़ लूंगा।" जुहैर ने दो टूक लहजे में कहा।

"लेकिन इसकी वजह क्या है?" क्या तुम्हें नहीं पता कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का कितना सवाब है?" अहमद अभी तक जुहैर की ज़िद की वजह नहीं समझ सका था।

"मुझे पता है अहमद लेकिन वह सुलतान साहब हैं ना, मैं बस उनकी वजह से जाना नहीं चाहता हूँ। मैं जब भी नमाज़ पढ़ने ख़ड़ा होता हूं वह मुझे सफ़ से निकाल कर सबसे पीछे ख़ड़ा कर देते हैं। वह समझते हैं कि हम बहुत छोटे हैं या हमें नमाज़ पढ़ना आती ही नहीं है या फिर हम ग़लत-सलत पढ़ेंगे?" जुहैर ने गुस्से की वजह बताई।

"हां! कह तो तुम ठीक ही रहे हो लेकिन हम सुलतान साहब की वजह से अपना नमाज़ का सवाब तो नहीं ख़ो सकते...ऐसा करते हैं कि हम उन्हें बता देते हैं कि हमें नमाज़ पढ़नी आती है।" अहमद ने मशवरा दिया।

"हां! यह बात ठीक है। हमें उनकी वजह से अपना सवाब नहीं छोड़ना चाहिए।" जुहैर ने उसकी बात मानते हुए कहा और दोनों मस्जिद की तरफ़ चल पड़े। लेकिन वही हुआ जिसका उन दोनों को डर था। सुलतान साहब ने उन दोनों को हटाया और ख़ुद ख़ड़े हो गए।

नमाज़ के बाद मस्जिद से निकलते हुए जुहैर ने कहा, "देखा! उन्होंने फिर वही किया। एक तो ख़ुद देर से आते हैं और फिर पहली सफ़ में खड़ा होना चाहते हैं। अगर पहली सफ़ में खड़ा होना है तो पहले क्यों नहीं आ जाते।"

"छोड़ो यार! इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है। बड़े पहली सफ़ में खड़े होते हैं और छोटे दूसरी सफ़ में।" अहमद ने उसको ठंडा करना चाहा। "अब गुस्सा छोड़ो और चलो क्रिकेट खेलने चलते हैं।" अहमद के कहने पर वह सब कुछ भूल-भाल कर क्रिकेट खेलने में लग गए।

कुछ दिनों बाद की बात है कि दोनों मग़रिब की नमाज़ पढ़ने मस्जिद गए। अभी नमाज़ का वक़्त नहीं हुआ था इसलिए मस्जिद में नमाज़ी बहुत कम थे। दोनों वुज़ूख़ाने की तरफ़ आ गए। देखा कि सुलतान साहब वुज़ू कर रहे हैं।

"अहमद देखो तो सुलतान साहब कैसे वुज़ू कर रहे हैं।" जुहैर ने अहमद को टहोका दिया।

अहमद ने ग़ौर से देखा तो पता चला कि सुलतान साहब बिल्कुल ग़लत वुज़ू कर रहे थे।

"यार! यह तो बिल्कुल ग़लत वुज़ू कर रहे हैं। अब क्या करें? उन्हें कैसे बताएं?" अहमद ने सोचते हुए कहा।

"अगर उन्हें डायरेक्टली बताते हैं तो वह गुस्सा करेंगे।" जुहैर ने चुपके से कहा।

"तुम्हें वह वाक़ेआ याद है जो मौलाना साहब ने इमाम हसन[अ] की विलादत पर सुनाया था।" अहमद ने जुहैर से कहा।

"कौन सा वाक़ेआ...?" जुहैर समझ नहीं पाया था।

"वही इमाम हसन[अ] और इमाम हुसैन[अ] वाला। जब वह दोनों छोटे थे और उन्होंने देखा कि एक आदमी ग़लत वुज़ू कर रहा है तो पता है उन्होंने क्या किया?"

"हां! मुझे याद आ गया। उन्होंने उस आदमी के पास जाकर कहा था कि हम दोनों वुज़ू करते हैं आप बताइए कि किसका वुज़ू ज़्यादा सही है। इस तरह उस आदमी को पता चल गया था कि उसका वुज़ू ग़लत है।" जुहैर ने पूरा क़िस्सा सुना दिया।

"हां वही। चलो! अब हम दोनों भी सुलतान साहब के साथ ऐसा ही करते हैं। इस तरह उन्हें गुस्सा भी नहीं आएगा।" अहमद ने जुहैर को तरकीब बताई।

"चलो! फिर देर किस बात की...?" जुहैर ने फ़ौरन कहा।

क़रीब पहुंच कर अहमद ने सुलतान साहब से कहा, "सुलतान अंकल! हम दोनों में वुज़ू का मुक़ाबला है। प्लीज़! आप बताइएगा कि किस का वुज़ू सही है।" सुलतान साहब पहले तो बहुत हैरान हुए लेकिन फिर दिलचस्पी से दोनों को देखने लगे। जब दोनों वुज़ू कर चुके तब सुलतान साहब बोले, "प्यारे बच्चो! तुम दोनों ही ने सही वुज़ू किया है। वुज़ू तो अब तक मैं ग़लत कर रहा था। ख़ुदा मुझे माफ़ करे! तुम दोनों मुझे ख़ासे ज़हीन बच्चे लगते हो। मैं समझता था कि दूसरे बच्चों की तरह शरारती बच्चे हो मगर आज पता चला कि सब बच्चे एक जैसे नहीं होते और शायद तुम दोनों वही बच्चे हो जिनको मैं अगली सफ़ से हटा दिया करता था क्योंकि मैं समझता था कि तुम्हें सही नमाज़ पढ़ना नहीं आती होगी लेकिन अब मुझे पता चल गया है कि जब तुम्हारा वुज़ू सही है नमाज़ भी सही होगी। मैं आगे से तुम्हें नहीं हटाया करूंगा। तुम उम्र में छोटे हो तो क्या हुआ अख़्लाक़ और दीन में मुझसे बड़े हो।"

सुलतान साहब ने दोनों को प्यार किया और सब एक साथ जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए सफ़ों की तरफ़ बढ़ गए।

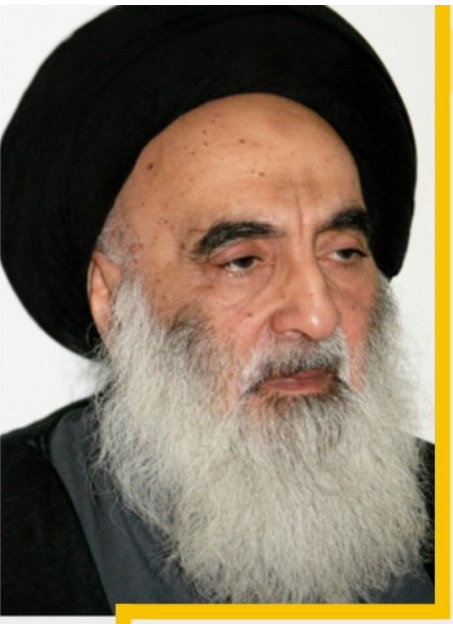

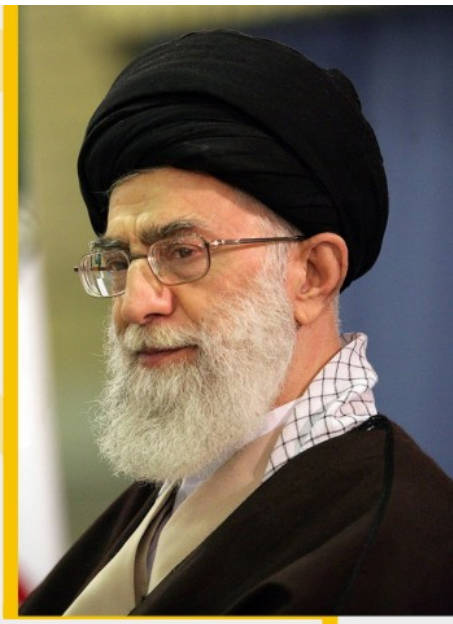

शरई मसाएल

वुज़ू (2)

सवालः वुज़ू में जिस्म के किन किन हिस्सों का धोना वाजिब है?

जवाबः वुज़ू में चेहरे को लम्बाई में बालों के उगने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में उतना धोना वाजिब है जितना बीच की उंगली और अंगूठे के बीच आ जाए। चेहरे के बाद सीधे हाथ को कोहनी से उंगली के सिरे तक और फिर इसी तरह उलटे हाथ को धोना वाजिब है। फिर सर का मसह और दोनों पैरों का मसह वाजिब है।

सवालः क्या चेहरे और हाथों को नीचे से ऊपर की तरफ़ धोया जा सकता है?

जवाबः चेहरे और दोनों हाथों को ऊपर से नीचे की तरफ़ धोना ज़रूरी है। अगर नीचे से ऊपर की तरफ धोया जाए तो वुज़ू बातिल है।

सवालः वुज़ू में चेहरा या दोनों हाथों को कितनी बार धोया जा सकता है?

जवाबः चेहरा और दोनों हाथों का एक बार धोना वाजिब है। दुसरी बार मुस्तहब और तीसरी बार या उससे ज़्यादा हराम है लेकिन यहां धोने वाले की नियत या इरादा बहुत ख़ास है यानी अगर पहली बार धोने के इरादे से कई बार चेहरे या हाथों पर पानी डालें तो कोई हरज नहीं है।

सवालः अगर दोनों हाथ धोने के बाद मसह करने से पहले हाथ धोले या उसके हाथ सूख जाएं तो ऐसी सूरत में क्या हुक्म है?

जवाबः दोनों हाथ धोने के बाद हथेली पर बाक़ी रहने वाली तरी से मसह करना चाहिए क्योंकि अगर हाथ धोया जाएगा तो दूसरा पानी शामिल हो जाएगा जिसकी वजह से मसह नहीं होगा और अगर हथेली का पानी सूख जाए तो दोनों हाथों से तरी लेकर मसह किया जा सकता है।

सवालः सर का मसह किस तरह किया जाएगा?

जवाबः सर का अगला एक चौथाई हिस्सा वह जगह है जिस पर सर का मसह किया जाता है। इस जगह पर अगर एक उंगली से भी ऊपर से नीचे की तरफ़ मसह कर लिया जाए तो काफ़ी है।

सवालः अगर सर के बाल बहुत बड़े हों जैसे औरतों के बाल तो उन पर मसह किस तरह किया जाएगा?

जवाबः अगर बाल इतने बड़े हों तो बालों की जड़ में या मांग निकाल कर सर की खाल पर मसह करना चाहिए। अगर बालों पर मसह किया जाएगा तो वुज़ू सही नहीं होगा।

सवालः पैरों पर मसह किस तरह किया जाएगा?

जवाबः पैरों का मसह उंगली के सिरे से पैर की उभरी हुई जगह यानी गटटे तक किया जाता है। दाएं पैर का मसह दाएं हाथ से और बाएं पैर का बाएं हाथ से किया जाएगा।

सवालः क्या सर और पैर के मसेह के लिए हाथ खींचने के बजाए सर या पैर को हिलाया जा सकता है?

जवाबः सर और पैर के मसेह के लिए ज़रूरी है कि सर और पैर पर हाथ को खींचा जाए। अगर हाथ के नीचे सर या पैर को खींचा जाएगा तो वुज़ू बातिल हो जाएगा।

सवालः अगर मसेह से पहले पैर को धोलें तो क्या गीले पैर पर मसह किया जा सकता है?

जवाबः जहां मसह किया जा रहा है उस हिस्से का खुश्क होना ज़रूरी है लेकिन अगर पैर सिर्फ़ नम हो या इतना कम गीला हो कि मसह करने के बाद हाथ से पैर में लगने वाली तरी दिखाई दे और ये कहा जा सके कि ये तरी हाथ की है तो मसह किया जा सकता है।

सवालः मोज़े पर मसह हो सकता है?

जवाबः नहीं।

सवालः क्या ऐसे पानी से वुज़ू किया जा सकता है जिसमें कुछ मिला हुआ हो?

जवाबः वुज़ू के लिए ख़ालिस पानी होना ज़रूरी है जिसे फ़िक़्ह में मुतलक़ पानी कहते हैं। अगर पानी में कोई चीज़ इतनी ज़्यादा मिल जाए कि उसको पानी न कहा जा सके तो उससे वुज़ू नही किया जा सकता जैसे अगर पानी में दूध मिल जाए कि देखने वाले उसे पानी न कहें।

सवालः क्या वुज़ू के लिए ज़रूरी है कि जिस पानी से किया जाए उसके मालिक के बारे में पता हो कि वह वुज़ू करने से राज़ी है?

जवाबः अगर किसी ऐसी जगह वुज़ू किया जाए जिसके बारे में पता न हो कि उसका मालिक वुज़ू की इजाज़त देगा या नहीं तो ऐसे पानी से वुज़ू करना सही नहीं है।

सवालः क्या वुज़ू करते वक़्त किसी दूसरे से मदद ली जा सकती है?

जवाबः पानी मंगवाने, गर्म करवाने या इस तरह के कामों में मदद ली जा सकती है लेकिन हाथों या चेहरे पर पानी ख़ुद डालना ज़रूरी है, दूसरे के डालने से वुज़ू सही नहीं होगा।

सवालः अगर किसी जगह पर पेन की इंक या रंग लगा हो तो वुज़ू किया जा सकता है?

जवाबः अगर सिर्फ धब्बा हो और उसका ख़ुद का कोई वुजूद न हो जिसकी वजह से खाल तक पानी पहुंचने में कोई रूकावट न हो तो कोई हरज नहीं है लेकिन अगर वह रंग खाल के ऊपर जमा हुआ हो और पानी को खाल तक न पहुंचने दे तो उसको हटाना ज़रूरी है।

इमामे ज़माना की मारेफ़त

■ यासमीन अख़्तर, कुम, ईरान

हर मुसलमान की यह ख़्वाहिश होती है कि उसका ख़ात्मा इस्लाम पर हो क्योंकि खुदा जन्नत और जहन्नम का फ़ैसला इंसान के आख़िरी वक़्त के हिसाब से करता है, अगर मरने वाला इंसान आख़िरी वक़्त में इस्लाम पर मरा तो उसे जन्नत की नेमतों से नवाज़ा जाएगा और अगर जाहिलियत की मौत मरा तो उसे बग़ैर हिसाबो किताब के जहन्नम की आग में झोंक दिया जाएगा।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने जाहिलियत की मौत मरने से बचने के लिए अपनी उम्मत को बेहतरीन नुस्ख़ा बताते हुए कहा है, "जो अपने ज़माने के इमाम की मारेफ़त के बग़ैर मरेगा उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी।"

इस हदीस से यह पता चलता है कि हर ज़माने में एक इमाम का होना ज़रूरी है जो लोगों को दीन की हिदायत करे और उन्हें गुमराही से बचा सके और फिर इसी इमाम की पहचान को *ला इलाहा इल्लललाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह* कहने वाले हर मुसलमान पर वाजिब बताया है। यही वजह है कि इस मारेफ़त से जो भी अपने दिल को रौशन करेगा उसे खुदा की राह के मुजाहिद से कम मुक़ाम नहीं दिया जाएग।

ऐसी मारेफ़त जो इस मुश्किल ज़माने में इंसान को गुमराहियों से बचाए रख सकती है वह इमामे ज़माना[अ०] की सच्ची और हक़ीक़ी पहचान है। इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] फरमाते हैं, "बेशक हमारे क़ायम के लिए दो ग़ैबतें हैं। उनमें से एक दूसरी से लम्बी है। दूसरी ग़ैबत इतनी लम्बी होगी कि वह लोग जो उनकी इमामत पर भरोसा रखते होंगे उनमें से ज़्यादातर लोग अपने इस अक़ीदे से फिर जाएंगे। उनकी इमामत के अक़ीदे पर वही बाक़ी रहेगा जिसका यक़ीन पक्का और मारेफ़त सही होगी ...।" [1]

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] अपने बेटे इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से फरमाते हैं, "ऐ बेटा! शियों के दर्जों और मुक़ाम का अंदाज़ा उनके हदीसें नक़ल करने और हदीस के समझने से लगाओ क्योंकि मारेफ़त का मतलब होता है हदीस को जानना और समझना। इन्हीं हदीसों के समझने से मोमिन ईमान के सबसे बुलंद मुक़ाम तक पहुंचता है। मैंने हज़रत अली[अ०] की लिखी हुई

किताब में देखा है कि बेशक हर शख़्स की क़द्रो मज़िलत उसकी मारेफ़त है। यानी जितनी मारेफ़त ज़्यादा होगी उतना ही इंसान का मुक़ाम भी हमारे यहां बुलंद होगा।'' [2]

मोमिन के मुक़ाम व दर्जे को पहचानने की कसौटी उसका हदीसों का समझना है। जो भी जितना ज़्यादा हदीसों को समझता होगा उतना ही ईमान के बुलंद दर्जे पर होगा। इसी तरह अगर कोई अपनी दीनी मारेफ़त में अहलेबैत[अ॰] की रिवायतों से सरोकार न रखता हो बल्कि मारेफ़त को उनकी बयान की गई हदीसों के अलावा किसी और रास्ते से हासिल करता हो तो उसे अपनी इस मारेफ़त के सही होने की उम्मीद नही रखनी चाहिए क्योंकि हादीस में आया है, ''जो भी इस घर के अलावा किसी और दरवाज़े से लिया जाएगा तो वह बातिल होगा।'' क्योंकि इल्म के शहर के दरवाज़े यह हैं जैसा कि रसूले ख़ुदा[स॰] ने अपनी मशहूर हदीस में फ़रमाया है, ''मैं इल्म का शहर हूं और अली उसका दरवाज़ा हैं, जो कोई इल्म हासिल करना चाहता है उसे चाहिए कि दरवाज़े से अंदर आए।''

इमामे ज़माना[अज॰] फ़रमाते हैं, ''हमारे चाहने वालों में से किसी को यह हक़ नही है कि वह उन रिवायतों में शक करे जो हमारे भरोसे के लोगों ने हमसे नक़्ल की हैं।''

यह हदीस इमाम[अ॰] की तौक़ीअ का एक हिस्सा है जिसे उलमा ने अपनी फ़िक़्ही किताबों में लिखा है।

इस हदीस का मतलब यह है कि किसी शख़्स को यह हक़ नही है कि वह भरोसे वाले लोगों की नक़्ल की हुई अहलेबैत[अ॰] की हदीसों में शक करे। हां! मगर इस सूरत में कि जब इस रिवायत का कुरआन व सुन्नत या अक़्ल के ख़िलाफ़ होना यक़ीनी तौर पर साबित हो जाए तो उस रिवायत में शक किया जा सकता है लेकिन इसका फ़ैसला उलमा ही कर सकते हैं।

इसलिए इमामे ज़माना[अज॰] की मारेफ़त उस वक़्त तक हो ही नही सकती जब तक उनकी बयान की हुई हदीसों पर अमल न कर लिया जाए और वह सही हदीसें जो इंसान को उसके इमाम और पालने वाले से क़रीब कर सकती हैं वह पैग़म्बर[स॰] के बाद हज़रत अली[अ॰] और उनकी औलाद के ज़रिए बयान की हुई हदीसें हैं। यही वह हदीसें हैं जिनसे इंसान इमाम की सच्ची मारेफ़त तक पहुंच सकता है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फरमाते हैं, ''जब तक सही मारेफ़त नहीं होगी तब तक तुम नेक और मुत्तक़ी इंसान नही बन सकते और जब तक तसदीक़ नही करोगे तब तक मारेफ़त हासिल नही कर सकते और जब तक अपने इमाम के सामने पूरी तरह तसलीम नही हो जाते तब तक तसदीक़ हासिल नही कर सकते।''

इस वजह से जब तक इंसान अपने आपको इमामे ज़माना के हवाले न कर दे उस वक़्त तक इमाम की मारेफ़त हासिल नही कर सकता क्योंकि यह चार चीज़ें तसलीम, तसदीक़, नेक अमल और मारेफ़त साथ-साथ हैं जब तक यह सारी की सारी एक जगह पर जमा नही हो जातीं तब तक इंसान ईमान की हक़ीक़त तक नही पहुंच सकता और जब तक हक़ीक़ी ईमान नहीं होगा तब तक इमामे ज़माना[अज॰] की मारेफ़त नही मिल सकती।

हक़ीक़ी मारेफ़त की बुनियाद सिर्फ और सिर्फ पैग़म्बर[स॰] और उनके अहलेबैत[अ॰] के नूरानी अक़्वाल हैं कि अगर यह अक़्वाल न होते तो इंसान मारेफ़त की रौशनी से अपना दिल रौशन न कर पाता। इसलिए जो इंसान सही मारेफ़त हासिल करना चाहता है उसे चाहिए कि आज ही से यह इरादा कर ले कि अपना अक़ीदा अपने नबी[स॰] और उनके अहलेबैत[अ॰] के अलावा किसी और से नहीं लेगा और इस वक़्त दुनिया में फैले हुए इंसानी नज़रियों के आगे सर नहीं झुकाएगा। अगर इंसान यह काम कर ले तो यक़ीनी तौर पर अहलेबैत[अ॰] के चाहने वालों की मज़िल पर पहुंच सकता है। जैसा कि हज़रत अली[अ॰] ने अपने वफादार सहाबी कुमैल बिन ज़ियाद से फरमाया था, ''ऐ कुमैल! हमारे अलावा किसी और से मत लो ताकि हममे से हो सको।'' [3]

1-कमाल उद्दीन, बाब 31, जि०८, 2-बहारुल अनवार, जि० 2, पे० 184, 3-वसाएलुश शिया, जि० 18, स० 16

آج ہی ممبر بنئے
زر سالانہ
Rs.150

دو ماہی
مؤمّل
لکھنؤ

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

email: muammal@al-muammal.org

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION

546/203 Near Era's Lucknow Medical College Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India) Ph.: 0522-2405646, 9839459672

किचन से इलाज

ग़िज़ा और सेहत

■ डा. नसरीन शमाएल

अल्लाह न करे अगर कभी आपकी तबीयत ख़राब हो तो आप अपने रेफ़रीजेरेटर, किचन या मसालों के किसी डिब्बे से कोई हल निकाल सकती हैं। बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिनसे पता चलता है कि बहुत सी ग़िज़ाओं, सब्ज़ियों, उनकी जड़ों और घरेलू इस्तेमाल की दूसरी चीज़ों से थोड़ी-बहुत ख़राब तबियत का इलाज किया जा सकता है। हक़ीक़त में आज-कल के बहुत से डाक्टर्ज़ जो एंटी बायोटिक की ज़्यादा ख़ुराक के इस्तेमाल को और छोटी-मोटी बीमारियों का ज़रूरत से ज़्यादा इलाज का रुजहान रखते हैं, घरेलू चुटकुलों को इलाज के लिए इस्तेमाल करते हैं।

हम आगे कुछ घरेलू इलाज के बारे में बता रहे हैं जो डाक्टरों के बताए हुए हैं लेकिन यह बात ज़ेहन में रखें कि घरेलू चीज़ें और पौधे भी दूसरी दवाओं की तरह नुक़्सान देने वाले असर रखते हैं। इसलिए जब भी कोई नुक़्सान देने वाला पहलू नज़र आए इलाज फ़ौरन छोड़ दें।

अदरक

अदरक उन लोगों को सुकून पहुँचाती है जिनको बे वजह अपने मरीज़ होने का वहम रहता है। इसके अलावा ज़ुकाम में भीं आराम पहुंचाती है। मेदे पर इसका असर सुकून बख़्श होता है और बहुत सारी रिसर्च से मालूम हुआ है कि अदरक से भरे हुए कैप्सूल जहाज़ के सफ़र में तबीअत मालिश, मतली और घबराहट को दूर करते हैं। अमेरिका में परनेटाओ मेडिकल सेंटर के डायरेक्टर डा. यलसन हॉस अदरक की चाय पीने के लिए बताते हैं।

अदरक की तीन या चार पतली-पतली क़ाशों को दो प्याली पानी में हलकी आंच पर दस मिनट तक पकाएं। उसके बाद दस से पन्द्रह मिनट के लिए ढ़ांप कर जज़ब होने के लिए रख दें तो अदरक की चाय तैयार हो जाएगी। इसको टेस्टी बनाने के लिए लीमू की बूँदें भी डाली जा सकती हैं।

अगर नारंगी के सूखे छिलकों, रोज़ मेरी की पत्तियों और लहसुन को एक चाय के चम्मच के बरारब तीनों को मिलाकर एक प्याली अदरक की चाय में दस मिनट तक मिक्स करके रख दें तो हाज़मे को ताक़त देने वाला टॉनिक तैयार हो जाएगा।

ज़ुकाम की तकलीफ़ कम करने में भी अदरक की चाय दौराने ख़ून को तेज़ करके और ज़्यादा पसीना निकाल कर मदद दे सकती है। बलग़म से जकड़े हुए सीने और मामूली ब्रानकाईटस में डाक्टर हॉस इस चाय से सिकाई करने की तरकीब बताते हैं। एक रूमाल अदरक की नीम गर्म चाय में डिबो कर तर करें और सीने पर बिछा दें। उसके बाद प्लास्टिक के एक टुकड़े और तौलिए से ढक कर सीने पर गर्म रहने तक पड़ा रहने दें। अदरक की जड़ डायरेक्ट बाडी पर लेप न करें इससे जलन पैदा होगी।

बेकिंग सोडा

बेकिंग सोडा खुजली का तोड़ करत है। अगर खाने के दो चम्मच लगभग सवा किलो पानी में या गुस्लख़ाने के पूरे टब में आधा प्याला बेकिंग सोडा मिला लें तो यह लिक्विड चित्तियों की खुजली, ख़सरा और ज़हरीले पौधों से पैदा होने वाली खुजली में काफ़ी फ़ायदा पहुँचाता है। किसी मर्द या औरत के अंदरूनी हिस्सों की खुजली को भी यह ख़त्म करता है।

चाइल्ड स्पेशलिस्ट डा. औरेन ईर्स्टन कहते हैं कि उसे किसी नर्म चीज़ में भिगो कर अंदर लगाया जाए या रख दिया जाए लेकिन ख़्याल रहे कि यह स्किन ख़ुश्क कर सकता है। यह घोल या पानी के साथ बेकिंग सोडा की लेप शहद की मक्खी या दूसरे कीड़ों के काटने में भी तेज़ी से असरदार होती है। इसका इस्तेमाल बच्चों के लिए बहुत ध्यान से करना ज़रूरी है क्योंकि उनकी नाज़ुक स्किन को तकलीफ़ हो सकती है।

चिपकने वाले टेप

टेप गुमड़ियों का सफ़ाया कर देते हैं। डर्मानोलोजिस्ट डा. जैरोम ज़ीनेट का ख़्याल है कि नाखुनों के नीचे और आसपास में नज़र आने वाले

बारीक मुहासे कभी-कभी ढ़क देने से ख़त्म हो जाते हैं। चिपकने वाले टेप की चार तैह मुहासों पर इस तरह चिपका दें कि हवा अंदर न जा सके लेकिन जगह भी दबाव में आए। पहली टेप उंगली की लम्बाई के साथ चिपका दें और दूसरी उंगली की गोलाई में लगाएं। दोबारा यही अमल इस तरतीब से करें। साढ़े छः दिन तक उंगली में यह पट्टी लगी रहने दें। आधे दिन का गैप करके दोबारा फिर से करें। उस वक़्त तक करते रहें जब तक कि मुहासे ख़त्म न हो जाएं। दो हफ़्तों से छः हफ़्तों तक वक़्त लग सकता है।

टी बैग्स

टी बैग मुंह में फैलने वाले ज़ख्म और पैरों में पसीना आने की शिकायत को दूर करता है। चाय में मैनिक एसिड होता है जिसकी खासियत गोश्त और खून में सख़्ती पैदा करना है जिसकी वजह से वह पैरों को ख़ुश्क और बदबू कम करने में मदद देता है। डाक्टर लिट कहते हैं, क़रीब दो कप पानी और दो कप चाय की थैलियां (Tea Bag) पंद्रह मिनट तक उबालें उसके बाद उसे ढाई सेर (आधा गैलेन) ठंडे पानी के साथ किसी बर्तन में मिला लें। एक हफ़्ते तक ऐसे पानी में रोज़ाना बीस मिनट के लिए पैर डिबोया करें। हफ़्ते में एक बार ऐसा करते रहने से पैर में ताज़गी की महक बरक़रार रहेगी।

मुंह के ज़ख्मों के दर्द के लिए एक चाय की थैली थोड़े गर्म पानी में गीली करें और निचोड़ कर ज़ख्म पर पांच मिनट तक रखें। ज़रूरत हो तो हर तीन मिनट के बाद बार-बार करें।

लहसुन

लहसुन सर्दी और फ़्लू से जंग करता है। रिसर्च से पता चलता है कि लहसुन के अंदर कुछ ऐसे कैमिकल्स मौजूद हैं जो बीमारी पैदा करने वाले बेक्टीरिया को ख़त्म कर सकते हैं। डाक्टर हास मशवेरा देते हैं कि गले की ख़ारिश, सर्दी या फ़्लू को दूर करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा लहसुन का इस्तेमाल करें, जो भी खाना तैयार करें उसमें अच्छे और ताज़ा लहसुन के कुचले हुए दो से तीन जवे डालें। एक आदमी की एक वक़्त की ख़ुराक में शामिल करें। ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हासिल करने के लिए यह असरदार तरकीब है।

दो या तीन लहसुन के साफ़, छिले हुए जवे और कुछ अदरक एक वक़्त में एक आदमी के हिसाब से लेकर बर्तन में डाल कर स्पेशल सूप तैयार करें जिसमें विटामिन "ए" और "डी" से भरपूर सब्ज़ियाँ यानी गाजर, पालक, टमाटर, हरी और लाल मिर्च और गोभी हो। इस सूप के विटामिन, मरीज़ों की बहुत असरदार मदद करते हैं। अगर उसकी भाप में लम्बी-लम्बी सांस ली जाए तो जकड़ा हुआ सीना साफ़ हो जाता है।

एक्युप्रेशर

एक्युप्रेशर दर्द और मतली को कम करता है। न्यूरोबायोलॉजी के प्रोफ़ेसर ब्रोस पोमेरांज़ कहते हैं कि आप अपनी कलाई से कुछ ऊपर उस जगह को इलाज के तौर पर दबा कर तबीअत की मालिश और मतली दूर कर सकते हैं। वह छः तजुर्बे पेश करते हैं जिनसे इस तासीर की तहक़ीक़ हुई है लेकिन यह नही मालूम कि ऐसा क्यों होता है। अंदर की तरफ कलाई से जो रगें कोहनी को जाती हैं उनके बीच वाली हल्की गहराई से दो इंच ऊपर अंगूठे या उंगली से एक या दो मिनट दबाएं यहां तक कि हल्का सा दर्द महसूस हो। तबीयत की बदमज़गी फ़ौरन दूर हो जाएगी। ज़्यादा मतली में 2-3 मिनट तक जल्दी-जल्दी यही अमल दोहराने की ज़रूरत होगी।

घरेलू टोटके बहुत ज़्यादा असर वाले भी हैं लेकिन एक डाक्टर की जगह नहीं ले सकते इसलिए हालात को ध्यान में रखकर उसे थोड़ी देर के लिए आज़माएं और डाक्टर से मुलाक़ात करें। बच्चे तो बहुत ही नाज़ुक होते हैं उनके लिए घरेलू इलाज सिर्फ़ वक़्ती होता है। अगर फ़ौरन तंदुरुस्त न हों तो फ़ौरन डाक्टर से इलाज कराएं।

ऐसा सोचा न था...

■ डा. मुहम्मद मूसा शरीफ़

आज जब हम अपने ज़माने के पेचीदा और नए मसलों पर नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि पिछले ज़माने के बड़े-बड़े स्कालर्स की सारी की सारी ज़ेहनी कोशिशों और मेहनतों के बाद उनके तसव्वुर में भी हमारे ज़माने के बहुत से बड़े मसले नहीं आ सके थे। जिस तरह हम 100 साल या 500 साल बाद के हालात का अंदाज़ा करना चाहें तो कितने ही ज़हीन क्यों न हों, यक़ीनी तौर पर आने वाले हालात का सही अंदाज़ा नही लगा सकेंगे। मैंने अपने ज़माने के हालात का जाएज़ा लिया और कुछ ऐसे मसले सामने आए, जिनकी मिसाल हम से पहले के ज़माने में नहीं मिलती।

1- कभी यह नहीं सोचा था कि मुसलमानों पर ऐसा वक़्त भी आएगा जब ज़्यादा तर अरब और मुस्लिम मुल्कों के हुक्मरान अल्लाह की किताब और उसके रसूल ﷺ की सुन्नत के बजाए इंग्लेंड, फ्रांस और स्वेटज़्लैंड वग़ैरा के क़ानूनों को अपना लेंगे और मुसलमानों पर ख़ुशी-ख़ुशी उन्हें लागू कर देंगे। हां! इससे पहले ऐसे क़ानून का ज़िक्र मिलता है जिसे मंगोलों ने तलवार के ज़ोर पर मुसलमानों पर लागू किया था लेकिन यह कि ख़ुद मुस्लिम हुक्मरान अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूल ﷺ को किनारे करते हुए ख़ुशी-ख़ुशी कोई और क़ानून अपना लेंगे, यह किसी ने सोचा भी नहीं था।

2- कभी यह नहीं सोचा था कि मुसलमानों पर ऐसा वक़्त भी आएगा, जब वह बहुत सारे अरब और मुस्लिम मुल्कों में रहते हुए अपने दीन पर अमल नहीं कर सकेंगे और जो मुसलमान ज़्यादा पाबंदी से मस्जिद जाएगा वह शक के घेरे में आ जाएगा, जिसकी दाढ़ी लम्बी होगी वह मुजरिम समझा जाएगा और अगर फिर भी वह दीन पर जमे रहने पर अड़ा रहेगा तो आतंकवादी और शिद्दत पसंद जैसे अलक़ाब से नवाज़ा जाएगा।

3- कभी यह नहीं सोचा थ कि अगर मुसलमान लड़कियां यूनिवर्सिटियों में एजुकेशन के लिए जाएंगी, चाहे वह दीन ही का इल्म क्यों न हो तो उन्हें हिजाब में रहने की इजाज़त नहीं होगी और अगर वह पर्दे के साथ पढ़ना चाहें तो उन्हें अपने मुल्क से बाहर जाना होगा। यह तो किसी के ज़ेहन में बिल्कुल ही नहीं आया था कि उन्हें बेदीनी के सेंटर यानी पश्चिमी मुल्कों में अपनी मंज़िल तलाश करना पड़ेगी, महेज़ इसलिए कि वह एजुकेशन की बीच हिजाब कर सकें। आज तुर्की में यही हो रहा है, वही तुर्की जो पांच सदियों तक इस्लामी दुनिया का सेंटर रहा है।

4- कभी यह नहीं सोचा था कि एक मुस्लिम औरत अस्पताल के दरवाज़े पर लेबर-पेन से कराह रही होगी और उसके सामने सिर्फ़ दो रास्ते होंगे या तो बिना हिजाब वह अस्पताल जाए या अगर उसे हिजाब करने की ज़िद है तो वहां से धुतकार दी जाए। यह आज ट्युनिस में हो रहा है वही ट्युनिस जहां अफ्रीक़ा के फ़ातेह, उक़बा बिन नाफ़े रहते थे। वहां हिजाब वाली औरतों को सरकारी नौकरियों से रोक दिया जाता है और इतना तंग किया जाता है कि बेदीन मुल्कों में इस जुल्म का थोड़ा सा हिस्सा भी नहीं होता।

5- कभी यह नहीं सोचा था कि कोई मुसलमान काफ़िर से दरख़्वास्त करेगा कि वह मुसलमानों के शहर पर बमबारी करे और मासूमों को क़त्ल करे, सिर्फ़ इस वजह से कि इस शहर में हुकूमत नेक लोगों के हाथ में है। यह तब हुआ जब महमूद अब्बास और उसके ग़द्दार साथियों ने यहूदियों से कहा कि ग़ज़ा पर उस वक़्त तक बमबारी करते रहें जब तक हमास की हुकूमत ख़त्म न हो जाए। हमने तारीख़ की ज़बानी महेज़ इतना ही सुना था कि उन्दुलुस के कुछ हुक्मरान कुछ शहर और क़िले ईसाईयों के हवाले कर देने की साज़िश किया करते थे लेकिन मुसलमानों को क़त्ल करने, उनके घरों को ताराज करने और उनके उलमा व लीडर्स को मिटाने की साज़िशों में बराबर के शरीक हों, ऐसा तो नहीं होता था।

6- कभी यह नहीं सोचा था कि एक मुसलमान हुकूमत इस्लाम के दुश्मनों की नियाबत करते हुए एक मुस्लिम आबादी को घेर लेगी, फ़ौलादी दीवार खड़ी करके ज़िंदगी का सामान पहुंचाने के तमाम रास्ते बंद कर दिए जाएंगे। हमने क़दीम हाकिमों के बारे में ऐसी ग़द्दारियां तो नहीं सुनीं। ज़्यादा से ज़्यादा जो हमने सुना वह यह कि सलीबी फ़ौजें जब उन्दुलुस के मुसलमानों को घेरती थीं तो कुछ ग़द्दार हुक्मरान ख़ामोश तमाशाई बने रहते थे, लेकिन ऐसा तो नहीं हुआ कि वह घिराव में शरीक भी हो जाएं और घेराव सख़्त से सख़्त कर देने की सारी मुजरिमाना कोशिशें कर डालें और अपने मुसलमान भाईयों पर ज़मीन, समंदर और हवा के सारे रास्ते बंद कर दें।

7- कभी यह नहीं सोचा था कि बहुत सी मुसलमान हुकूमतें अपने मुलाज़िमों और ओहदेदारों के पीछे जासूस लगा देंगी, जो नेक होगा और नेकी की तरफ़ बुलाएगा, वह मुलाज़िमत से हटा दिया जाएगा, जबकि दूसरी तरफ़ चोरों, बदकारों और रिश्वतख़ोरों पर

नवाज़िशें होंगी। और यह हुआ, कुछ मुस्लिम हुकूमतों ने स्कूलों और कालेजों और एजुकेशनल इदारों से नेक उस्तादों को हटा दिया, फ़ौज में से हर उस शख़्स को निकाल दिया जिस पर नेक होने का शक हुआ, चाहे उसकी नेकी का सुबूत सिर्फ़ एक नमाज़ हो, जो वह यह समझ कर पढ़ रहा था कि मुझे कोई देख नहीं रहा है।

8- कभी यह नहीं सोचा था कि एक मुस्लिम हाकिम मस्जिदें बनाने से रोक देगा या उन्हें शहीद कर देगा, इस्लामी किताबें बांटने पर रोक लगाएगा और दीनी काम करने वालों को दुश्मन बताकर उनका रोज़गार छीन लेगा...मीडिया में अपनी बात कहने से रोक देगा। यह सब कुछ हुआ और बहुत सारे मुस्लिम मुल्कों में हुआ, कहीं कुछ कम, कहीं कुछ ज़्यादा।

9- कभी यह नहीं सोचा था कि ज़िना और बदकारी और कोठों को हुकूमत की तरफ़ से लाइसेंस दे दिए जाएंगे। सैक्स वर्कर्स टैक्स देकर शान से ज़िंदगी बिताएंगी, कुछ-कुछ दिनों के बाद उनकी मेडिकल जांच होगी ताकि बीमारियों से बच सकें और ज़िना के लिए इत्मिनान का यक़ीन हो सके...और यह सब क़ानून के तहेत होगा। आज कुछ मुस्लिम मुल्कों में यह सब हो रहा है। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।'

10- कभी यह नहीं सोचा था कि ज़्यादा तर मुस्लिम मुल्कों में क़ानून बनाके सूद को हलाल कर दिया जाएगा, सूद की बुनियाद पर बैंक बनाए जाएंगे और अपने इकोनॉमिकल सिस्टम को इससे बांध लिया जाएगा...मगर यह भी इस्लामी मुल्कों में हुआ।

11- कभी यह नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब जिहाद का मतलब ही बदल जाएगा, हक़ और इंसाफ़ के लिए, ग़रीबों और बेसहारों की मदद और दुनिया में अमन व शान्ती लाने के लिए जिस जिहाद का हुक्म इस्लाम ने दिया था वह आतंकवादियों को अपने नापाक इरादों तक पहुंचाने के लिए इस्तेमाल होगा और यह पाक व पाकीज़ा लफ़्ज़ एक बुराई बन जाएगा। जिहाद और मुजाहिदों से लोग बदगुमान हो जाएंगे, हांलाकि मुजाहिद पर तो हमेशा से इस्लामी उम्मत में फ़ख़्र किया जाता रहा है।

12- कभी यह भी नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब मुसलमानों की औरतें कम से कम कपड़ों में नज़र आएंगी। इस्लामी मुल्कों के सरकारी टी.वी. चैनलों से रोमांस से भरे मंज़र बल्कि और आगे बढ़कर बेडरूम के ख़ास सीन दिखाए जाएंगे। पिछले ज़माने में तो इसका तसव्वुर ही नहीं था, मगर आज इस्लामी दुनिया में यह बला इतनी आम है कि ऐतराज़ करने वालों पर दूसरे हंसते हैं।

13- शराब को आज लाइसेंस मिलता है। बहुत से इस्लामी मुल्कों में इसकी फैक्ट्रियां हैं। अल्लाह के रसूल[ﷺ] ने इसे बुराईयों की जड़ बताया था, आज शराब बनाने, उसको फैलाने और उसे पीने में हम बेदीनों से मुक़ाबला कर रहे हैं। किसी ने सोचा भी नहीं था कि ऐसा कभी इस्लामी मुल्कों में भी होगा।

14- वह मुसलमानों के फलने-फूलने और हुकूमत का ज़माना था। उस ज़माने में किसी ने न देखा और न सुना कि कोई फ़क़ीह या आलिम अल्लाह और उसके रसूल[ﷺ] के दुश्मनों से गर्मजोशी और तपाक से हाथ मिलाए और ख़ुदा व रसूल[ﷺ] के दुश्मन के साथ एक स्टेज पर इकट्ठा हो! उन्होंने यह भी नहीं सुना था कि कोई फ़क़ीह या आलिम कहे कि इस्लाम के दुश्मन अगर हिजाब पर पाबंदी लगाते हैं तो यह उनका हक़ है और वह ग़लत नहीं करते। यह भी नहीं सुना था कि किसी फ़क़ीह से लोगों ने कहा हो कि दुआ कीजिए कि मस्जिदे अक़्सा शहीद न हो तो वह कह दे कि यह मेरा मसला नहीं है।

15- कभी यह नहीं सोचा था कि एक ज़माना मुसलमानों पर ऐसा भी आएगा कि अल्लाह को बुरा कहने पर ज़्यादा तर मुस्लिम हुक्मरान चुप्पी साध लेंगे लेकिन किसी हुक्मरान को बुरा कहने पर सारी दुनिया में शोर मच जाए।

16- कभी यह नहीं सोचा था कि इस्लामी दुनिया में ऐसी मैगज़ीनें और अख़्बार आम हो जाएंगे जिनमें कम से कम कपड़ों में औरतों की तस्वीरें होंगी, बेहयाई और बदकारी को बढ़ावा दिया जाएगा...बेदीनी और सेकुलर नज़रियों को फैलाया जाएगा। नेक लोगों पर कट्टरपंथी होने का इल्ज़ाम लगाकर बदनाम किया जाएगा, जबकि औरतों और मर्दों को हिजाब के बिना आपस में मिल-बैठने की दावत दी जाएगी।

17- कभी यह नहीं सोचा था कि बहुत सारे इस्लामी मुल्कों में गंदे नॉवेल और अफ़साने छपेंगें और सरकारी ईनाम देकर उनकी हौसला अफ़ज़ाई की जाएगी।

18- कभी यह नहीं सोचा था कि बेदीनों को इस्लामी मुल्कों में जाने की न सिर्फ़ इजाज़त होगी बल्कि उन्हें सारी सहूलतें दी जाएंगी लेकिन अक्सर मुसलमानों को किसी दूसरे इस्लामी मुल्क में जाने के लिए पापड़ बेलने पड़ेंगे और कुछ मुसलमानों पर वहां के दरवाज़े बंद होंगे।

19- कभी यह नहीं सोचा था कि कुछ नॉन-मुस्लिम मज़लूम मुसलमानों की मदद के लिए आगे बढ़ेंगे, उनके लिए इमदादी क़ाफ़िले भेजेंगे और इसके लिए उन्हें मुसलमानों ही के हाथों मार भी खाना पड़ेगी, ज़िल्लत व रुसवाई का सामना भी करना पड़ेगा और ख़तरनाक मौसम में रेगिस्तानों में बसेरा करना पड़ेगा, महेज़ इसलिए कि चारों तरफ़ से घिरे हुए भूखे और बीमार मुसलमानों तक मदद पहुंचा सकें, जबकि ज़्यादा तर मुसलमान चैन की नींद सोते रहें, जैसे उनका दूसरे मज़लूम मुसलमानों से कोई रिश्ता ही नहीं!

आह! वह सब कुछ हुआ जो इस्लाम वालों ने दूर-दूर तक सोचा भी नहीं था। आह! ईमान वाले तन्हाई के गोशों में कब तक बैठे रहेंगे? कभी-कभी ऐसा लगता है कि आम मुसलमानों की हालत ऐसी है जैसे अंधेरी रात में भेड़ों का रेवड़ भटक रहा हो और कोई उसका रखवाला न हो...।

मेल-जोल का दीन

इस्लाम का उसूल मिलाप और मेलजोल है। जुदाई और रिश्तेदारों से नाते तोड़ना इस्लाम ने नहीं सिखाया है क्योंकि इंसानों का एक दूसरे से मेल-मिलाप समाज में मौजूद दरारों को भर देता है। अगर आपसी मेल-जोल न हो तो उनके बीच दूरियां और बढ़ जाती हैं लेकिन आपसी मेल-मिलाप, क़ुरबत और बात-चीत के ज़रिए पता चलता है कि सामने वाले की फ़िक्र क्या है? उसके मक़सद व ख़्वाहिशें क्या हैं? उसके ख़्वाब और तमन्नाएं क्या हैं? उसका नज़रिया क्या है? और यूं एक इंसान दूसरे इंसान को समझने लगता है। इसलिए समाज में नज़र आने वाली यह बात कि कुछ लोग एक दूसरे से बातचीत तक करना नहीं चाहते, इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ है। दोस्ती के बारे में एक हदीस में इमाम मूसा काज़िम[अ०] फ़रमाते हैं, "अपने और अपने दोस्त के बीच शर्म व हया का पर्दा ख़त्म न करना क्योंकि इस पर्दे के उठ जाने से हया का ख़ात्मा हो जाता है।" दो लोग जिनके बीच दोस्ती और मुहब्बत का रिश्ता क़ायम है वह एक दूसरे के साथ दो अंदाज़ से पेश आ सकते हैं :

1- एक अंदाज़ और तरीक़ा यह है कि उनके बीच कोई लिहाज़ न हो कोई पर्दा न रहे, सारे हिजाब पारा हो जाएं और दोनों के बीच ऐसी कोई भी चीज़ बाक़ी न बचे। इस बात से रोका गया है। इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने ज़ोर दिया है कि दो लोगों के बीच कुछ न कुछ हया बाक़ी रहनी चाहिए जिससे पता चले कि वह एक दूसरे का लिहाज़ और एहतेराम करते हैं क्योंकि अगर सारे पर्दे हट जाएं और कोई हद बाक़ी न बचे तो दोनों की दोस्ती को नुक़सान पहुंचेगा।

2- दूसरा अंदाज़ यह है कि दोनों के बीच एक फ़ासला बाक़ी रहे वह एक दूसरे के सारे राज़ों को जानते न हों और उनके बीच आपसी लिहाज़ बरक़रार रहे। और यही तरीक़ा सही है। एक हदीस में इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे भाई के साथ तुम्हारी दोस्ती ख़ालिस हो तो उससे हंसी मज़ाक़ न करना।" यहां मज़ाक़ से मतलब घटिया मज़ाक हैं। (उसके साथ झगड़ा न करना) मुराद यह है कि ऐसी बहस न करना जिसमें बदकलामी हो जो दोस्ती को ख़राब कर देती है। उसके सामने शेख़ी न बघारना यानी उसे अपने रुतबे व मक़ाम और माल व दौलत से मरऊब करने की कोशिश न करना और अपने इस अमल के ज़रिए उसकी शख़्सियत को नीचा मत दिखाना और उसे नुक़सान न पहुंचाना यानी उसके साथ ऐसा मामला न करना जिससे फ़ितना व फ़साद सर उभारे या ऐसा अमल न करना जिससे उसके और तुम्हारे बीच इख़्तेलाफ़ पैदा हो।

इमाम अली नक़ी[अ०] फ़रमाते हैं, "जिदाल यानी अपनी बात को आगे रखने के लिए बहस करना पुरानी दोस्तियों को ख़राब कर देता है, मज़बूत रिश्तों को तोड़ देता है और उसमें कम से कम यह ज़रूर होता है कि एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ को नीचा दिखाने की कोशिश करता है। जिदाल में क्योंकि हर एक की कोशिश यह होती है कि दूसरे को हरा दे। इसलिए यह अमल दोस्ती पर ग़लत असर छोड़ता है और एक दूसरे को हराने के लिए कोशिश हर बुराई की जड़ है क्योंकि हारा हुआ शख़्स महसूस करता है कि वह जीतने वाले के सामने छोटा हो गया है जबकि जीतने वाला ख़ुद को हारने वाले से बेहतर समझता है। यह एहसासात दोस्ताना तअल्लुक़ात में दरारें डाल देते हैं और दोस्ती की बुनियादों को हिला कर रख देते हैं। हज़रत अली[अ०] ने हमें ध्यान दिलाया है कि अगर चुग़लख़ोर लोग हमारे बारे में हमारे दोस्तों की कही हुई बातें हमें आकर बताएं तो हमें उनकी बताई हुई बातों को क़ुबूल नहीं करना चाहिए। जो भी चुग़लख़ोर की बात मानता है वह अपने दोस्त को बर्बाद कर देता है क्योंकि चुग़लख़ोर का तो

काम ही निगेटिव और बुरी बातों को एक दूसरे से बयान करना है और इस तरह वह दोस्तों के बीच पुरानी दोस्तियों को भी ख़त्म कर देता है और बुनियादी तौर पर चुग़लख़ोर का मक़सद बुराई फैलाने और एक दूसरे के बीच जुदाई डालने के सिवा कुछ और नहीं होता।

हज़रत अली[अ०] ने अपनी वसिय्यत में मुहम्मद बिन हनफ़िया से फ़रमाया कि ख़ुदपसंदी से बचो यानी ऐसा न हो कि तुम अपने आप पर नाज़ करने लगो और अपनी शख़्सियत को बुर्ज़ुग व बरतर समझने लगो। ऐसा न हो कि तुम अपने दोस्तों के साथ बुरे अख़्लाक़ से पेश आओ बद कलामी करो और सख़्त रवैय्या इख़्तियार करो यानी कहीं ऐसा न हो कि तुम दूसरों की बदसुलूकी और उनकी तकलीफ़ चाहे जानबूझ कर हो या भूले से, को बर्दाशत न करो और ख़बरदार कहीं ऐसा न हो कि अगर कोई तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाए, तुम्हारे साथ बदसुलूकी करे और तुम एक मुद्दत तक हक़ीक़त साफ़ होने का इंतिज़ार न करो क्योंकि तुम में उन तीन सिफ़ात के होते हुए कोई तुम्हारी दोस्ती पर बाक़ी नहीं रहेगा। क्योंकि अगर तुम अपने दोस्तों के सामने अपनी बरतरी और बड़ाई जताओगे और यह कहोगे कि मैं तुम से बड़ा हूं और तुम पस्त हो या उनके साथ बदसुलूकी करोगे या तअल्लुक़ात के बीच पेश आने वाली कमज़ोरियों को बर्दाशत न करोगे तो फिर दोस्ती और रिफ़ाक़त की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहेगी। इन सिफ़ात और ऐसी शख़्सियत की बिना पर लोग तुमसे दूर रहेंगे और तुम लोगों से कट के रह जाओगे।

बदगुमानी की मनाही

इमाम अली[अ०] ने हमें दोस्तों के बारे में बदगुमानी से मना फ़रमाया है क्योंकि कुछ वक़्तों में हम दोस्तों से या इसी तरह दूसरे लोगों से ऐसा कोई काम होते देखते हैं जिसे हम नेकी और अच्छाई भी समझ सकते हैं और उसे बुराई भी कह सकते हैं। इस मौक़े के लिए इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है, "बदगुमानी से बचो यानी कहीं ऐसा न हो कि किसी के निगेटिव पहलू को उसके पॉज़िटिव पहलू के ऊपर रखो क्योंकि इस तरह तुम दूसरों पर भरोसा करना छोड़ दोगे और तुम अगर दूसरों पर भरोसे से महरूम हो जाओ ख़ास कर जबकि वह तुम्हारे दोस्त भी हों तो यह बदऐतेमादी तुम्हारे तअल्लुक़ात का ख़ात्मा कर देगी और तुम्हारी दोस्ती में दरार डाल देगी और दूसरे लोगों से तुम्हारे रिलेशंस को ख़राब कर देगी।" हज़रत अली[अ०] से एक जुम्ला नक़्ल हुआ है जो इंसान को एक उसूल देता है और बताता है कि इंसान जब भी किसी दूसरे इंसान की किसी बात या काम का सामना करे तो उसके बारे में पॉज़िटिव राय रखे। हज़रत फ़रमाते हैं, "अपने भाई के अमल की तौजीह बेहतरीन गुमान से करो यानी अगर तुम्हारा दीनी भाई कोई ऐसा काम अंजाम दे जो अलग-अलग पहलुओं वाला हो यानी उसमें अच्छाई भी हो सकती है और बुराई भी निकाली जा सकती है तो बुराई निकालने के बजाए अच्छाई ही समझे यानी इसका मतलब यह है कि अपने भाई के मुंह से निकलने वाले अलफ़ाज़ के बारे में बदगुमानी से काम मत लो जबकि तुम उसकी बात के बारे में अच्छा पहलू भी निकाल सकते हो। फ़र्ज़ करें कि उसकी बात में 99% बुरी नियत और सिर्फ़ 1% अच्छी नियत नज़र आ रही हो तो कहो कि शायद यही 1% वाला पहलू उसकी मुराद हो।

इस्लाम इसी नज़रिए पर अपने मानने वालों को चलता देखना चाहता है जो इस्लाम के अदालती उसूलों से मैच करता है। अगर मुल्ज़िम पर इल्ज़ाम साबित न हो सके तो ऐसे मौक़ों पर वह बरी हो जाता है। जैसे अगर किसी शख़्स के हाथ में रिवाल्वर हो और उसके सामने एक लाश पड़ी हुई हो, तो फ़ौरन ही यह फ़ैसला नहीं कर लेना चाहिए कि जिस शख़्स के हाथ में रिवाल्वर है वही क़ातिल है। इस्लामी अदालत कहती है कि यह शख़्स मुलज़िम है उसे मुजरिम न कहो जब तक कि दलीलें और सुबूत उसके जुर्म को साबित न कर दें क्योंकि हो सकता है कि कुछ न देखे हुए और छुपे हुए सूबूत सामने आएं जिनकी बुनियाद पर वह शख़्स जुर्म से बरी हो जाए। लेकिन क़ुदरती बात है कि अच्छा सोचने के मायने यह नहीं हैं कि हम मुलज़िम को मुजरिम से 100% बरी समझें बल्कि मतलब यह है कि न उसे 100% मुजरिम समझें और न ही उसे 100% बेगुनाह जानें। बल्कि इस जगह और इससे मिलती-जुलती सूरतों में फ़र्द को सिर्फ़ मुलज़िम समझें यहां तक कि हक़ीक़त साफ़ हो जाए। इसीलिए हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "कहीं ऐसा न हो कि तुम पर बदगुमानी कंट्रोल कर ले। इस हाल में तुम्हारे और तुम्हारे दोस्त के बीच बख़्शिश और दरगुज़र की कोई गुंजाइश न रहेगी। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि अगर किसी के मुंह से कोई अच्छी बात सुनें तो उसे बुराई में बदल देते हैं क्योंकि वह दूसरों में कोई ख़ूबी नहीं देख सकते। ऐसे लोग उन बदबख़्त लोगों की तरह हैं जिनकी नज़र में ज़िंदगी का सिर्फ़ डार्क पहलू ही होता है।"

कुछ लोग ज़ेहनी उलझावे का शिकार होते हैं और लोगों के बारे में बदगुमान रहते हैं। कभी-कभी लोग

कोई ऐसी बात करते हैं जिसमें अच्छाई का पहलू पाया जाता है और बहुत से सही मायने मौजूद होते हैं लेकिन इस क़िस्म के लोग इस बात में बुराई निकाल ही लेते हैं। यह बात हमें सियासी, ऐतेक़ादी समाजी और शरई मसलों में भी नज़र आती है। ऐसे लोगों के नज़दीक बदगुमानी से ज़्यादा कोई दूसरी चीज़ अहम नहीं होती और जब उन्हें टोका जाता है कि इतनी बदगुमानी न करो तो जवाब में कहते हैं कि बदगुमानी ज़िहानत और चालाकी में से है। जबकि उन्हें पता नहीं है कि बदगुमानी न सिर्फ़ ज़िहानत की निशानी नहीं बल्कि इंसाफ़, अक़्ल और हुक्मे शरई के ख़िलाफ़ है ख़ास कर उस वक़्त जब बदगुमानी किसी आदमी की पर्सनालिटी पर असर डाल रही हो। दोस्ती के रिश्ते में मज़बूती के बारे में इमाम अली[अ॰] की एक हदीस है, "जो कोई अपने दोस्तों से कड़ा हिसाब लेता है उन पर सख़्त नुक्ताचीनी करता है उसके दोस्त कम हो जाते हैं। इसलिए यह कोशिश नहीं होनी चाहिए कि अपने दोस्तों की बात-बात पर नुक्ताचीनी करो और उनकी एक-एक सांस तक शुमार करो क्योंकि कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसमें से ख़ामियां न निकाली जा सकें।"

अगर तय हो कि दोस्त और दोस्ती की दुनिया में तहक़ीक़ की जाए तो तुम्हें कोई ऐसा दोस्त न मिलेगा जिसकी नुक्ताचीनी और बाज़पुर्स मुमकिन न हो। हर इंसान से ग़लतियां और बेफ़ायदा काम और बातें हो सकती हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ किया जा सकता है। इसी वजह से इमाम अली[अ॰] ने फ़रमाया है, जो भी अपने दोस्तों पर नुक्ताचीनी करता है उसके दोस्त कम हो जाते हैं। जी हां! नुक्तानीची और बुराईयां ढूंढना एक ऐसा काम है जो दोस्तों को कम कर देता है। ●

दिल की सेहत के लिए दांत भी साफ़ रखें

अगर मुंह साफ़ रहता है तो इससे बहुत सी बीमारियों से बचा जा सकता है, अगर मुंह गंदा रहता है तो बहुत से बेक्टीरिया मुंह में पलने लगते हैं और फ़िर यह खाने और थूक के ज़रिए मेदे में पहुंचते हैं। यहां से यह ख़ून में शामिल होकर पूरे बदन तक पहुंच जाते हैं। जिसकी वजह से सेहत पर बुरा असर पड़ता है। इनमें दिल भी शामिल है। आज की रिसर्च से यह बात साफ़ होती है कि जो लोग रोज़ाना कम से कम दो बार दांतों और मसूढ़ों को अच्छी तरह ब्रुश से साफ़ करते हैं उनका दिल दूसरों से ज़्यादा सेहतमंद रहता है। इंग्लैंड में की गई इस रिसर्च में शामिल डाक्टरों ने ख़बरदार किया है कि जो लोग हर रोज़ दो बार दांत साफ़ नहीं करते उनमें दिल की बीमारी होने के चान्सेज़ बढ़ जाते हैं। इस की डिटेल्स ब्रिटिश मेडिकल जनरल में छापी गई हैं। यह इस के बारे में की गई पहली रिसर्च है जिसमें यह बात सामने आई है कि गंदे दांतों का दिल की बीमारी से किस तरह का ताअल्लुक़ पाया जाता है। इसमें कहा गया है कि जो लोग हर रोज़ दांतों के अलावा अपने मसूढ़ों को अच्छी तरह साफ़ करके मुंह को साफ़ सुथरा नहीं रखते उनमें दिल की बीमारी का शिकार होने का ख़तरा उन लोगों के मुक़ाबले में 70 फ़ीसद ज़्यादा हो जाता है जो दिन में कम से कम दो बार ब्रुश करके मुंह को साफ़ रखते हैं। इन साइंटिस्टस ने साफ़ किया है कि मुंह में जलन पैदा करने वाले बेक्टीरिया दांत साफ़ न करने की हालत में ख़ून में बड़ी आसानी से शामिल हो जाते हैं और यह बेक्टीरिया ख़ून में लगातार दौड़ते हुए इस तरह नुक़सान पहुंचाते हैं कि ख़ून की नलियों को धीरे-धीरे सिकोड़ देते हैं जिसका नतीजा यह निकलता है कि दिल को ख़ून की सप्लाई मुनासिब मिक़दार में नहीं होने पाती और दिल की बीमारी हो जाती है। इन साइंटिस्टस ने ख़ास तौर पर ऐसे लोगों को जो अपने दांत और मुंह की सफ़ाई पर ध्यान नहीं देते, ख़बरदार किया है कि वह अगर सुस्ती से काम लेते हैं तो उसका साफ़-साफ़ मतलब यह होगा कि वह जानते-बूझते अपने दिल जैसे बेहद अहम हिस्से को बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुंचाने के ज़िम्मेदार बन रहे हैं।

यह रिसर्च यूनिवर्सिटी कालेज लंदन के प्रोफ़ेसर रिचर्ड वाट ने 11,000 से ज़्यादा बालिग़ लोगों से हासिल की गई डिटेल्स की बुनियाद पर की हैं। इस रिसर्च में उन लोगों के ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े का भी गहराई से जाएज़ा लिया गया जिसमें तंबाकू नोशी, जिस्मानी चुस्ती-फुर्ती का काम और मुंह को साफ़ रखने की आदतें वग़ैरा शामिल थीं। रिसर्च में शामिल लोगों से यह भी पूछा गया कि वह साल में कितनी बार डेंटिस्ट से दांतों को चेकअप करवाते हैं और रोज़ाना वह कितनी बार दांत साफ़ करते हैं। इन ग्यारह हज़ार लोगों में औसतन 60 फ़ीसद ऐसे लोग पाए गए जो अपने मुंह की सफ़ाई का भरपूर ख़्याल रखते थे। इसके लिए वह अपने डेंटिस्ट से साल में दो दो बार मिलते और अपने दांतों की सेहत की जांच करवाते थे। जबकि 70 फ़ीसद ऐसे लोग थे जिन्होंने यह बताया कि वह दिन में कम से कम दो बार दांतों को ब्रुश और पेस्ट की मदद से साफ़ करते हैं। इस में यह भी देखा गया है कि जो लोग अपने मुंह को गंदा रखने के आदी थे उनमें अलग-अलग तरह की जलन होने के चांसेज़ ज़्यादा थे। इन नतीजों की बुनियाद पर प्रोफ़ेसर वाट ने आम लोगों को ख़बरदार किया है कि अब जबकि यह बात पूरी तरह साबित हो चुकी है कि मुंह का साफ़ न रखना यानी मंजन, पेस्ट और ब्रुश वग़ैरा से सफ़ाई न करना दिल के दौरे की वजह बन सकती है तो वह अपने होश के नाख़ुन लें और जहां अपने घरवालों को रोज़ाना कम से कम दो बार मुंह साफ़ करने की पाबंदी करवाएं वहीं ख़ुद भी अपने मुंह को ज़्यादा से ज़्यादा साफ़ रखा करें। तंबाकू नोशी करने वाले इस तरफ़ ज़्यादा ध्यान दें कि धुंए की वजह से मुंह और ज़्यादा गंदा हो जाता है, इसी तरह मीठी चीज़ों के शौक़ीन लोगों को भी चाहिए कि वह अपने मुंह की सफ़ाई का भरपूर ख़्याल रखा करें। ●

15

Jamadi-ul-Awwal

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) की विलादत पर हम आप सब को दिली मुबारकबाद पेश करते हैं!

Asemane-7om.persianblog.ir

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHT
S Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111